मेक इन इंडिया

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षक

छ:माही पत्रिका, अंक-11 (अप्रैल 2021 से सितंबर 2021)

कीटनाशक, फफूंदनाशी, शाकनाशी, बीज, उर्वरक, बॉयो पेस्टिसाइड्स, सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लागू राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के अंतर्गत हिल (इंडिया) लिमिटेड को वर्ष 2019–20 के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14.09.2021 को आयोजित हिन्दी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय गृहराज्य मंत्री महोदय श्री निशिथ प्रामाणिक के कर–कमलों से अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ0 शिबा प्रसाद मोहन्ती ने प्राप्त किया।

रक्षक

छःमाही पत्रिका, अंक – 11

अप्रैल 2021 से सितंबर 2021 तक

❋	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से	2
❋	संदेश	3
❋	संपादकीय	4
❋	भारतीय कृषि रसायन उद्योग	5
❋	हिल मे उपभोक्ता व्यवहार का महत्व	8
❋	काइज़ेन	11
❋	वैश्विक महामारी का मानव संसाधन प्रवृत्ति पर प्रभाव	13
❋	कर्मचारी प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम और इसके लाभ	16
❋	यूनिकोडः हिंदी के लिए एक वरदान	18
❋	कालजयी महाकवि तुलसीदास	20
❋	राष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी का बहुआयामी स्वरूप	22
❋	खरीद में सतर्कता	24
❋	निवारक सतर्कता	27
❋	जी.एस.टी. नए नियम–2022	28
❋	आयकर कानून, 1961 की धारा 206सी (1एच)	29
❋	आयकर : पुरानी और नई टैक्स व्यवस्था?	31
❋	एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल	32
❋	प्लास्टिक के एकल उपयोग पर अंकुश	37
❋	शुद्ध सात्विक आहार, स्वस्थ जीवन का आधार	39
❋	जल संचयन : भविष्य की जरूरत	42
❋	पर्यावरण संरक्षण एक चुनौती	44
❋	युवाओं में प्रतिस्पर्धा का बढ़ता स्तर	45
❋	मृत्यु पत्र	47
❋	कर भला सो हो भला	48
❋	सपना	49
❋	प्रभु और दृढ़ विश्वास	50
❋	माँ बिना कैसा मायका	51
❋	जिन्दगी के कुछ पल	53
❋	क्योंकि मैं एक मजदूर हूं / कड़वा सच / जिंदगी	55
❋	सभ्यता का विकास या विनाश / परमात्मा	56
❋	वाह रे मंहगाई / पहाड़ बोलते हैं	57
❋	लिखती हूँ क्यूंकी लिखना अच्छा लगता है / बेटी	58
❋	उम्र	59
❋	हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कविता एवं नारा प्रतियोगिता में पुरस्कृत	60
❋	हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी वर्ष 2021–22 का वार्षिक कार्यक्रम	61
❋	निगमित कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	62
❋	हिल (इंडिया) लिमिटेड में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	63
❋	राजभाषा विचार संगोष्ठी	65
❋	हिन्दी पखवाड़ा, 2021 समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह – निगमित कार्यालय	66–67
❋	हिल में स्वच्छता पखवाड़ा	68
❋	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की झलकियां	69
❋	राजभाषा निरीक्षण / रक्तदान शिविर	70
❋	हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021	71
❋	किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम	73
❋	सेवानिवृत्ति / स्वेच्छा सेवानिवृत्ति	74
❋	आपकी पाती	76

मुख्य संरक्षक
डॉ. शिबा प्रसाद मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
श्री शशांक चतुर्वेदी
मुख्य महाप्रबन्धक (विपणन)

संपादक
श्री अजीत कुमार
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

परामर्श समिति
श्री राजेश एस. चौबे
श्री महेन्द्र सिंह
श्री सुनील गौड़
श्री राम प्रकाश
श्री अनिल यादव
श्री राजेन्द्र थापर
श्री अनिल सूद

सहयोग
श्री ओम प्रकाश साह
श्री अनुभव कुमार

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अतः पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से .....

हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका 'रक्षक' का नवीन अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने तथा गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा नियम, अधिनियम एवं नीतियाँ से पाठकों को अवगत कराने के साथ–साथ कंपनी की विभिन्न गतिविधियाँ का भी दर्पण है। पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने से कार्मिकों की लेखन प्रतिभा में वृद्धि होती है। मुझे इस बात की खुशी है कि हमारी गृह पत्रिका ने हिल (इंडिया) लिमिटेड को राजभाषा के क्षेत्र में एक नई पहचान दी है, विशेष रूप से तकनीकी विषयों पर लिखे गए लेखों ने पाठकों का ज्ञान बढ़ाने में अपनी अहम् भूमिका निभाई है और उसी के परिणामस्वरूप पत्रिका को नराकास से समय–समय पर श्रेष्ठ पत्रिका के रूप में सम्मानित किया गया है।

आप सभी जानते हैं कि हिल (इंडिया) लिमिटेड जन स्वास्थ्य एवं कृषि के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान देने के साथ–साथ एक ही स्थान पर कृषक समुदाय की सभी कृषि आदानों की आवश्यकताओं को समय पर एवं उचित दर पर पूरा करना तथा स्वच्छ और सुरक्षित प्रौद्योगिकी के माध्यम से गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रदान करता है। इसमें फसलों की उत्पादकता को बढ़ाना और कंपनी की उत्पाद रेंज, निर्यात, दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने के साथ–साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी बढ़ाना है। मैं यह बात भी गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि हिल (इंडिया) लिमिटेड लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) का विनिर्माणन करने वाला भारत सरकार का एक मात्र उपक्रम है। इसके लिए हमारी कंपनी को माननीय डॉ0 मनसुख मांडविया, केन्द्रीय मंत्री, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार से "प्रोडक्ट इनोवेटर ऑफ द इयर" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। एल.एल.आई.एन. भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा देश में मलेरिया नियंत्रण एवं रोकथाम हेतु ग्रसित क्षेत्रों में वितरण किया जाता है। हिल स्वास्थ्य मंत्रालय को उच्च गुणवत्तावान एल.एल.आई.एन. देने के लिए प्रतिबद्ध है। हिल (इंडिया) लिमिटेड देश के विभिन्न क्षेत्रों में समय–समय पर किसानों के लिए "एकीकृत कीट प्रबंधन एवं कीटनाशकों के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर" प्रशिक्षण देकर अपना सामाजिक दायित्व भी निभाया है। इस प्रकार के प्रशिक्षणों से किसानों की फसल लागत में कमी आएगी, उनका पशुधन, भूमिगत जल, पक्षी एवं वातावरण भी सुरक्षित रहेगा। हिल (इंडिया) लिमिटेड देश के ग्रामीण और कृषक समुदाय को उचित मूल्य और सर्वोत्तम गुणवत्ता पर जन–स्वास्थ्य और कृषि रसायन उत्पादों के निर्माण और आपूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत के संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। तदनुसार केन्द्र सरकार द्वारा अपने मंत्रालयों, कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के लिए राजभाषा नियम, अधिनियम बनाए गए हैं। संवैधानिक दायित्वों के साथ–साथ हिंदी हमारी भाषायी एकता की भी परिचायक है। हम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृत संकल्प है। निगमित कार्यालय के साथ–साथ सभी अधिनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। मुझे यह बताने में बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमारी कंपनी को लगातार तीन वर्षों से राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है।

हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार में पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। मुझे आशा है कि पत्रिका में निहित विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी सुधी पाठकों के लिए उपयोगी एवं रूचिकर सिद्ध होगी। भविष्य में भी आप सभी कर्तव्यनिष्ठता और अधिक परिश्रम से संस्थान को उच्च शिखर पर पहुंचाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते रहें है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं सदैव आपके साथ हैं।

एस.पी.मोहान्ती

(शिबा प्रसाद मोहन्ती)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

पत्रिका "रक्षक" का नवीन अंक अपने सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा अपने विचार, भावनाओं एवं राजभाषा गतिविधियों और संस्थान के कार्यकलापों की जानकारी एक ही मंच से प्राप्त होने के साथ–साथ कार्मिकों की छुपी हुई सृजनात्मक प्रतिभा को भी एक नया आयाम मिलता है।

आज, हिन्दी विश्व स्तरीय भाषा के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। विश्व की सभी प्रसिद्ध दिग्गज कंपनियों ने व्यापार के दृष्टिकोण से भारतीय बाजार की समीक्षा के पश्चात् भारत में अपने उत्पादों की बिक्री हेतु हिंदी को ही प्रचार का माध्यम बनाया है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अगर हम आगे बढ़ने के अपने सपने को सच करना चाहते हैं तब हमारा मार्ग प्रशस्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका राजभाषा हिंदी ही निभा सकती है। किसी भी संगठन में पत्रिका के प्रकाशन से उस में कार्य करने वाले कार्मिकों को उस संगठन के क्रिया–कलापों की जानकारी मिलती है तथा जन–साधारण तक संगठन की उपलब्धियां एवं कार्यपद्धति को पहुँचाने में भी पत्रिका की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कंपनी अपने व्यावसायिक हितों तथा निगमित दायित्वों का ध्यान रखने के साथ–साथ अपने संवैधानिक तथा नैतिक दायित्वों का निर्वाह करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। कंपनी द्वारा संसदीय राजभाषा समिति, प्रशासनिक मंत्रालय के निर्देशों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के अनुपालनार्थ पूरा प्रयास किया जाता है। कंपनी की वेबसाइट पूर्णतः द्विभाषी है। सभी कार्मिकों को कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु हिंदी कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है। कंपनी में प्रयोग होने वाले शब्दों/वाक्यांशों को सम्मिलित करते हुए एक कार्यालय सहायिका तैयार करके कार्मिकों को प्रदान की गई है, इन प्रयासों के परिणाम स्वरूप कंपनी के निगमित कार्यालय को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के उत्तम निष्पादन के लिए गत तीन वर्षों से लगातार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। प्रधान कार्यालय एवं अधीनस्थ यूनिटों को भी संबंधित नराकास से पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई है।

गृह पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य हिल परिवार के सभी सदस्यों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित/प्रोत्साहित करने के साथ–साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभा को बढ़ावा देना है। सृजनशील प्रतिभाओं के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम होने के अतिरिक्त पत्रिकाओं का राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को संगठन की गतिविधियों की जानकारी मिलने के साथ–साथ पाठकों को सुरूचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में 'रक्षक' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

शशांक चतुर्वेदी

शशांक चतुर्वेदी
मुख्य महाप्रबंधक (विपणन)–प्रभारी

संपादकीय

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हिल (इंडिया) लिमिटेड में राजभाषा गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रगति हो रही है। इस कड़ी में गृह पत्रिका रक्षक का अनवरत प्रकाशन एक संक्षिप्त परिचय है। आज सरकारी तथा निजी क्षेत्र में हिंदी को जनव्यापी बनाने में इन गृह पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान रहता है।

प्रत्येक अंक के साथ पत्रिका अपने नए कलेवर एवं नई रचनाओं के साथ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक बनी हुई है। पत्रिका के इस अंक में संकलित लेखकों के लेख, विचार, कविताएं इत्यादि से ही प्रकाशन संभव हो पाया है। प्रस्तुत अंक में सम्मिलित अधिकांश रचनाएं अवश्य ही आपके कोमल मन को स्पंदित करेंगी। इस अंक में कंपनी की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ विभिन्न विषयों से संबंधित जनोपयोगी लेख जैसे वैश्विक महामारी का मानव संसाधन प्रवृत्ति पर प्रभाव, राष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी का बहुआयामी स्वरूप, एस.ए.पी. एम.एम. मॉडयूल, पर्यावरण संरक्षण एक चुनौती, युवाओं में प्रतिस्पर्धा का बढ़ता स्तर, आयकर कानून, 1961ः धारा 206 सी (1एच), आयकरः पुरानी और नई व्यवस्था आदि जैसे विभिन्न विषयों को सम्मिलित किया गया हैं। पत्रिका को रोचक बनाने के उद्देश्य से इसमें कविताओं, संस्मरणों आदि को भी स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त कंपनी में आयोजित राजभाषा हिंदी एवं स्वच्छता अभियान के दौरान कार्यान्वित की गई विभिन्न गतिविधियों की भी जानकारी दी गई है।

हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित एवं अधीनस्थ यूनिटों में राजभाषा हिंदी से संबंधित विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं के साथ–साथ हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्मिकों की हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने हेतु सितम्बर माह में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार कोविड–19 को ध्यान में रखते हुए हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुपालनार्थ अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाता है। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप कंपनी को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग तथा नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति से राजभाषा शील्ड के रूप में प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए है। इन प्रेरणादायी पुरस्कारों के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड की ओर से हार्दिक आभार। भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड सदैव सघन प्रयास करती रहेगी।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह अंक उपरोक्त उपयोगी विषयों से संबंधित जानकारी जनमानस तक पहुंचाने के साथ–साथ पाठकों के लिए उपयोगी एवं रोचक साबित होगा।

अंत में बस इतना ही–

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, निंद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

– सोहन लाल द्विवेदी

अजीत कुमार

अजीत कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

कृषि प्रभाग

भारतीय कृषि रसायन उद्योग

डॉ0 राजेन्द्र थापर
प्रबंधक (जन स्वास्थ्य एवं निर्यात), निगमित कार्यालय

भारतीय कृषि क्षेत्र देश की लगभग 60% जनसंख्या को रोजगार देने के साथ सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 19% का प्रदान करता है। यह क्षेत्र देश की 125 करोड़ से अधिक की सशक्त जनसंख्या के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही हमारी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत आज विश्व पटल पर कई किस्मों में दूसरे स्थान पर होने के साथ नई उचाईयों पर पहुंच गया है। गत कुछ वर्षों में देश ने खाद्य अनाज उत्पादन और बागवानी में उत्तम वृद्धि दर्ज की है और खाद्य अधिशेष परिस्थिति में भी वृद्धि कर रहा है। हालांकि इन सभी उपब्धियों के पश्चात् भी भारतीय कृषि क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसमें प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन, कृषि रसायन के उचित उपयोग के लिए जागरूकता की कमी, बारिश पर अधिक निर्भरता, अप्रत्याशित मौसम पैटर्न और फसलोत्तर उच्च क्षति प्रमुख हैं।

फसल	मैट्रिक टन में उत्पादन
चावल	118
गेहूं	109
मोटा अनाज	47
दाल	2.4
तिलहन	33
गन्ना	37

वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के महत्वकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से देश के कृषक समुदाय को किफायती दरों पर गुणवत्तावान कृषि आदानों जैसे कृषि रसायनों, बीजों और उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ उपरोक्त चुनौतियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। फसल की कटाई से पूर्व एवं पश्चात् फसल संरक्षण एवं उत्तम उपज के लिए कृषि रसायन मुख्य रूप से एक अपेक्षित आदान है। वैश्विक मानदंडों की तुलना में वर्तमान में कृषि रसायन की खपत का स्तर बहुत कम होने के कारण कृषि रसायन उद्योग में विकास के लिए बड़ी अकल्पनीय क्षमता है। कीट द्वारा हमलों, खरपतवार और रोगों के कारण देश में अभी भी कृषि उत्पादन में 15–20% हानि दर्ज की जा रही है। फसल संरक्षण रसायनों के विवेकपूर्ण उपयोग और नकली कीटनाशकों के उपयोग के मुद्दे पर ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, जिससे सामाजिक आर्थिक लाभ प्रदान कर किसानों की आय दोगुनी करने के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस प्रकार भारत अपनी बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्य पूर्ति भी सुनिश्चित कर पाएगा।

वैश्विक कृषि रसायन उद्योग परिदृश्य

उच्च गुणवत्ता वाले अन्य कृषि आदानों के साथ–साथ कृषि रसायनों का उपयोग विश्व भर में कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को समुन्नत करने में सहायक सिद्ध हुआ है। वर्तमान में वैश्विक कृषि रसायन उद्योग 216 बिलियन अमरीकी डॉलर का है और वर्ष 2025 तक इसके 3.4% सी.ए.जी.आर. (CAGR) की दर से बढ़ने की उम्मीद है। देश में खाद्य की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए तथा कम होती कृषि भूमि की समस्या के समाधान में कृषि रसायन उद्योग की अहम भूमिका होगी।

भारतीय कृषि रसायन उद्योग

कृषि रसायन क्षेत्र में भारत विश्व का पांचवा सबसे बड़ा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है। वित्तीय वर्ष 2020 में भारतीय कृषि रसायन उद्योग लगभग 42,000 करोड़ रुपये का होने का आंकलन किया गया था, जिसमें से लगभग 20,000 करोड़ रुपये के कृषि रसायन की घरेलू खपत की गई थी, जबकि उसी अवधि के दौरान 22,000 करोड़ रुपये के कृषि रसायन निर्यात किए गए। वर्ष 2025 तक इस उद्योग के 8–10% सी.ए.जी.आर. की दर से वृद्धि होने की संभावना है और यह वृद्धि बढ़ती जनसंख्या, घटती कृषि भूमि, उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पादों के लिए बढ़ती मांग और जागरूकता

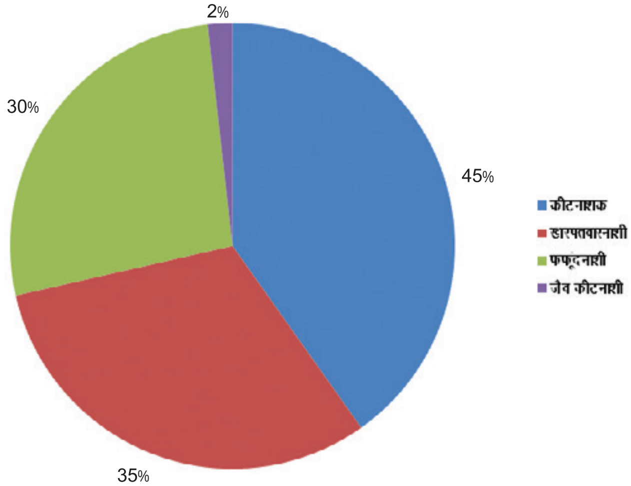

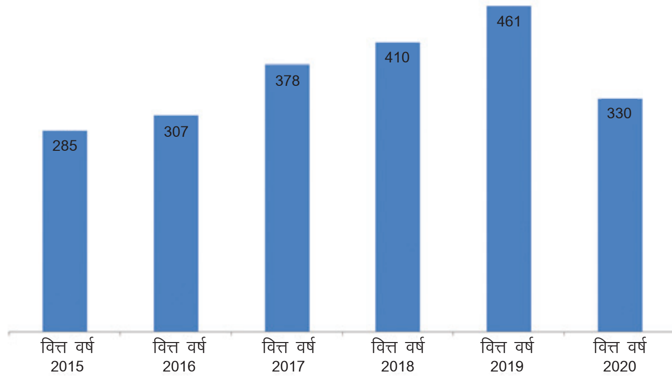

संवर्धन और प्रौद्योगिकी निवेश में उद्योग तथा सरकार की ओर से बढ़ते प्रयास के द्वारा संभावित है।

विगत कुछ वर्षों में भारत में कीटनाशक उद्योग ने अच्छी बढ़त दर्ज की है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में वित्तीय वर्ष 2015 में 186,000 मैट्रिक टन का उत्पादन हुआ था, जोवित्तीय वर्ष 2019 में बढ़कर 217,000 मैट्रिक टन हो गया।

देश का कीटनाशक उद्योग वैश्विक विनिर्माण और निर्यात का मुख्य केंद्र बनकर देश के आर्थिक विकास में सीधे योगदान करने की क्षमता रखता है और यह 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण को भी पूरा कर सकता है। इस उद्योग के लिए विकास के बड़े अवसर मौजूद हैं क्योंकि 2022–25 के बीच, 7 बिलियन अमरीकी डॉलर के कृषि रसायनों के पेटेंट समाप्त होने जा रहे हैं और देश में मौजूद विनिर्माता पेटेंट से जेनरिक उत्पादन कर सकते हैं।

भारतीय कृषि रसायन उद्योग के सामने निम्न मुद्दे और चुनौतियाँ हैंः-

1. **जेनेरिक कीटनाशकों पर अधिक निर्भरताः** विगत कई वर्षों से भारत में मुख्यतः जेनेरिक कृषि रसायनोंका उपयोग होता आया है; जिनमें से अधिकतर रसायनों का प्रभाव कम होता जा रहा है, जिससे फसल उत्पादकता पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। इन जेनेरिक कीटनाशकों के घटते प्रभाव के बावजूद इनका दशकों से लगातार उपयोग किया जा रहा है। हालांकि नए या बेहतर अणुओं का अपनाया जाना बढ़ रहा है, परन्तु यह अभी भी कम है। यह अनुसंधान एवं विकास की उच्च लागत के कारण है, जिसके परिणामस्वरूप भारत में घरेलू उत्पादकों द्वारा सीमित प्रयास किए गए हैं।

2. **जाली एवं नकली उत्पादः** भारतीय कीटनाशक बाजार में जाली कृषि रसायन उत्पादों की भीउपस्थिति चिंता का कारण बनी हुई है। इसमें नकली और घटिया उत्पाद भी शामिल हैं। ये उत्पाद उन राज्यों में अधिक आम हैं जहां किसान कम शिक्षित हैं। इसके साथ–साथ उचित जागरूकता और किसानों की खरीद को प्रभावित करने में स्थानीय खुदरा विक्रेताओं के प्रभाव में कमी के कारण, किसान अधिकांशतः घटिया और नकली कृषि रसायनों के शिकार हो जाते हैं, जो संगठित क्षेत्र के राजस्व पर प्रतिकल प्रभाव डालते हैं। भारत सरकार के कृषि और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग (डी.सी.पी.सी.) के निर्देशों और वित्तीय सहायता के अनुसार, कंपनी 'कृषि रसायनों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग तथा एकीकृत कीट प्रबंधन' विषय पर देश के विभिन्न हिस्सों में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रही है। पिछले 4 वर्षों के दौरान, हिल (इंडिया) लिमिटेडने देश के विभिन्न राज्यों में 75 से अधिक ऐसे किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिनमें लगभग 25,000 किसानों को इस विषय पर प्रशिक्षित किया गया है। इन कार्यक्रमों में कृषि समुदाय के हित के विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आई.सी.ए.आर. संस्थानों,

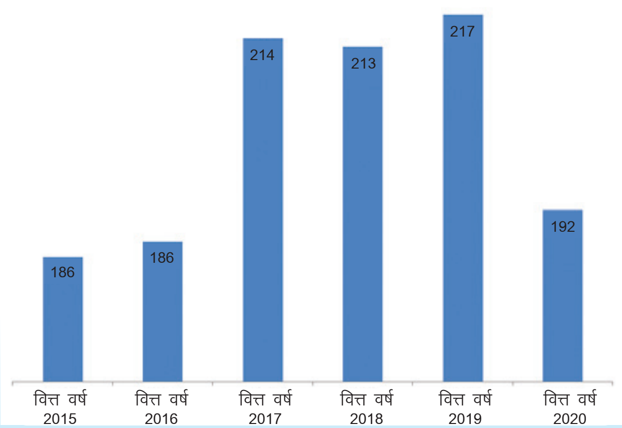

राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के विषय वस्तु विशेषज्ञों आदि को सम्मिलित किया जाता है।

3. ***आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन में जटिलताएंः*** फसल सुरक्षा उत्पादों के लिए बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता हेतु एक सशक्त और कुशल वितरण नेटवर्क रखना महत्वपूर्ण है। हालांकि, प्रमुख कच्चे माल के लिए आयात पर निर्भरता और लॉजिस्टिक अक्षमताओं के कारण, खराब बुनियादी ढांचे के कारण जटिलताओं का प्रबंधन करना कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त, कोविड महामारी के अचानक प्रकोप ने एक सशक्त वितरण नेटवर्क के महत्व को उजागर किया है।

4. ***वर्तमान नियामक ढांचाः*** देश में वर्तमान नियामक प्रणाली ढांचे से उत्पन्न कई चुनौतियों में कीटनाशका पंजीकरण प्रक्रिया भी सम्मिलित है, जो नए कीटनाशक उत्पादों के पंजीकरण में जटिलता ला रहे हैं। इसके फलस्वरूप देश में नए उत्पादों के आने में देरी होती है और विनिर्माताओं को हतोत्साहित करता है।

मुद्दों और चुनौतियों को दूर करने के लिए कुछ सुझावः

1. ***प्रतिगामी संयोजन संवर्धन*** :उद्योग की कच्चे माल के आयात और बेचे जाने वाले फॉर्मूलेशन के निर्माण के लिए आवश्यक तकनीकी सक्रिय संघटकों पर अत्यधिक निर्भरता है। इस आयात निर्भरता को कम करने के लिए आत्मनिरीक्षण करने का समय आ गया है। सरकार को कृषि रसायन विनिमार्णन क्षेत्र में प्रतिगामी संयोजन (Backward Integration) संवर्धन करने वाले संयंत्रों की स्थापना को प्रोत्साहित करना चाहिए। कीटनाशकों के कच्चे माल और तकनीकी ग्रेडों के देशिक उत्पादन के संवर्धन के लिए उद्योगों के लिए पी.एल.आई. योजना लागू की जानी चाहिए।

2. ***सशक्त आपूर्ति श्रृंखला*** : एक सशक्त कृषि रसायन आपूर्ति श्रृंखला (Supply chain) बनाने से भारतीय किसानों को सही समय पर सही उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी।

3. ***व्यवसाय में सुगमता*** : उत्पाद पंजीकरण, उत्पादन लाइसेंस और पर्यावरण मंजूरी के लिए विनियामक चक्र को कम करने की आवश्यकता है। इससे पूंजीगत लागत कम होगी और बड़ी विनिर्माणन सुविधाएं स्थापित करने में सहायताप्राप्त होगी।

4. ***कृषि रसायन अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के लिए नवाचार निधि की स्थापनाः*** विभिन्न समाप्त पेटेंट कीटनाशक उत्पादों के परीक्षण के लिए नवाचार निधि (Innovation Fund) का प्रावधान करने की आवश्यकता है, जिससेभारतीय कृषक समुदाय को लाभ होगा और सामान्य उत्पादन में वृद्धि होगी।

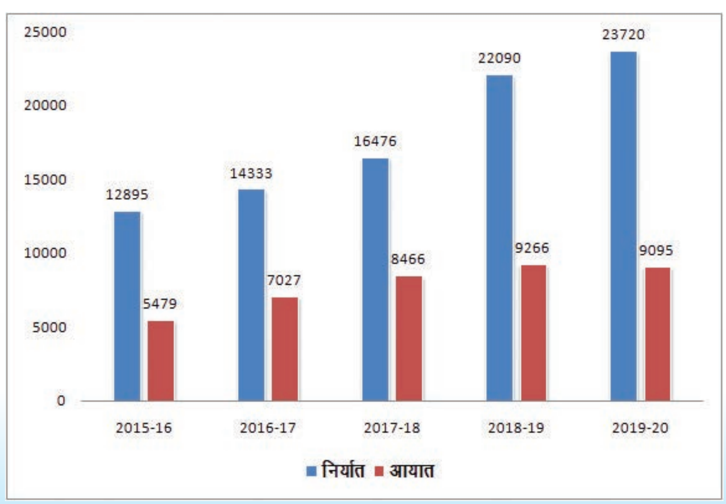

विपणन प्रभाग

हिल मे उपभोक्ता व्यवहार का महत्व

शशांक चतुर्वेदी
मुख्य महाप्रबन्धक (विपणन), निगमित कार्यालय

क्रेता/उपभोक्ता अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए क्या, कब, कितनी, कैसी, कहाँ तथा किससे वस्तुएँ एवं सेवाएँ खरीदते हैं और ऐसी खरीद जिस व्यवहार का परिणाम होती है, उसे क्रेता व्यवहार/उपभोक्ता व्यवहार कहा जाता है। जैसा कि हम जानते है हिल कीटनाशी, तृणनाशी व फफूंदनशी बनाती है और यह सभी उत्पाद मौसम अनुरूप विभिन्न बीमारी की बचाव में और खेती–बाड़ी में प्रयोग होता है ।

'वाल्टर एवं पाल' के अनुसार, "उपभोक्ता व्यवहार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति यह निर्णय लेता है कि वस्तुओं और सेवाओं को खरीदना है तो क्या, कब, कहाँ और किससे खरीदना है।'

'उपभोक्ता व्यवहार' का क्षेत्र

जैसा कि स्पष्ट ही है कि उपभोक्ता व्यवहार से आशय उपभोक्ताओं के क्रय निर्णय सम्बन्धी व्यवहार के अध्ययन से है। उपभोक्ता व्यवहार का अध्ययन एवं विश्लेषण करके सामान्यतः निम्नांकित समस्याओं/प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जा सकता है–

1. वह किन उत्पादों/सेवाओं का क्रय करना चाहता है? – (जैसे कीटनाशी, तृणनाशी व फफूंदनशी आदि उत्पादों के संबंद्ध में)
2. वह उन उत्पादों/सेवाओं को क्यों (Why) क्रय करना चाहता है? – (जैसे अपनी खेती को रोगो से मुक्ति के लिए)
3. वह उनका क्रय किस प्रकार (How) करना चाहता है ? – (जैसे नगद या उधार)
4. वह उनका क्रय कहाँ से (Where) करना चाहता है ? (जैसे कि – विक्रेता)
5. वह उनका क्रय कब (When) करना चाहता है अर्थात् उत्पाद (वस्तु) की खरीद का वास्तविक समय क्या है ? (बीमारी या रोग लगने से पहले या बाद मे)
6. वह उनका क्रय किन से (From whom) करना चाहता है? (विक्रेता से)

उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्व अथवा घटक (Factors Affecting Consumer Behaviour)

उपभोक्ता के क्रय सम्बन्धी व्यवहार को अनेक घटक प्रभावित करते हैं। उपभोक्ता के व्यवहार में सदैव परिवर्तन होते रहते हैं। उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन के कारण इसे प्रभावित करने वाले घटकों में परिवर्तन होता रहता है। उपभोक्ता व्यवहार को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

- मनोवैज्ञानिक घटक (Psychological Factors)

  यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्रेता को उत्पाद के बारे मे कितना और कहां से जानकारी प्राप्त है।

- मनोवैज्ञानिक घटक (Psychological factors)

  इसमें निम्नलिखित तत्वों को सम्मिलित किया जाता है:–

1. आधारभूत आवश्यकतायें (Basic Needs)– क्रेता की कुछ आधारभूत आवश्यकतायें होती हैं जिनकी पूर्ति वह सर्वप्रथम करना चाहता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ए० एच० मैस्लो (A. H. Maslow) ने आवश्यकताओं में निम्नलिखित प्राथमिकतायें निश्चित की हैं:–

   (i) शारीरिक आवश्यकताएँ (Physiological Needs)– मैस्लो के अनुसार व्यक्ति सबसे पहले अपनी दैहिक आवश्यकताओं को पूरा करता है जो मानव जीवन को बनाये रखने के लिये जरूरी हैं, जैसे–भोजन, वस्त्र, मकान आदि।

   (ii) सुरक्षा आवश्यकताएँ (Safety Needs)– इसमें शारीरिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक सुरक्षाओं को सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षा, स्थायित्व एवं निश्चितता चाहता है।

   (iii) सामाजिक आवश्यकताएँ (Social Needs)– प्रत्येक

व्यक्ति समाज में सम्मान चाहता है। वह समाज के सदस्यों से प्रेम, स्नेह और मित्रतापूर्ण व्यवहार चाहता है।

(iv) सम्मान और स्वाभिमान (Esteem and Self Respect) –इन आवश्यकताओं में मान्यता प्राप्त करने की इच्छा, प्रतिष्ठा पाने की इच्छा, प्राप्त करने की इच्छा, प्रमुख बनने की इच्छा आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(v) स्वः यथार्थवादिता (Self & actualisation)– प्रत्येक व्यक्ति में अपने को पूर्ण रूप से विकसित करने तथा अपनी योग्यता एवं कार्यक्षमता द्वारा महानतम उपलब्धियाँ प्राप्त करने की इच्छा विद्यमान होती है।

उपर्युक्त सभी आवश्यकताएँ उपभोक्ता के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। ऐसी वस्तुओं और सेवाओं का विपणन आसान होता है जो उपर्युक्त आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में सहायक होती हैं।

2. छवि (Image)– जैसा कि हम जानते है हिल ब्रांड बाजार में बहुत प्रचलित है। किसी वस्तु या विषय के सम्बन्ध में ज्ञान या अज्ञानतावश किसी वस्तु की मस्तिष्क में जो छाप होती है उसे छवि कहा जाता है। उपभोक्ता व्यवहार पर इसका भी बहुत प्रभाव पड़ता है। छवि कई प्रकार की हो सकती है, जैसे–आत्म छवि, वस्तु छवि, ब्राण्ड छवि इत्यादि।

(i) आत्म छवि (Self Image)– प्रत्येक व्यक्ति की आत्म छवि भिन्न होती है। आत्मछवि से आशय उस तस्वीर से है जो कि एक व्यक्ति अपने सम्बन्ध में रखता है।

(ii) वस्तु छवि (Product Image)– वस्तु के सम्बन्ध में क्रेताओं की धारणा वस्तु छवि कहलाती है।

(iii) ब्राण्ड छवि (Brand Image)– ब्राण्ड छवि का निर्माण वस्तु के प्रयोग से, निर्माता की ख्याति से तथा विज्ञापन से होता है। ब्राण्ड छवि ही व्यक्ति को विशिष्ट ब्राण्ड की वस्तु क्रय करने या न करने के लिये प्रेरित करती है। जैसा कि हम जानते है हिल कंपनी सरकारी है अतः इसका ब्रांड छवि अति उत्तम है।

3. ज्ञान सिद्धान्त (Learning Theory)– ज्ञान सिद्धान्त के अनुसार उपभोक्ता व्यवहार को निम्न तत्व प्रभावित करते हैं:–

(i) अभिप्रेरणा (Motivation) – हमारे सभी कर्मचारीगण जो कि क्षेत्र में कार्यरत है उनके द्वारा किसानो की उचित सलाह दिया जाता है। क्रय प्रेरणाओं से उपभोक्ता व्यवहार बहुत अधिक प्रभावित होता है। इन प्रेरणाओं के अन्तर्गत भावात्मक, विवेकपूर्ण, स्वाभाविक एवं सीखे हुए प्रयोजन आदि शामिल होते हैं। इसको समझने के लिए जैसे एक किसान हिल उत्पाद का प्रयोग करता है और बाद में परिणाम अच्छा आता है तो वह अन्य किसानो को भी प्रोत्साहित करेगा ।

(ii) नितयता (Repetition) – गुणवत्ता अच्छी होने के कारण कई बार नित्यता होती है। किसी वस्तु को उपभोक्ता के निरन्तर सम्पर्क में लाने से उसके वस्तु ज्ञान में वृद्धि हो जाती है, उदाहरण के लिए किसी वस्तु के निरन्तर विज्ञापन से उपभोक्ता को उस वस्तु के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वह वस्तु का क्रय करने के लिये प्रोत्साहित होता है। अच्छा परिणाम की बाद हमेशा वह हिल उत्पाद का प्रयोग करेगा।

(iii) वस्तु स्थिति (Conditioning) – वस्तु स्थिति के ज्ञान से भी उपभोक्ता व्यवहार बहुत अधिक प्रभावित होते हैं, जैसे– यदि किसी वस्तु की पैकिंग को सुन्दर और आकर्षक बना दिया जाये तो बहुत से क्रेता उसके पैकिंग से प्रभावित होकर वस्तु का क्रय कर लेते हैं।

(iv) समूह प्रभाव (Group Influence) – समूह प्रभाव भी उपभोक्ता व्यवहार पर प्रभाव डालता है। यदि समाज में कोई धनी या प्रतिष्ठित व्यक्ति किसी वस्तु का उपभोग आरम्भ कर देता है तो समाज के अन्य व्यक्ति भी उसका अनुसरण करने लगते हैं।

4. आधारभूत आवश्यकतायें एवं उपभोक्ता व्यवहार (Basic Needs and Consumer Behaviour) – उपभोक्ता व्यवहार आधारभूत आवश्यकताओं से भी प्रेरित होता है सबसे पहले वह ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

- आर्थिक घटक (Economic Factors)
  क्या वो खर्च करने के लिए तैयार है?
- आर्थिक घटक के प्रमुख
  उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख

आर्थिक घटक निम्न प्रकार हैः–

(1) व्यक्तिगत आय (Personal Income) – उपभोक्ता की निजी आय उनकी क्रय शक्ति को बहुत प्रभावित करती है। उपभोक्ता की निजी आय में वृद्धि प्रायः उपभोग में वृद्धि करती है और निजी आय में कमी उपभोग में कमी करती है।

(2) पारिवारिक आय (Family Income) – ग्राहकों की पारिवारिक आय भी उनकी क्रय शक्ति को प्रभावित करती है। कम आय वाले व्यक्ति निम्न किस्म की वस्तुओं का क्रय करते हैं, जबकि अधिक आय वाले व्यक्ति उच्च किस्म की वस्तुओं और सेवाओं को क्रय करते हैं।

(3) भावी आय की आशायें (Expectation of Income)– यदि किसी व्यक्ति को निकट भविष्य में कुछ आय प्राप्त होने की आशा हो तो उसके द्वारा प्रायः अधिक मात्रा में क्रय किया जाता है। इसके विपरीत, भविष्य में आय प्राप्ति की आशा न होने पर कम क्रय किया जाता है।

(4) उपभोक्ता की साख (Consumer's Credit)– यदि उपभोक्ता को वस्तुएँ एवं सेवाएँ उधार मिल जाती हैं तो वह अधिक मात्रा में क्रय करने के लिये प्रेरित होते हैं। विपणन के क्षेत्र में उपभोक्ता की साख का बहुत अधिक महत्व है, जिसकी सहायता से बाजार को विस्तृत या संकुचित किया जा सकता है।

(5) स्वाधीन आय (Discretionary Income)–स्वाधीन आय से आशय है, जो आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद बच जाती है। इस प्रकार की आय को उपभोक्ता अपनी स्व–इच्छा से खर्च करता है। स्वाधीन आय उपभोक्ता को विशिष्ट वस्तुओं या सेवाओं को क्रय करने के लिये प्रेरित करती है, जैसे–फर्नीचर, स्कूटर, पंखें एवं अन्य विलासिता की वस्तुएँ।

(6) सरकारी नीति (Government Policy)– सरकार द्वारा लगाये जाने वाले अधिक कर क्रय शक्ति को कम कर देते हैं। इसी प्रकार मुद्रा प्रसार की अवस्था में बढ़ती हुई कीमते भी क्रय–शक्ति को कम कर देती हैं। अतः उपभोक्ता को सरकारी नीतियों के अनुसार क्रय व्यवहार में परिवर्तन करना पड़ता है।

समृद्धि हेतु सुरक्षा

काइज़ेन

विजय कुमार महाराणा
यूनिट प्रमुख, बठिंडा यूनिट

काइज़ेन (Kaizen) एक जापानी शब्द है जिसका मतलब ''अच्छे के लिए बदलाव'' होता है। ऐसा कोई बदलाव जिससे कुछ अच्छा हो सकता है उसे काइज़ेन कहा जाता है। यह लगातार सुधार की एक प्रक्रिया होती है और वह बदलाव छोटे–बड़े हो सकते हैं। मसाकि इमाई (Masaaki Imai) को फादर ऑफ काइज़ेन कहा जाता है।

''काइज़ेन'' शब्द (''सुधार'' के लिए प्रयुक्त जापानी शब्द) जापानी से अंग्रेज़ी में अपनाया गया शब्द है, जो निर्माण गतिविधियों, सामान्य व्यावसायिक गतिविधियों और यहां तक कि सामान्य जीवन में सतत सुधार की व्याख्या और उपयोग पर निर्भर एक दर्शन या तरीकों को संदर्भित करता है। जब काइज़ेन का प्रयोग व्यवसाय के अर्थ में किया जाता है और उसका इस्तेमाल कार्यस्थल पर किया जाता है, तो आमतौर पर उन गतिविधियों को संदर्भित करता है जो एक व्यवसाय के सभी कार्यों के लगातार सुधार से होता है और निर्माण से प्रबंधन तक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सी.ई.ओ.) से लेकर श्रमिक स्तर के कर्मचारियों के लिए होता है।

काइज़ेन दार्शनिक विश्वास पर आधारित है कि सब कुछ सुधारा जा सकता है। कुछ संगठन एक प्रक्रिया को देखते हैं और देखते हैं कि यह ठीक चल रही है; काइजेन के सिद्धांत का पालन करने वाले संगठन एक ऐसी प्रक्रिया देखते हैं, जिसे सुधारा जा सकता है। इसका मतलब यह है कि कुछ भी–कभी भी यथास्थिति के रूप में नहीं देखा जाता है–सुधार के लिए निरंतर प्रयास होते हैं जिसके परिणामस्वरूप समय के साथ छोटे, अक्सर अगोचर, परिवर्तन होते हैं। ये वृद्धिशील परिवर्तन किसी भी क्रांतिकारी नवाचार से गुजरे बिना, लंबी अवधि में पर्याप्त परिवर्तन करते हैं। यह उन परिवर्तनों को स्थापित करने के लिए एक बहुत ही विनम्र और कर्मचारी–अनुकूल तरीका हो सकता है जो एक व्यवसाय के बढ़ने और उसके बदलते परिवेश के अनुकूल होने के साथ होना चाहिए।

काइज़ेन का उद्देश्यः

- उत्पादकता में सुधार, कचरे (waste) को कम करना, अनावश्यक मेहनत को खत्म करना और कार्यस्थल का मानवीकरण करना है।
- काइज़ेन तीन बुनियादी प्रकार के कचरे (waste) की पहचान करने और उन्हें खत्म करने में प्रभावी है। मुदा (Muda) मुरा (Mura) और मुरी (Muri)।
- काइजेन के माध्यम से किसी भी कारखाने में कचरे में कमी और उत्पादकता (Productivity) और गुणवत्ता (Quality) में वृद्धि होती है।

काइज़ेन के लाभः

(i) **कचरे को कम करनाः–** कचरे को कम करना काइज़ेन के प्रमुख पहलुओं में से एक है और अक्सर इसे आरंभ में करना सबसे आसान होता है।

(ii) **कार्य प्रक्रियाओं को सरल बनानाः–** काइज़ेन अत्यधिक कठिन कार्य को समाप्त कर कंपनियों को लाभ भी देता है।

(iii) सुरक्षा में सुधार।

(iv) कर्मचारी और ग्राहक संतुष्टि में सुधार।

कैसे शुरू करें काइज़ेन ?

काइज़ेन गतिविधि के निरंतर चक्र में छह चरण होते हैं।

(1) किसी समस्या या अवसर की पहचान करना।

(2) प्रक्रिया का विश्लेषण करना।

(3) सबसे अच्छा और प्रभावी उपाय (समाधान) खोजना।

(4) समाधान को लागू करना।

(5) परिणामों का अध्ययन करना।

(6) समाधान का मानकीकरण करना।

काइज़ेन को अपनी टीम में नियोजित करने के लिए कुछ सुझावः-

- क्या आपकी टीम ने अपने दैनिक दिनचर्या के दौरान उन चीजों का एक विचार लॉग रखा है जो टूटी हुई या अक्षम लगती हैं और सुधार का उपयोग कर सकती हैं।
- आपकी टीम द्वारा वर्तमान में उपयोग की जा रही प्रक्रियाओं में कचरे के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए मासिक मंथन सत्र आयोजित करें। विचार लॉग इन करें और सभी प्रकार के कचरे के माध्यम से देखें कि कचरे को कहाँ समाप्त किया जा सकता है और चीजों को कैसे सुधारा जा सकता है।
- आपकी टीम परिवर्तनों को कैसे अपनाएगी, इसके लिए एक कार्य–योग्य योजना बनाएं। इसे अभी करने और विचार को लागू करने में बहुत अधिक समय लेने के बीच एक संतुलन खोजें, जिससे अधिक बर्बादी न हो।
- इस बारे में सोचे कि प्रस्तावित परिवर्तन संगठन के भीतर दूसरों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं और किसी भी परिवर्तन को व्यवहार में लाने से पहले उनसे परामर्श करें।

काइज़ेन के प्रमुख तत्व और मूल सिद्धांतः

कार्यस्थल में काइज़ेन को लागू करना लगभग असंभव हो सकता है क्योंकि प्रबंधन आमतौर पर तत्काल परिणाम की अपेक्षा करता है। कंपनियां अक्सर बेहतर कार्य प्रक्रियाओं और अनुकूलित व्यावसायिक प्रक्रियाओं से चूक जाती हैं जो परिणामों पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करने के कारण कॉर्पोरेट लाभ प्रदान करती हैं। काइज़ेन के लाभों को अधिकतम करने के लिए, निम्नलिखित तत्वों और सिद्धांतों को अपने संदर्भ में लागू करने से पहले स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए।

(1) काइज़ेन प्रबंधन प्रतिबद्धताः

सबसे आम कारणों में से एक, जिससे काइज़ेन कार्यान्वयन विफल रहता है, समर्थन की कमी और, अधिक महत्वपूर्ण बात, प्रबंधन से कार्रवाई। इमाई कहते हैं, ''कंपनी के शीर्ष प्रबंधन की इस काइज़ेन दृष्टिकोण को लागू करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है, और उसके बाद प्रत्येक प्रबंधक की, तत्पश्चात् यह भूमिका निचले कर्मचारियों की ओर जाती है। ''जब शीर्ष प्रबंधन निरंतर सुधार के लिए अपनी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है, तो प्रबंधक अनिवार्य रूप से काइज़ेन पहलों का पालन करते हैं और कार्यकर्ता व्यक्तिगत रूप से काइज़ेन मानसिकता विकसित करते हैं।

(2) कर्मचारी सशक्तिकरणः

नौकरी करने वाले कर्मचारी को यह पता होगा कि नौकरी कैसे की जाती है, इसे बेहतर बनाने के सर्वोत्तम तरीके हैं। शीर्ष प्रबंधन को एक ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहां लोग योगदान करने के लिए सशक्त महसूस करें ताकि सुधार के लिए सुझाव सभी स्तरों और रैंकों से आ सकें। कार्यकर्ताओं को संगठन में मूल्य जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना न केवल मनोबल को बढ़ाता है, यह सभी को निरंतर सुधार प्रयासों का स्वामित्व भी देता है, जो काइज़ेन के सफल कार्यान्वयन में योगदान देता है।

(3) गेम्बा वॉक (Gemba Walk):

परिचालन से दक्षता प्राप्त होना आरंभ होता है, जहां वास्तविक कार्य होता है, सम्मेलन कक्ष से नहीं। गेम्बा वॉक– शब्द गेम्बा या गेमबुत्सु (Gembutsu) से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'वास्तविक स्थान'– आमतौर पर प्रबंधकों द्वारा यह जानने या समीक्षा करने के लिए किया जाता है कि कोई विशिष्ट प्रक्रिया कैसे काम करती है और इसके सुधार के बारे में श्रमिकों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करती है। गेम्बा वॉक चेकलिस्ट समस्याओं के मूल कारण और अगले चरणों को निर्धारित करने के लिए प्रासंगिक प्रश्न पूछने में पर्यवेक्षकों का मार्गदर्शन करते हैं।

(4) 5एस :

निरंतर सुधार के लिए सबसे बड़ी बाधाओं में से एक पुरानी प्रथाओं से चिपकना है या यह मान लेना कि नए तरीके विफल हो जाएंगे। 5एस सिद्धांतों का उद्देश्य लगातार कचरे को खत्म करने के तरीकों की तलाश में कार्यस्थल की दक्षता को बढ़ाना है। संगठनों को यह सोचने से बचना चाहिए कि सिर्फ इसलिए कि पहले कुछ काम करता है, इसका मतलब है कि यह काम करना जारी रखेगा। सुरक्षित कार्य संचालन के लिए निवारक नियंत्रणों की स्थापना पर बल देते हुए, 6एस ने 5एस में सुरक्षा को जोड़ा।

''जब हम मौजूदा परिस्थितियों से संतुष्ट होते हैं तो प्रगति उत्पन्न नहीं हो सकती है।''

– ताइची ओहनो, टी.पी.एस. के जनक

मानव संसाधन

वैश्विक महामारी का मानव संसाधन प्रवृत्ति पर प्रभाव

सुनील गौड़
महाप्रबन्धक (मा.सं.एवं प्र.)–प्रभारी,
निगमित कार्यालय

वर्ष 2019 के समाप्त होने के साथ ही कई मानव संसाधन प्रवृत्तियों की भविष्यवाणी की गई थी कि वर्ष 2020 में मानव संसाधन प्रबल होगा। लेकिन हमारे कार्य करने पर वैश्विक महामारी द्वारा व्यवधान उत्पन्न करने के संबंध में कोई भविष्यवाणी नहीं की गई थी। तथापि, यह वर्ष योजना के अनुसार व्यतीत नहीं होने पर सभी की आशाएं पस्त हो गईं थीं। वर्ष 2020 में अनिश्चितता कार्य मॉडल में तेज़ी से परिवर्तन लेकर आई है।

यह संभावना है कि कोविड–19 हमारे कार्य करने की शैली को सदा के लिए बदल देगा। प्रत्येक मानव संसाधन व्यवसायी के लिए कर्मचारियों को स्वस्थ, व्यस्त और उपयोगी बनाए रखना सर्वोत्तम प्राथमिकताओं में से एक है। हालांकि, निम्नलिखित क्षेत्र और मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है:–

1. व्यापार निरंतरता को बनाए रखने के लिए सर्वोत्तम मानव संसाधन कार्यनीति क्या होनी चाहिए ?
2. कंपनी की संस्कृति का अनुरक्षण कैसे किया जाए ?
3. किस प्रकार कार्यबल का प्रबन्धन और उन्हें व्यस्त रखा जाए ?
4. नए कार्य दृष्टिकोण को ग्रहण करने के लिए सही मानव संसाधन प्रौद्योगिकी उपकरण क्या होने चाहिए ?
5. कर्मचारी जब घर से कार्य कर रहे हों तो उनके कल्याण के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए ?

विस्तृत प्रतिभा पूल तक पहुंच होना नियोक्ता के लिए लाभकारी है, परन्तु इसके साथ–साथ कंपनियों को कंपनी संस्कृति, टीम सहयोग, प्रौद्योगिकी संरचना और कार्य–जीवन संतुलन की अपनी कार्यनीति पर पुनःविचार करना होगा।

प्रदर्शन प्रबंधन पर फोकस बदल जाने के साथ ही अब ध्यान कर्मचारी के काम के घंटों को गिनने से हटकर कुल उत्पादकता और किए गए काम की गुणवत्ता पर होगा। एक स्थायी परोक्ष कार्य संस्कृति, जहां टीमें अत्यधिक उत्पादक एवं व्यस्त हों, के निर्माण हेतु मानव संसाधन प्रौद्योगिकी को अपनाने में तेजी से वृद्धि होगी।

वैश्विक महामारी के कारण उत्पन्न यह परिवर्तन महत्वपूर्ण रूप से व्यक्ति एवं टीम प्रदर्शन को प्रभावित करेगा, कंपनियां दक्षता लक्ष्य निर्धारण, निरंतर फीडबैक, चल रहे प्रदर्शन की समीक्षा और सतत कर्मचारी विकास को अधिक महत्वता देगा।

कर्मचारी अनुभव की पुनर्रचना

वैश्विक महामारी से पहले नियोक्ता कर्मचारी के अनुभव पर ध्यान दे रहे थे, परन्तु कोविड–19 ने कर्मचारी को काम पर रखने से लेकर उनके नौकरी छोड़ के जाने तक और कर्मचारी के आभासी अनुभव को मापते हुए कर्मचारियों की यात्रा की पुनःरचना करने के लिए मानव संसाधन टीमों को विवश किया है। यह केवल कर्मचारियों के अनुभव प्रबन्धन के संबंध में ही नहीं, अपितु कर्मचारियों के घर से काम करने के दौरान उनके व्यक्तिगत जीवन पर ध्यान रखना होगा।

फीडबैक देना और कर्मचारियों को सलाह देना नए बेहतर कर्मचारी अनुभव का हिस्सा होगा।

यह उभरती हुई मानव संसाधन प्रवृत्ति परिपक्व कर्मचारी अनुभव रणनीतियों जैसे कि लचीली कार्य नीतियां, 360 पल्स सर्वेक्षण, कर्मचारी के स्वास्थ्य का आश्वासन, विद्वत्ता और कौशल विकास, स्वयं सेवा पोर्टल आदि में प्रतिबिंबित होगा।

ऑनलाइन प्रशिक्षण और कौशल संवर्धन

एक रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश कार्यपालक या तो वर्तमान में कौशल की कमी का अनुभव कर रहे हैं या कार्य वातावरण में परिवर्तन के कारण शीघ्र इसका सामना करना पड़ सकता है।

वर्ष में नौकरी की अनिश्चितता ने लोगों के लिए अतिरिक्त कौशल सीखने को आवश्यक बना दिया है। कंपनियां भी चुनौतीपूर्ण नौकरी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक एवं उचित प्रशिक्षण और ज्ञान के साथ अपने कार्यबल को बढ़ाने की योजना बना रही हैं।

नियोक्ताओं ने निरंतर सीखने और विकास की संस्कृति बनाने पर ध्यान देने के साथ–साथ कर्मचारियों से जुड़ने और आभासी रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अनुभव प्रदान करने के लिए पहल की हैं। मानव संसाधन उपकरणों का उपयोग

कौशल की कमी और उपयुक्त प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों की पहचान करने में किया जा रहा है।

कर्मचारियों को प्रशिक्षण और विकास के अवसर प्रदान करने का महत्वः

- कर्मचारी कौशल समूह का विस्तार करें और उन्हें चुनौतीपूर्ण कार्य करने में सक्षम बनाएं।
- कर्मचारियों की कार्यकुशलता और प्रदर्शन में सुधार के परिणामस्वरूप लाभ होता है।
- उल्लासपूर्ण, संतुष्ट टीमों का निर्माण करना जो ग्राहक प्रतिधारण और लाभप्रदता पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- कर्मचारियों को सशक्त बनाना और उन्हें अघोषित छंटनी या प्रतिस्थापन के लिए तैयार रखना।
- नौकरी छोड़ने की दर को कम करना, विनियोजन मे वृद्धि और कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाना।
- कंपनी की सेवाओं और उत्पादों की नवपरिवर्तन को समुन्नत करना।
- उद्योग में प्रतिस्पर्धियों से बेहतर प्रदर्शन करें।

कर्मचारी कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य

शारीरिक स्वास्थ्य अति महत्वपूर्ण है, परन्तु अब कर्मचारियों का मानसिक स्वास्थ्य भी सुनिश्चित करने का समय आ गया है और निस्संदेह, इसमें मानव संसाधन की एक अनूठी भूमिका है।

वर्ष 2022 में मानव संसाधन प्रवृत्ति में कर्मचारी कल्याण शीर्ष में से एक होंगे। संगठन पहले से ही कर्मचारी कल्याण कार्यक्रमों और लाभों को फिर से बनाने के सभी तरीकों पर पुनर्विचार कर रहे हैं, जिसमें शारीरिक कल्याण, मानसिक स्वास्थ्य, सुविधाजनक कार्य सारणी, शिशु की देखभाल, वृद्ध देखभाल, भुगतान समय आदि सम्मिलित हैं।

वर्ष 2022 में भी कर्मचारियों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने की प्रवृत्ति जारी रहेगी, जिसमें नियोक्ता कर्मचारियों के कल्याण के लिए की जाने वाली पहल में निवेश करेंगे।

क्लाउड-आधारित मानव संसाधन प्रणाली

जब से कोविड–19 संकट आरंभ हुआ है, कंपनियों ने मानव संसाधन प्रौद्योगिकी में भारी निवेश किया है, जिसमें क्लाउड–आधारित मानव संसाधन सिस्टम पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसे डेटा की पूरी गोपनीयता के साथ, कभी भी और कहीं से भी आसानी से एक्सेस किया जा सकता है।

दूरस्थ रूप से काम करने वाले संगठनों के साथ आवश्यकता हैः-

- कर्मचारियों के साथ जुड़े और अपडेट रहने की
- कर्मचारी डेटा को वास्तविक समय में प्राप्त करना
- कर्मचारी सारणी को ट्रैक करना
- आभासी संप्रेषण, सहयोग एवं कार्यों को सुचारू रूप देना
- कुशल लक्ष्य निर्धारित, कर्मचारी के प्रदर्शन की निगरानी और प्रतिक्रिया देना
- उचित प्रदर्शन आंकलन और प्रतिपूर्ति प्रणाली को क्रियान्वित करना
- अनिश्चित परिस्थितियों के लिए कार्यबल योजना पर ध्यान केन्द्रित करना
- कर्मचारी उत्पादकता और कल्याण के संतुलन हेतु सुझाव प्रदान करना
- कर्मचारियों के सशक्तिकरण के लिए कर्मचारी स्वयं सेवा पोर्टल क्रियान्वित करना
- प्रबन्धकों एवं मानव संसाधन को सूचित निर्णयन के लिए रिपोर्टें, डैशबोर्ड और वैश्लेषिक प्रदान करना
- अभ्यर्थी के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए स्वचालित रूप से भर्ती और ऑनबोर्डिंग को स्वचालित करना

मानव संसाधन प्रौद्योगिकी नियोक्ता एवं कर्मचारी दोनों के लिए लाभकारी स्थिति के साथ मानव संसाधन व्यावसायिकों के लिए पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई।

अपने व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए नवीनतम क्लाउड–आधारित मानव संसाधन व्यवस्था के साथ अद्यतित रहना समय की मांग है।

व्यक्ति विश्लेषण

लोगों और प्रक्रियाओं का अध्ययन करने की डेटा संचालित विधि का आधिपत्य 2022 में भी जारी रहेगा।

विश्व भर के संगठन व्यक्ति विश्लेषण को अपनी कंपनी के लिए उच्च प्राथमिकता मानते हैं क्योंकि यह न केवल उन्हें अच्छी व्यावसायिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने अपितु 'लोक समस्या' का सामना करने के लिए भी सक्षम बनाता है।

लोक विश्लेषण शीघ्र ही किसी भी संगठन के लिए परम आवश्यक बन जाएगा। डेटा–संचालित जानकारी का उपयोग बेहतर भर्ती निर्णय, विनियोजन में सुधार, प्रभावी प्रदर्शन प्रबंधन और कर्मचारी की कमी को कम करने के लिए किया जाएगा।

अध्ययन से पता चला है कि लोक विश्लेषण में वृद्धि होगी, विश्लेषण तकनीकी में निवेश बढ़ेगा और शीर्ष लोक विश्लेषण टीमें व्यापार मांग और बड़े पैमाने पर मूल्य प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्वयं को पुनर्गठित करेंगी।

व्यक्ति विश्लेषण संगठनों के लिए मूल्य बढ़ाना और डेटा के आधार पर प्रक्रियाओं को अनुकूलित करना जारी रहेगा।

मानव संसाधन प्रभावशीलता, प्रति कर्मचारी राजस्व, नई किराया दर, प्रशिक्षण लागत की हानि इत्यादि को मापने में मुख्य कार्यपालक अधिकारी और नेतृत्व सक्षम होंगे, और सूचित निर्णय लेने के लिए कार्रवाई योग्य पूर्ण जानकारी के साथ ले सकेंगे।

आभासी ऑन बोर्डिंग

शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करना और उन्हें काम पर रखना मानव संसाधन के लिए सदैव से ही प्राथमिकता रही है।

वर्ष 2022 में भी लक्ष्य वही है – अत्यधिक कुशल रूप से शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित, नियुक्त और ऑनबोर्ड करना। अंतर केवल इतना है कि नियोक्ता टैलेंट पूल की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच के साथ दूरस्थ भर्ती और वर्चुअल ऑनबोर्डिंग पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे।

वर्चुअल भर्तियों का उदय अभ्यर्थियों को एक संपूर्ण डिजिटल अनुभव प्रदान करेगा। अतः सर्वोत्तम अभ्यर्थी अनुभव और प्रभावी ऑनबोर्डिंग या ऑफबोर्ड कर्मचारियों को प्रदान करने के लिए नियोक्ताओं को आधुनिक भर्ती उपकरणों के साथ तैयार रहने की आवश्यकता होगी।

मानव संसाधन में कृत्रिम बोध

वर्ष 2022 में कृत्रिम बोध (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) सक्षम सॉफ्टवेयर को और अधिक अपनाए जाने की संभावनाएं हैं। कृत्रिम बोध ने घर और काम पर हमारे जीवन को परिणत किया है और यह प्रौद्योगिकी उद्योग का एक अनिवार्य भाग बन गया है। भर्ती से लेकर कर्मचारी विकास तक, मानव संसाधन प्रौद्योगिकी में कृत्रिम बोध के एकीकरण से कई मानव संसाधन प्रथाओं को लाभ हुआ है।

कृत्रिम बोध मानव संसाधन को निम्नलिखित में योग्य बनाना जारी रखेगाः

- उच्च कर्मचारी टर्नओवर और नौकरी छोड़ने के संभावित कारणों की पहचान करना
- संवर्धित और आभासी वास्तविकता के माध्यम से कर्मचारी प्रशिक्षण और कौशल विकास में तीव्रता लाना
- उच्च प्रदर्शन करने वालों की पहचान करना और उनके लिए उपयुक्त विकास आवश्यकताओं और पदों की पहचान करना
- रिक्तियों की स्थिति के विज्ञापन के लिए सबसे उपयुक्त शब्दों को खोजना
- नए कर्मचारियों की गुणवत्ता में वृद्धि करते हुए अभ्यर्थियों की खोज में कम समय खर्च करके भर्ती प्रक्रिया को तेज करना
- अभ्यर्थी अनुभव और विनियोजन में संवर्धन करना
- कर्मचारी विनियोजन सर्वेक्षण, चौटबॉट आदि का उपयोग करके कर्मचारियों के व्यवहार को समझने में मानव संसाधन को सक्षम करना

कर्मचारियों को एक मजबूत, स्मार्ट और उन्नत कार्यस्थल संस्कृति के सह–निर्माता के रूप में विनियोजित करने के लिए कृत्रिम बोध एक मंच प्रदान करता है। यह संगठन में एक रणनीतिक भागीदार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

निष्कर्ष

यह कहना सही है कि काम का भविष्य आखिरकार आ ही गया है। 2021 में संगठनों ने काम करने के नए तरीकों को अपनाया और यह मॉडल 2022 और आने वाले समय में भी जारी रहेगा।

कर्मचारी अनुभव को बढ़ाने और मौजूदा व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मानव संसाधन सर्वोत्तम प्रथाओं को विकसित करना जारी रखेगा।

कर्मचारी प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम और इसके लाभ

ओंकुश बनर्जी
बाह्य साधन : वरिष्ठ सहायक (मानव संसाधन),
निगमित कार्यालय

1970 के दशक में कैरियर योजना एवं विकास के प्रयास मुख्य रूप से उच्च क्षमता का प्रदर्शन करने वाले युवा कर्मचारियों पर ही समर्पित थे। संगठनों को उच्च रैंकिंग स्थान प्राप्त करने के लिए भविष्य के लिए योजना बनाने और उनके नए कर्मचारियों को प्रशिक्षण और विकास प्रदान करने की सलाह दी जाती रही है। हालाँकि, कर्मचारियों ने अपने संगठनों को रूढ़िवादी प्रतिबद्धता के माध्यम से कैरियर मार्ग मॉडल बहुत अच्छी प्रकार से विकसित किया है। 1980 के दशक के दौरान संगठनों के शीर्ष पर तुरंत प्रतिबद्धता प्राप्त करने की दक्षता कम होने के कारण, जब संगठन एक नीरस पदानुक्रम को स्थानांतरित करने का प्रयास कर रहे थे जिसमें पदोन्नति के अवसर कम थे।

अब प्रत्येक क्षेत्र में किसी भी संगठन की उपलब्धि उसके कर्मचारियों पर निर्भर करती है। हालांकि कुछ अन्य विभिन्न कारक भी हैं जो एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं, एक संगठन को बाज़ार में आर्थिक रूप से प्रभावी और प्रतिस्पर्धा के अनुरूप कुशल कर्मचारियों को सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है। इसलिए, इस मूल्यवान मानव संसाधन को बनाए रखने के लिए, संगठन को नौकरी की संतुष्टि और कर्मचारियों के प्रतिधारण के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है।प्रशिक्षण सीखने और विकास की एक संगठित विधि है जो व्यक्ति, समूह और संगठन की दक्षता का विस्तार करती है। विकास उन उपलब्धियों का उल्लेख करता है जो कर्मचारियों को व्यक्तिगत विकास के लिए नई क्षमताओं और कौशल प्राप्त करने की ओर ले जाती हैं।

प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम के कई व्यक्तिगत लाभ हैं :-

1. **कैरियर सक्षमताः-** प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम से कर्मचारी बहुत से लाभ प्राप्त करते हैं। कर्मचारी उनके कार्य द्वारा अपेक्षित सॉफ्ट और तकनीकी दक्षता प्राप्त करते हैं। कई वर्षों से ब्लू–कॉलर नौकरियों के लिए आवश्यकताएं स्थिर हैं और कई कंपनियों ने लर्निंग सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम सिस्टम की मांग के लिए एक संशोधन तैयार किया है। यह आवश्यकता श्रमिकों को अपने रोजगार को बनाए रखने के लिए अपने पेशे की क्षमताओं का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित कर रही है। इस स्थिति के कारण कई कर्मचारियों ने अपने संगठन के अंदर कार्य करने और विकसित होने के लिए पदोन्नत होने के अपने दृष्टिकोण को पुनःस्थापित किया है। हालांकि कर्मचारी अपने भविष्य के लिए 10 वर्षीय योजना बनाते थे और प्रौद्योगिकी एवं सूचना के परिवर्तन के अनुसार प्रत्येक 2 वर्षों में सतत रूप से अपनी योजनाओं में परिवर्तन करते थे।

2. **कर्मचारी संतुष्टिः-** यदि कर्मचारी को ऐसा लगने लगे कि संगठन उनका ध्यान नहीं रख रहा है तो उसकी अपनी कंपनी के लिए कोई भावना नहीं होगी। कंपनियां जो अपने कर्मचारियों पर खर्च करने को तैयार हैं, कर्मचारी उस कंपनी के कार्य को महत्वता देते हैं और यह निवेश अंततः संगठन के लिए लाभकारी सिद्ध होते हैं। जो कंपनियां अपने कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम उपलब्ध कराती हैं वे उच्च स्तर की कर्मचारी संतुष्टि और न्यूनतम कर्मचारी टर्नओवर प्राप्त करती हैं। प्रशिक्षण संगठन की विश्वसनीयता को बढ़ाता है क्योंकि कर्मचारी यह जानते हैं कि उनका संगठन उनके भविष्य के लिए निवेश कर रहा है।

3. **कर्मचारी प्रदर्शनः-** प्रशिक्षण कर्मचारियों के व्यवहार और उनके कार्य कौशल पर प्रभाव डालता है, जिसके परिणामस्वरूप कर्मचारी के प्रदर्शन में वृद्धि और रचनात्मक परिवर्तन होते हैं। प्रशिक्षण कर्मचारियों के प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। भारत में मैकेनिक्स से संबंधित एक गुणात्मक अध्ययन के दौरान उत्पन्न नौकरी, प्रशिक्षण, उत्तम नवीनता और निहित कौशल की ओर

अग्रसर होता है। कर्मचारियों के लिए एक प्रभावी तरीके से कार्य करने के लिए तकनीकी और व्यावसायिक कौशल अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम से संगठनात्मक लाभ

1. **विपणन वृद्धिः-** किसी भी संगठन के लिए बाजार में विलायक और प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए कर्मचारी विकास कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं। हालांकि संगठन के लिए अपने कर्मचारियों पर पैसा खर्च करना महंगा होता है परन्तु यह निवेश संगठन के लिए बाजार में जगह बनाने के लिए सकारात्मक हैं।
2. **संगठनात्मक प्रदर्शनः-** प्रशिक्षण को संगठनात्मक प्रभावकारिता में प्रमुख योगदान करने वाले कारक के रूप में परिभाषित किया गया है। इस क्षेत्र में अनुसंधान यह संस्तुति करता है कि प्रशिक्षण एवं विकास कायक्रमों में निवेश व्यक्ति के विकास और संगठनात्मक प्रभावकारिता का निर्माण करते इसके प्रभाव द्वारा उचित ठहराया जा सकता है।
3. **कर्मचारी प्रतिधारणः-** शोध के अनुसार कर्मचारी प्रतिधारण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और संगठन में कर्मचारी को प्रतिधारित रखने की कोई विशिष्ट विधि नहीं है।

अध्ययन का प्रस्तावित मॉडलः-

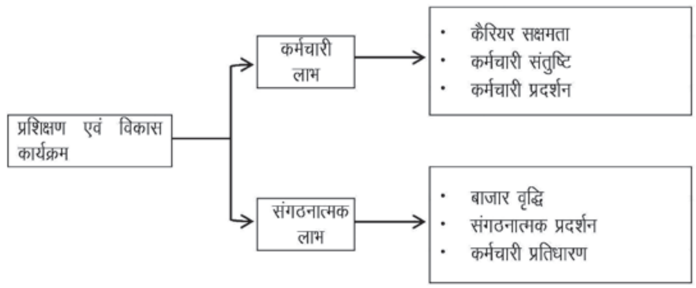

तथापि प्रशिक्षण व्यक्ति एवं संगठन के लिए महत्वपूर्ण लाभों को साकार करता है। साहित्य के वर्तमान आंकलन यह प्रस्तावित करते हैं कि ये लाभ व्यक्ति एवं संगठन निष्पादन के लिए पृथक हो सकते हैं। प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम के लाभों को समझने के लिए हम कर्मचारी विकास कार्यक्रम के विभिन्न स्तर और विभिन्न अनुशासनिक परिप्रेक्ष्य को क्रियान्वित किया है। सर्वाधिक मूल्यवान मानव संसाधन, विशेष रूप से जिनके पास संगठन के साथ अधिक अनुभव है, को बनाए रखने के लिए सहयोगी उपकरण के साथ एक संगठित और कुशल विकास कार्यक्रम सार्थक रूप से संगठन की सहायता करेगा। यदि संगठन सभी कर्मचारियों को उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहयोग करता है तो कर्मचारी एवं संगठन दोनों को दीर्घ अवधि लाभ प्राप्त हो सकते हैं। संगठन के लिए कर्मचारी प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम का समय–समय पर मूल्यांकन करना भी अति आवश्यक है।

भाषा प्रभाग

यूनिकोड: हिंदी के लिए एक वरदान

डॉ0 स्वर्णलता सिन्हा
अतिथि अध्यापक, गुरु घासी दास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
धर्मपत्नी डॉ0 विशेष श्रीवास्तव,
अधिकारी (राजभाषा), रसायनी यूनिट

अगर कोई भी सरकारी कार्यालय, सरकारी अधिकारी या कर्मचारी कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने की इच्छा रखे तो आसानी से अपने कंप्यूटर पर राजभाषा हिंदी एवं अपनी मातृभाषा में काम कर सकता है। इसके लिए भी हिंदी सॉफ्टवेयर को खरीदने की जरूरत ही नहीं है। इस सुविधा का उपयोग आप घर के कंप्यूटर पर भी कर सकते हैं।

यूनीकोड में सभी काम कंप्यूटर पर करने के संबंध में कई लोगों को यह जानकारी नहीं है कि कंप्यूटर में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएं इन–बिल्ट हैं यानी अब आपको अलग से हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा का कोई सॉफ्टवेयर खरीदने की जरूरत ही नहीं है। यही कारण है कि जानकारी के अभाव में हम अभी भी हिंदी सॉफ्टवेयर खरीदने में पैसा खर्च कर रहे हैं जबकि पूरे देश के हिंदी काम–काज में एकरूपता लाने के लिए इन–बिल्ट यूनिकोड का उपयोग अनिवार्य होना चाहिए।

अभी तक कंप्यूटर पर हिंदी में या भारतीय भाषाओं में काम करने के लिए किसी सॉफ्टवेयर की जरूरत अनिवार्य होती थी और उसके बाद भी हिंदी के फॉन्ट को लेकर कई समस्याएं होती थीं। लेकिन यूनीकोड के विकास के साथ ही अंग्रेजी के बराबर हिंदी भी ई–मेल और वैब पेजों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की भाषा बन गई है। आज इज़राइल, चीन, ब्रिटेन, अमेरिका और जर्मनी जैसे देशों के इंटरनेशनल पोर्टल भी इसी सुविधा के कारण हिंदी में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। अमेरिका में अंग्रेजी–हिंदी अनुवाद के लिए जहां translation-services-usa.com अच्छा व्यवसाय कर रही है तो hindibible.com पर हिंदी में बाइबल भी उपलब्ध है। न्यूजीलैंड में bhartdarshan.co.nz हिंदी पढ़ा रहा है। Conveythis.com निःशुल्क अनुवाद की सेवा उपलब्ध कराता है किंतु इसकी गुणवत्ता विश्वसनीय नहीं हैं। भुगतान के आधार पर translator-cafe-com की सेवाएं संतोषजनक हैं।

इससे पहले आस्की (ASCII) कोड़ प्रचलन में था। यह एक 7 बिट कोड़ है जो अंग्रेजी के अक्षरों और अंकों को मिला कर कुल 128 कैरेक्टर कंप्यूटर पर प्रदर्शित करने में सक्षम था, लेकिन समय के साथ–साथ इस कोड की प्रासंगिकता कम होती गई क्योंकि इसमें विश्व की दूसरी भाषाओं को जो वक्त के साथ कंप्यूटिंग दुनिया में शामिल हो रही थीं, उन्हें प्रदर्शित करने की क्षमता नहीं थी। बाद में यूनीकोड कंसोर्टियम ने 8, 16 और 32 बिट कोडिंग वाले (यू.टी.एफ. 8, यू.टी.एफ. 16 और यू.टी.एफ.32) सिस्टम शुरू किए, जिनमें हर कैरेक्टर को एक विशेष नंबर दिया जाता है। यह नंबर हर भाषा, हर ऑपरेटिंग सिस्टम और हर प्रोग्राम में स्थिर रहता है यानी इस कोड में बने किसी भी दस्तावेज को किसी भी प्लेटफॉर्म पर और किसी भी देश में खोल कर देखा जा सकता है, पढ़ा जा सकता है, प्रिंट किया जा सकता है और डेटा ट्रांसफर भी बिना किसी डेटा लॉस के किया जा सकता है। सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में इस मानक को बड़े आविष्कारों में गिना जाता है। एप्पल, ए.ची.पी., आई.बी.एम. माइक्रोसॉफ्ट, सैप, सनमाइक्रो सिस्टम और ओरेकल जैसी बड़ी कंपनियों ने तो यूनीकोड के शुरू होते ही इसे मान्यता प्रदान कर दी थी तथा एच.टी.एम.एल. से भी इसे तुरंत स्वीकृति मिल गई। बाद में विंडोज, मैकिंतोश और लिनेक्स ऑपरेटिंग सिस्टम ने भी इसे स्वीकार कर लिया है। यह हिंदी के अंतर्राष्ट्रीयकरण में एक लंबी छलांग है। फिलहाल यूनीकोड विकास की प्रक्रिया में है। पिछले साल ही इसने अपना 5.1 वर्ज़न भी शुरू किया है। आज जरूरत इस बात की है कि लिपि, फॉन्ट और की–बोर्ड मानकों को लेकर इसे उपयोग में आसान बनाया जाए, जिससे अंग्रेजी की तरह हिंदी की पोर्टेबल क्षमता भी और आगे बढ़ेगी।

इस संबंध में सचिव, भारत सरकार (राजभाषा विभाग) द्वारा सरकारी विभागों के लिए दिशा–निर्देश भी जारी किया गया है। इसमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि विंडो एक्स.पी. और विस्टा तथा उसके बाद के सभी कंप्यूटरों में हिंदी का यूनीकोड फॉण्ट 'मंगल' एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं के फॉण्ट इन–बिल्ट हैं, इसलिए अब हमें अलग से हिंदी का कोई

सॉफ्टवेयर खरीदने की आवश्यकता ही नहीं है।

हिंदी एवं अपनी मातृभाषा में इतनी सुविधा होने के बाद भी हम लोग इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। यदि अपने कार्यालय के या घर के कंप्यूटरों/लेपटॉप्स में यूनिकोड को सक्रिय कर दिया जाए तो बहुत ही आसानी से और सुचारू ढंग से हम हिंदी में और अपनी मातृभाषा में काम–काज कर सकते है। इसी सुविधा के माध्यम से हम हिंदी में ई–मेल, चौट आदि भी कर सकते हैं। इसीलिए अब हम सभी को यूनीकोड का प्रयोग शुरू कर देना चाहिए ताकि पूरी दुनिया के हिंदी काम–काज में एकरूपता लाई जा सके और एक कंप्यूटर से दूसरे में एक शहर से दूसरे शहर में एवं दुनिया के किसी भी कोने में हिंदी की फाइल खोली जा सके।

यदि आपके पास पुराना कोई भी सॉफ्टवेयर है तो उस सॉफ्टवेयर में बनी फाइलों को भी यूनीकोड में कन्वर्ट कर सकते हैं, पुरानी फाइल को कुछ भी नुकसान नहीं होगा। आपके कार्यालय में जो सॉफ्टवेयर उपलब्ध है उसमें आप काम करने में सक्षम हैं लेकिन सोचिए क्या आपके कार्यालय या घर का सॉफ्टवेयर यूनीकोड समर्थित है? क्या आप ओपन फोंट में काम कर रहे हैं? इन सब बातों पर विचार करें और भविष्य में आप पूरे विश्व में हिंदी में या अपनी मातृभाषा में काम करने के संबंध में एकरूपता लाने के लिए यूनीकोड का ही प्रयोग करें।

विंडोज एक्सपी में मंगल फॉन्ट को सक्रिय करने का विधि ।

1. सबसे पहले टास्क बार पर अंकित स्टार्ट बटन पर क्लिक करें, सेटिंग पर जाए फिर कंट्रोल पैनल पर एरो को रोक कर क्लिक करें।
2. अब आपकी स्क्रीन पर एक विंडो आएगा। इस विंडो के अन्य विकल्पों में से एक विकल्प Regional & Language Option हैं। इस विकल्प पर डबल क्लिक करें।
3. इस Regional & Language Option में नीचे दिए गए सब विंडो की तरह Regional Option Language एवं Advanced तीन उप–विकल्प है। आप Languages विकल्प पर करें।

स्टेप 4: आपके स्ंदहनंहम विकल्प का चयन करते ही विंडो के Supplemental Languages Support सेक्शन में दो विकल्प दिए गए हैं। इनमें से पहले विकल्प Install files for Complex Script and right to left Languages (including Thai) पर सही का निशान लगाकर उस पर क्लिक करें। यदि आपके कंप्यूटर में भारतीय भाषाओं से संबंधित फाइलें पहले से लोड नहीं है तो अब आपका कंप्यूटर आपसे Windows XP Professional की सी डी CD ROM Drive में Insert करने के लिए पूछेगा। सी डी ड्राइव में Windows XP Professional की सी डी डालते ही संबंधित आवश्यक फाइलों को कंप्यूटर स्वतः कॉपी कर लेगा। आवश्यक फाइलें लोड होने के बाद कंप्यूटर री–बूट के लिए पूछेगा, कृपया कंप्यूटर को री–बूट करें।

स्टेप 5: कंप्यूटर केरी–बूट हो जाने के उपरांत अब उपयुक्त प्रक्रिया को पुनः दोहराएं। कंट्रोल पैनल पर कर्सर को रख कर क्लिक करें।

स्टेप 6: Regional Languages Option विकल्प पर कर्सर रख कर डबल क्लिक करें।

स्टेप 7: Language विकल्प पर क्लिक करें।

स्टेप 8: Languag में विकल्प का चयन करने के पश्चात Details विकल्प पर क्लिक करें।

स्टेप 9: Details विकल्प का चयन करते ही Text Services and Input Language का विंडो खुलेगा जिसमें Setting & Advanced दो विकल्प होंगे। विंडो को Setting पर रहने दें और advance बटन पर क्लिक करें।

स्टेप 10: अब एक और छोटा विंडो खुलेगा। इस विंडो के Add Input Language की सूची में Hindi (हिन्दी) का चयन करें।

स्टेप 11: अब OK व Apply पर क्लिक करते हुए विंडो से बाहर Desktop पर आ जाएं। आप पाएंगे कि टास्क बार पर दाई ओर EN अंकित है। आप इस पर क्लिक करते हुए अथवा बाईं ओर का Alt दबाकर रखें और दाई ओर का Shift एक बार दबाएं। हिंदी अथवा अंग्रेजी का विकल्प चुन सकते हैं। जिन कंप्यूटरों में विस्टा ऑपरेटिंग सिस्टम है उनमें दोबारा सी.डी. डालने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

यदि आपने इंटरनेट से IME फाइल डाउनलोड की है तो हिंदी की बोर्ड में इसे शामिल करना होगा, यदि आपने पहले से इंडिक IME फाइल डाउनलोड नहीं की है तो डाउनलोड करने के लिए www.ildc.in या www.bhashaindia.com पर जाएं। आप अपनी इच्छानुसार अपनी पसंद का की बोर्ड चुन कर अपनी भाषा में काम कर सकते हैं और की–बोर्ड को डेस्कटॉप पर रख कर माउस की सहायता से क्लिक करके भी टाइप कर सकते हैं। आम तौर पर यूनीकोड सक्रिय होते ही इंस्क्रिप्ट की–बोर्ड आता है। जिस पर हिंदी में टाइप किया जा सकता है।

जिन व्यक्तियों ने अभी तक हिंदी टाइपिंग नहीं सीखी है वे फोनेटिक की–बोर्ड का भी प्रयोग कर सकते हैं किंतु इंक्रिप्ट की बोर्ड भी आसान ही है क्योंकि इसमें एक ओर सभी स्वर हैं और दूसरी ओर सभी व्यंजन तथा shift दबा कर अगले व्यंजन सरलता से टाइप किए जा सकते हैं।

कालजयी महाकवि तुलसीदास

डॉ0 सुनीता चौहान
शोध छात्रा, डी–लिट
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

हमारा देश के प्रातः स्मरणीय संत–शिरोमणि महाकवि गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' महाकाव्य विश्व साहित्य के किसी भी रत्न को इस प्रकार के सम्मान और भाव–सुमन की प्राप्ति हुई है। वास्तव में तुलसी और उनके मानस ने भारत के जन–जीवन का जो उपकार किया है, वह कभी विस्मृत किया ही नहीं जा सकता। रामचरितमानस का 'कुटिया से राजमहल' तक विद्यमान होना, जीवन के समान्य प्रसंगों में तुलसी की उक्तियों को उद्धत करना, आदर्शों के लिए तुलसी साहित्य से पात्रों के दृष्टान्त प्रस्तुत करना, यह सब तुलसी के प्रभावकारी व्यक्तित्व का प्रतिबिम्बन ही तो है। सामान्य भारतीय से लेकर धर्म गुरूओं, समाज सुधारकों, पंडितों, विद्वानों, काव्य–रसिकों आदि के द्वारा 'मानस' का आधार–ग्रहण तुलसी की बहुमुखी प्रतिभा और महान व्यक्तित्व का परिचायक है। इस रूप में भावुक भक्त, अधीत विद्वान, लोकहितचिन्तक, विशाल–हृदय संत, सरस कवि, सिद्ध साहित्यकार, समाज सुधारक, दार्शनिक और लोकनायक प्रमाणित होते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास के जीवन और काव्य की कवि की स्थायी प्रतिष्ठा का रहस्य है। तुलसी के जीवन में जो बीता उन्होंने जगबीती के साथ ऐसा मिलाया, अपने राग–विराग की तूलिका से उन्होंने अपने काव्य चित्र को ऐसे आकर्षक रंगों से सँवारा कि उनकी साहित्यक सिद्धि को आत्म–प्रचार की आवश्यकता ही न रही। कोई कवि जब अपनी कविता में आपबीती तथा जगबीती को अपृथक कर लेता है, तो

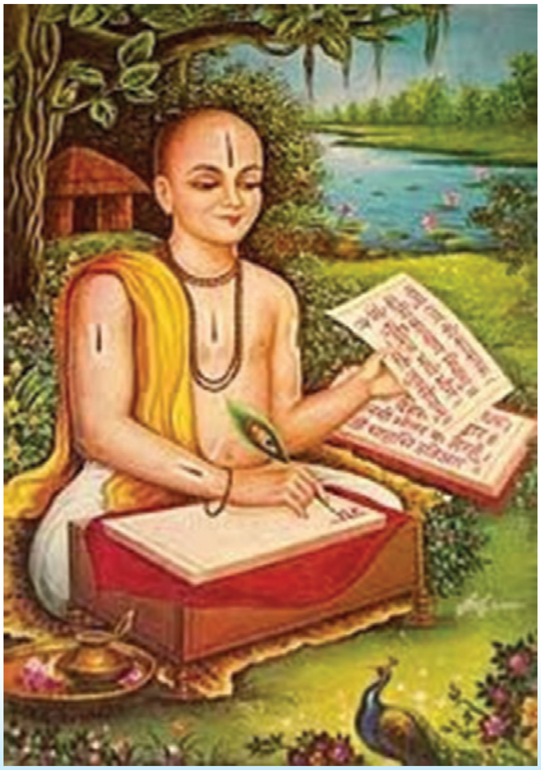

उस कवि कृतित्व न केवल शाश्वत अथवा कालजयी बन जाता है, प्रत्युत प्रत्येक युग उसे वत्सलतापूर्वक पुष्ट बनाकर अनागत की गोद में बैठा देता है। इस प्रकार ऐसे कवि की कविता हर युग की विभूति बनती है। तुलसी की काव्य–रचना के मूल्यांकन के लिए परिप्रेक्ष्य अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

तुलसीदास जी के जीवन की दो मुख्य घटनाओं को लेंगे। पहली घटना है अमंगलकारी नक्षत्र में उनका जन्म तथा किसी बड़े अनिष्ट की आशंका में नवजात शिशु तुलसी का माता–पिता द्वारा परित्याग और तब से एक अनाथ के रूप में तुलसी को अपने भरण–पोषण के लिए वन–वन, ग्राम– ग्राम, गली–गली भटकना पड़ा किन्तु ऐसी विषमता के बीच भी उन्होंने अपने वांछित को नहीं भुलाया, पाठशाला में बिना प्रवेश लिए 'पुराणनिगमागम' के पाठ तैयार किए, किसी महाकवि द्वारा बिना प्रशिक्षित हुए काव्य–प्रणयन किया, आर्थिक साधनों के अभाव में भी कभी विचलित–चित नहीं हुए और न कभी ऐहिक जीवन से ऊबे। जीवन भरण के लिए जितना आवश्यक था उतने की योजना कर ही लेते थे और यदि कभी ऐसा न हो पाता था, तो उसे सहते थे, कहते नहीं थे। राम जीवन तुलसी को इसी कारण अधिक प्रिय लगा कि उनके माता–पिता ने भी 14 वर्ष के लिए उनका परित्याग कर दिया था और वे भी अपने मनोवांछित की सिद्धि के लिए वन–वन भटके, घोर अभावों की विषमता में भी साधन जुटाए समस्याओं से जूझते रहे, किन्तु समाधान खोजकर ही माने। राम 'मही को निश्चरहीन करौं' व व्रत लेकर, उनसे वैर–शोधन के कारणों की शोध कर रहे थे और तुलसी अपनी चातक–निष्ठा से

राम–व्रत लिए, उन्ही का भरोसा, उन्हीं का बल तथा उन्हीं का विश्वास अपना साध्य मानते थे। राम की शरीर–सत्ता का त्रेता में ही अंत हो चुका था किन्तु उनकी भाव–सत्ता का पुनरुद्धार कर तुलसी ने प्रत्येक आगत–अनागत युग को समस्याओं के निरसन के लिए एक–एक राम दिया। 'तब तक घरि मैं मनुज सरीरा' में इसी तथ्य की पुष्टि होती है।

तुलसी के जीवन की दूसरी मुख्य घटना थी उनका अकाल दाम्पत्य–भंग। परिस्थितियों की प्रकृति कुछ भी रही हो–राम को भी विवाहोपरान्त अपनी निष्ठावती पत्नी सीता से वियुक्त होना पड़ा तथा वन से लौटने पर भी लोकमत प्रबलतावश सीता से सदा के लिए अलग होना पड़ा। तुलसी के जीवन की ये दोनों घटनाएं ही राम को अपना आराध्य तथा काव्य का विषय बनाने में प्रेरक रही होंगी।

तुलसी के काव्य की व्याख्याओं, मीमांसाओं तथा समीक्षाओं की शक्तियां बन चुकी हैं किन्तु मेरे विचार से उनमें दृष्टियों की एक अपरिवर्तित रूढ़ परम्परा ही प्राप्त होती है। भारत में जन्म लेने वाले किन्तु विश्व का महान कवि बनने का सामर्थ्य रखने वाले कवि के मन्तव्यों को यदि भारतीयता के नाम पर चलने वाली सड़ी–गली रूढियों में घेरकर गिरा देने की चेष्टा की गई, यदि उनकी कविता को संकीर्णताओं की तृप्ति का माध्यम बनाने का ही प्रत्यन चलता रहा, अतीत–दृप्त मनोवृत्तियों की छाया में तुलसी को भारत का फिर उत्तर प्रदेश का फिर बांदा का और फिर राजापुर या सोरों का कवि सिद्ध करने की योजना बनती रही, यदि उन्हें भारतीय वाड्मय का फिर राष्ट्रभाषा हिंदी का फिर अवधी का फिर पूर्वी अवधी का काव्य–प्रणेता प्रमाणित करने का अनुरोध भटकता रहा, यदि उन्हें आर्य धर्म का फिर हिन्दू धर्म का फिर सनातन धर्म का प्रचारक कवि प्रतिपादित करने की साधना चलती रही तो निश्चय ही हम कवि के काव्य की भद्दी मेंड़बन्दी कर देंगे। जिसकी कविता विश्व का कुतूहल बनाने की शक्ति रखती है, जिसके काव्य का अनुशीलन ईश्वरवादी देश इंग्लैंड और अनीश्वरवादी देश रूस में आज पांच सौ वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ है। कविता किसी एक धर्म, सम्प्रदाय, भाषा देश और काल की नहीं होती, प्रत्येक युग को उसमें अपनी तस्वीर मिलती है। काव्य प्रत्येक युग की चेतना को नए स्पन्दनों से विभूषित करता है। जिस कवि के काव्य में इस शक्ति अथवा इस प्रभाव की कमी होती है, उसकी कविता उतनी ही काल–देश सीमित होकर अकाल समाप्त हो जाती है।

तुलसी के अध्येताओं का पुनीत कर्तव्य है कि वे 19वीं शती के कवि तुलसी में उस प्रच्छन्न मेधा, अनाचार द्रोही विद्रोह की अप्रकट युयुत्सा का अन्वेषण करने का यत्न करें जो प्रत्येक युग की विभूति–रचना का सम्बल बनती है, अपनी–अपनी रूचियों, मान्यताओं एवं विश्वासों के घेरे में सीमित करने की अपेक्षा कवि के विश्वासों एवं मान्यताओं में स्वयं को घेरने में अधिक लाभ–हर जन का युग का। 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी की ताड़ना' में, पूजिय विप्र जो वेद विहीना की प्रतिपत्ति में अथवा 'अंध वधिर क्रोधी अति दीना' जड़ बुद्धि में तुलसी को खोजनो की अपेक्षा राम के निषाद–प्रेम में, शबरी के प्रति उनकी भाव–विभोरता में तथा गिध–जटायु के प्रति उनकी करूणा तल्लीनता में तुलसी की वास्तवकि निष्ठा की तलाश अधिक समीचीन तथा मानवी दृष्टि की पीयूष–तृप्ति दायनि सिद्ध होगी। प्रत्येक कवि की निष्ठा की मूल स्फुरणा ही वरेण्य है–मूल स्फुरणा के निरभ्र स्फटिक की पार्श्ववर्ती भूमियों की पंकिलता को साध्य नहीं बना लेना चाहिए।

एक बात और कविता जिस मंगल की स्थापना रसात्मक पद्धति में करती हैं, उसी की स्थापना धर्मग्रंथ रूखी–सूखी प्रणाली में करते हैं। अतः जीवन को मंगलमय बनाने का श्रेय प्राप्त करने में काव्य–कृति किसी धर्म की मुहताज नहीं है। यद्यपि काव्य तथा धर्म–दोनों एक दूसरे को प्रेरित तथा प्रभावित करते हैं, किन्तु दोनों की निरपेक्ष सत्ता है। हम प्रायः यह देखते हैं कि तथाकथित धार्मिकों ने तुलसी के रामचरितमानस जैसे महाकाव्य को धर्मग्रंथ बनाकर उसके काव्य–चारुत्व पर ही आक्रमण कर दिया है, वर्णानामर्थ संघाना रसानां छन्दसामपि, मंगलानां च कर्त्तरौ वाणी और विनायक के प्रति तुलसी की अर्चना पर पर्दा डालने की असफल चेष्टा की है। वर्णसंघ तथा अर्थसंघ से निष्पन्न एवं रससंघ से सम्पन्न तुलसी के रमणीय काव्य को उपदेशों के काशन्स में परेड करने वाले धर्म–रज्जु से बाँधना तुलसी के कृतित्व के साथ घोर अन्याय है। कथावाचकों को, व्याख्याकारों को, समीक्षकों को अपनी रूढ़ि–निबद्ध दृष्टि से मुक्त होकर तुलसी की कृतियों में काव्य के गहरे संवेदनों तथा उच्च कल्पनाओं से विरचित नित–नूतन भाव सम्भार तथा रसात्मक सार की उपलब्धि का उद्योग करना चाहिए।

राष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी का बहुआयामी स्वरूप

डॉ0 पुष्पा रानी (डी.लिट)
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

भाषा किसी देश की संस्कृति का अक्षय कोष है। भाषा परंपरा, संस्कृति और आधुनिकता के पथपर गतिमान होकर परिवर्तनशील होती है। वस्तुतः भाषा समाज और परंपरा को जोड़े रखने का प्रेम बंधन भी है। यह भटकाव में आस्था की अक्षय ज्योतिर्मय मार्गदर्शन स्तम्भ भी है। सौम्य और सृजनात्मकता का अपराजेय संकल्प हिन्दी की बुनियादी प्रकृति है। हिन्दी भाषा को भाषा वैज्ञानिकों ने स्थूल रूप से सामान्य ओर प्रयोजनों में विभक्त किया है। सुखद सूचना है कि हिन्दी की इस नितांत ताजा टटकी और भाषा संरचना स्वरूप को विश्व स्तर पर सम्मान लिया है।

हिन्दी के लिए चीन अब हिमालय पार नहीं रहा, पाकिस्तान में इसने अपने होने का परचम लहरा दिया है। समुद्र पर जाकर अब यह विश्व के अनेकानेक महाद्वीपों में इंटरनेट, ई–मेल, कंप्यूटर के माध्यम से अपने सामर्थ्य का एहसास कराकर अब विश्व पर हिन्दी पूरी तरह स्थापित हो चुकी है अर्थात् विश्व धरातल पर ज्ञान व्यवहार के नए–नए खुलते क्षितिजों से जन्मी अपेक्षओं के संदर्भ में, आधुनिक हिन्दी भाषा में अर्थवता का एहसास कराया है। हिन्दी भाषा की उपादेयता इस बात से प्रमाणित होती है कि यह हमारे बहुसंख्यक लोगों की भाषा है। साहित्यकारों और कवियों की भाषा है। लोकप्रिय फिल्मों की भाषा है, इसमें व्यापार और विज्ञान की अद्यतन जानकारियाँ हैं। यह वोट मांगने की इकलौती सशक्त भाषा है।

गुलामी के बाद पश्चिम के समृद्ध समाज से कदम से कदम मिलाने की चाह में अंग्रेजी को अपनाया, अंग्रेजीयत को ओढ़ा लेकिन अंग्रेजी से आत्मगौरव और लोगों को प्यार का अनुभव हुआ। आज दिखावा और आत्मगौरव के बीच द्वन्द्व है और इन सबके मध्य हिन्दी हमारी अस्मिता ओर आत्मगौरव की भाषा है।

विज्ञान के नियम बताते हैं कि जो उपयोगी नहीं वह बचेगा नहीं ओर उसका बचे रहना भी जरूरी नहीं है। लेकिन भाषा के संबंध में श्याम–श्वेत ढंग से सोचा भी नहीं जा सकता क्योंकि भाषाएँ कोई सहज उत्पादन नहीं हैं, जिनकी सुनिश्चित उपयोगिता या अनुपयोगिता निर्धारित की जा सके। भाषाएँ वह संपत्ति हैं, जो उसी तरह महत्त्वपूर्ण हैं जैसे पर्यावरण के लिए गैर जरूरी समझी जाने वाली वनस्पतियाँ जैव विविधता का स्रोत होती है। जिस तरह मैंग्रोन समुद्री काई को कुछ दशक पहले तक फिजूल समझा जाता था और अमेजन घाटी से मैंग्रोन वनों को तहस–नहस किए जाने पर कोई आपत्ति नहीं थी। बाद में पता चला कि धरती पर ग्लोबल वार्मिंग से बचाने का यह प्राकृतिक स्रोत है, तब कहीं जाकर प्रतिष्ठा स्थापित हुई।

इसी तरह भाषाएँ भी महत्वपूर्ण हैं, भाषाओं का बने रहना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि वह अभिव्यक्ति को सौ फीसदी तक परिपूर्ण और सहज बनाती हैं। ये नहीं होंगी तो वैभशाली संपर्क भाषाएँ कच्चा कहाँ से हासिल करेंगी? यानी उन्हें नए शब्द और नई अभिव्यक्ति कहाँ से मिलेगी?

हिन्दी समाज का व्याकरण बदल रहा है। भाषा का ही व्याकरण नहीं होता अपितु व्याकरण से हमारा तात्पर्य सामाजिक इकाइयों और संरचनाओं से है, जो स्थिर नहीं रहती समयानुसार बदलती रहती हैं। यह सच है कि कंप्यूटर आदि से संबंध ढेरों नए शब्द शब्दावली में शामिल हुए हैं, परन्तु अब हम अपने दादा–परदादा की तरह बहुत–सी चीजों के नाम नहीं जानते। यूनेस्को की रिर्पोट बताती है कि हर वर्ष संसार से अनेक जैविक प्रजातियों की तरह बीसियों भाषाएँ भी सदा के लिए लुप्त होती जा रही हैं, अन्ततः कुछ बड़ी सक्षम भाषाएँ ही शायद बची रह जायें और जो योग्यत्तम सिद्ध होगा वही टिकेगा।

यह भी सच है कि हिन्दी के उद्‌भव और विकास का समूचा कालखंड उसके लिए निहायत प्रतिकूल रहा है। स्वाधीनता से पूर्ण तब तक वह प्रायः राज्याश्रय विहीन ही रही। हिन्दी मूलतः भारतीय जन की जन्म प्रतिरोधक की ही भाषा रही है। लेकिन वर्तमान सांस्कृतिक भूमंडलीकरण ने हिन्दी के समक्ष अत्यन्त गंभीर तथा अभूतपूर्व चुनौती प्रस्तुत की है। स्वतंत्रता से पूर्व यह भी राजभाषा या राज्याश्रय प्राप्त भाषा नहीं थी, पर यह तो जनप्रतिरोध की भाषा, जन आकांक्षा का खुला मंच और इस महादेश के संश्लिष्ट, सामाजिक, संस्कृति की सशक्त पहचान

बनकर जन भाषा बनी। प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दी की उपस्थिति उसकी विलक्षण क्षतमा का परिचय है।

भौतिक शास्त्र का नियम है कि किसी पदार्थ पर जितना अधिक दबाव डाला जाता है, वह उतना ही ऊपर उठकर आता है। न्यूटन का यह नियम निश्चय ही आज हिन्दी भाषा पर लागू हो रहा है। हिन्दी विश्व पटल पर अपनी महत्ती अस्तित्व को ऊजागर कर रही है। 20वीं सदी के अंतिम वर्षों में सूचना क्रांति के तहत संपूर्ण विश्व में एकीकरण हुआ फलस्वरूप हिन्दी ज्ञान विज्ञान अनुसंधान वाणिज्य व्यापार संचार प्रौद्योगिकी की सक्षम भाषा के रूप में विकसित हो जाती है।

हिन्दी का सामना आज नए प्रश्नों में स्वरूपों से हो रहा है। हिन्दी ने पिछले कुछ दशकों में असंख्य यात्राएँ की है, सहसा यह विश्वास नहीं होता कि वही भाषा है, जिसके उन्नयन, संवर्धन और परिष्कार के लिए रचनाकारों, संपादकों व्याकरणों व समाज सुधारकों का एक बड़ा समूह न जाने कितना श्रम करता रहा है। आज वही ज्ञान–विज्ञान और संप्रेषण की भाषा है।

हिन्दी के प्रयोजन मूलक अभिनव प्रतिरूप ने भाषा की सत्ता को सर्वथा नए–नए क्षेत्रों से संयुक्त कर दिया है। हिन्दी जनभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के सपनों को पार करके विश्वभाषा बनने को अग्रसर है। हिन्दी की नई पीढ़ी सक्षम है। उसका फलक बढ़ा है, उसे इंटरनेट जैसा सशक्त माध्यम मिल गया है। जिसने दुनिया को मुट्ठी में समेट लिया है। हिन्दी की ताकत बढ़ रही है। हिन्दी को विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, कार्यालयों, संसद तथा अकादमियों में प्रतिष्ठा मिली है। तमाम पुरस्कार, योजनाएं संवर्द्धन और प्रेरणा के शासकीय प्रयास शुरू हुए हैं। साहित्य सृजन से हटकर भाषा ज्ञान के तमाम अनुशासनों पर हिन्दी में काम शुरू हुआ है। रक्षा अनुवांशिकी चिकित्सा, जीव विज्ञान, भौतिकी आदि क्षेत्रों में हिन्दी की उपस्थिति दर्ज हुई है।

प्रत्येक ज्ञान और सूचना को अभिव्यक्ति देने में हिन्दी का समार्थ्य लगातार बढ़ रहा है। हिन्दी सत्ता प्रतिष्ठानों के सहारे नहीं फैली बल्कि उसका विस्तार उसकी शक्ति स्वयं उसमें निहित है। अंग्रेजी वर्षों से शासक वर्ग तथा प्रभु वर्गों की भाषा रही है। उसे एक दिन में सिंहासन से नहीं हटाया जा सकता। हिन्दी का हस्तक्षेप सर्वथा नया है। इसलिए लंबी और सुदीर्घ तैयारी के साथ विश्वभाषा के सिंहासन पर प्रतिष्ठित होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

हिन्दी को 21वीं सदी की भाषा बनाना है, आने वाले समय की चुनौतियों के मद्देनजर उसे ज्ञान सूचनाओं और अनुसंधान की भाषा के रूप में स्वयं को सक्षम सिद्ध करना होगा।

हिन्दी के पुरस्कर्ताओं, अध्येताओं, आचार्यों और हिन्दी भाषा प्रयोक्ता समाज के लिए अद्यतन चिन्ता का विषय है कि अथक प्रयासों के बावजूद हिन्दी की अपेक्षित प्रगति नहीं हो पाई है। राष्ट्रभाषा के रूप में उत्तरोत्तर समर्थन और अंतर्राष्ट्रीय विस्तार के बावजूद भारत में हिन्दी यथोचित भूमिका उपेक्षित पैमाने पर क्यों नहीं निभा पाई?

वस्तुतः हिन्दी भाषा को आधुनिक युग में व्यवहार सक्षम बनाने के लिए अनेक आयामों को विकसित करना पड़ा है तथापि लोगों में अंग्रेजी के प्रति मोह का बढ़ना वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति में अवरोध उच्च स्तरों पर हिन्दी संबंधी निर्णयों के प्रति अनास्था व उपेक्षा व्यापक विमर्श का विषय है।

सूचना प्रौद्योगिक के बदलते परिवेश में हिन्दी भाषा ने अपना स्थान धीरे–धीरे प्राप्त कर लिया है। आज हमारी मानसिकता में बदलाव लाने की जरूरत है। आधुनिकीकरण के दौर में भाषा भी अपना स्थान ग्रहण कर लेती है। हिन्दी की उपादेयता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगा सकता, लेकिन संकुचित स्वार्थ के कारण भारतीय भाषाओं को नकारना हमारी मानसिक गुलामी की निशानी है।

आज भले हम चीन, जापान, रूस जर्मनी, अरबी आदि अंग्रेजी तर देशों में अपनी भाषा का विकास किया हो लेकिन भारत में आज राजभाषा, संपर्क भाषा, लोकभाषा को विकसित नहीं कर पाए तो, यह हमारी पराजय होगी।

विश्व के 95 देशों में हिन्दी पढ़ी जाती है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में भाषाएँ राजभाषा के रूप में स्वीकृत हैं:– अंग्रेजी, चीनी, फ्रांसीसी, रूसी, स्पेनिश, अरबी 7वीं भाषा के रूप में आज न कल हिन्दी स्वीकृत होगी, इसमें दो राय नहीं है।

संस्कृति को इस हार के रूप में,
जोड़ सके वो कड़ी है ये हिन्दी ।
ले के सहारा चले अन्हरा उस,
अंधे के हाथ छड़ी है ये हिन्दी
जीवन दान मिले जिससे विष
मार सके वो जड़ी है ये हिन्दी
प्यार से भारत माता कहें कि
सुनो हमसे भी बड़ी है ये हिन्दी।

सतर्कता प्रभाग

खरीद में सतर्कता

मनोज कुमार चौधरी
उप प्रबन्धक (सतर्कता), निगमित कार्यालय

निवारक सतर्कता के संबंध में

भ्रष्टाचार को समाप्त करने/कम करने, पारदर्शिता को बढ़ावा देने और व्यवसाय में सुगमता लाने के लिए प्रणाली एवं प्रक्रियाओं में सुधार के उपायों को अपनाना ही निवारक सतर्कता है। सतर्कता को सावधानी और सजगता के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस प्रकार, सतर्कता प्रशासन में प्रायः निवारक और दंडकारी भ्रष्टाचार रोधी उपायों को अपनाने और प्रणाली का प्रभावी रूप से कार्य करना सुनिश्चित करने के लिए एक निरीक्षण तंत्र सम्मिलित होता है।

जैसा कि संथानम समिति की रिपोर्ट (1964) में भी उल्लेख किया गया है, "भ्रष्टाचार को तब तक समाप्त या पर्याप्त रूप से कम नहीं किया जा सकता है जब तक निवारक उपायों को सतत और प्रभावी रूप से नियोजित एवं क्रियान्वित नहीं किया जाता है। निवारक कार्रवाई में प्रशासनिक, विधिक, सामाजिक, आर्थिक और इस संबंध में शिक्षित करने वाले उपायों को शामिल करना चाहिए।"

भारत में खरीद के अवसरों की बढ़ती मात्रा, सरकारी/सार्वजनिक क्षेत्र की परियोजनाओं के पैमाने और परिमाण के साथ, स्थानीय और विदेशी दोनों कंपनियों के लिए जबरदस्त आर्थिक क्षमता रखती है। भारत में खरीद के अवसरों में हालिया तेजी के लिए विभिन्न सकारात्मक उपायों और पहलों को श्रेय दिया जा सकता है। मौजूदा बुनियादी ढांचे, उपकरणों के आधुनिकीकरण की दिशा में सरकार का जोर और इसके परिणामस्वरूप खरीद के कई अवसर भी उभर कर सामने आए हैं, जैसे कि 'डिजिटल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी नई पहलें की गई हैं, जो बेहतर भौतिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और स्थानीय डिजाइन की दिशा में सक्षम हैं।

सार्वजनिक खरीद व्यवस्था में अतिव्यापी प्रशासनिक नियमों और दिशा–निर्देशों, क्षेत्र–विशिष्ट और उद्यम–विशिष्ट मैनुअल और राज्य–विशिष्ट कानून का एक ढांचा शामिल है। खरीद ढांचे के मूल में सामान्य वित्तीय नियम ('जी.एफ.आर.') निहित है, जिसे अंतिम बार 2017 में संशोधित किया गया था। जी.एफ.आर. में सरकारी खरीद के लिए वित्तीय प्रबंधन और प्रक्रियाओं पर व्यापक प्रशासनिक नियम और निर्देश शामिल हैं। सभी सरकारी खरीद के लिए जी.एफ.आर. में उल्लिखित सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, जिसमें वस्तुओं और सेवाओं की खरीद और अनुबंध प्रबंधन पर विशिष्ट नियम शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, सरकारी विभागों के लिए, माल की खरीद के लिए नियमावली, 2017 में माल की खरीद के लिए दिशानिर्देश शामिल हैं, और वित्तीय शक्तियों का प्रतिनिधि मंडल नियम, विभिन्न मंत्रालयों और अधीनस्थ प्राधिकरणों को सरकार की वित्तीय शक्तियों को सौंपता है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और स्वायत्त संस्थाओं में संगठनों के लिए, खरीद नियमावली को नियंत्रित करने के लिए आंतरिक रूप से बनाया जाता है और सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित किया जाता है। ये नियमावली समय–समय पर नियंत्रक मंत्रालयों द्वारा जारी दिशा–निर्देशों पर आधारित है।

सार्वजनिक हित में माल की खरीद की वित्तीय शक्तियों के साथ प्रत्यायोजित सभी प्राधिकरण दक्षता, मितव्ययिता और पारदर्शिता, आपूर्तिकर्ताओं के निष्पक्ष और न्यायसंगत व्यवहार और सार्वजनिक खरीद में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार होते हैं।

प्रणाली की जांच (अनुपालन के लिए) की जाती है और अधिकारियों द्वारा नियमों के साथ आगे त्वरित किया जाता है:–

(क) केंद्रीय सतर्कता आयोग ने सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता और निष्पक्षता बढ़ाने के लिए काम किया;

(ख) भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग जो प्रतिस्पर्धा–विरोधी तत्वों की जाँच करता है; और

(ग) केंद्रीय जांच ब्यूरो खरीद प्रक्रिया में आपराधिक गतिविधियों जैसे कि प्रोबिटी इश्यू की जांच और अभियोजन के लिए लगा हुआ है।

प्रक्रिया अवलोकनः

आवश्यकताओं का आंकलन → बोली आमंत्रण → बोली मूल्यांकन → अनुबंध निष्पादन

आवश्यकताओं का आंकलनः

संगठनों को खरीद के उद्देश्यों और जरूरतों को निर्धारित करना चाहिए और आवश्यकताओं का विस्तृत स्पष्ट दायरा होना चाहिए। उन्हें बाजार पर भी शोध करना चाहिए और क्षमताओं और बाधाओं को समझने के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त करनी चाहिए। ऐसा करते समय, संगठनों को भी ईमानदार व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए और पारदर्शिता आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। संगठनों के लिए सही उत्पाद/सेवाएं महत्वपूर्ण हैं। विनिर्देशों को निर्धारित करने में सहायता के लिए जहां संभव हो मानकों का उपयोग एवं वस्तुओं या सेवाओं का चयन भी किया जाना चाहिए। खरीद के मूल्य का अनुमान लगाया जाना चाहिए और निर्धारित नियमों का पालन किया जाना चाहिए। इसके बाद, निविदा का तरीका निर्धारित किया जाना चाहिए। एक खरीद प्रक्रिया में, यह उत्पाद/सेवा और प्रचलित पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर करता है, चाहे वे खुली निविदाएं, सीमित निविदाएं या कोई अन्य प्रकार हों। क्रय इकाई को यह भी निर्धारित करना चाहिए कि क्या खरीद में एकल बोली या दोहरी बोली प्रणाली का उपयोग किया जाएगा।

बोली आमंत्रणः

जब आवश्यकता मूल्यांकन चरण के विभिन्न पहलुओं को पूरा कर लिया जाए और सक्षम प्राधिकारी द्वारा विधिवत अनुमोदित कर दिया जाए, तो प्रक्रिया अगले चरण में चली जाती है अर्थात जिसमें बोलियां आमंत्रित की जाती हैं। इस चरण में बोली जमा करने की समय सीमा के साथ निविदा आमंत्रित की जाती है। इस समय के दौरान, संभावित बोलीदाता परियोजना और प्रस्तावित अनुबंध का आंकलन करते हैं और अपनी बोलियां तैयार करते हैं। खरीद प्राधिकारी आमतौर पर मूल्यांकन की शर्तों, कर्मियों और शासन तंत्र को परिभाषित करके मूल्यांकन चरण के लिए प्रारंभिक कार्य करेगा। निविदा आमंत्रण जारी होने के पश्चात् एक बोलीदाता सम्मेलन किया जा सकता है, जिसमें खरीद प्राधिकारी संभावित बोलीदाताओं को परियोजना की प्रमुख विशेषताएं प्रस्तुत करता है, और बोलीदाताओं द्वारा सभी प्रश्नों का उपयुक्त उत्तर दिया जाता है। प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए इन गतिविधियों को खरीद टीम द्वारा सावधानीपूर्वक प्रबंधित किया जाना चाहिए।

बोली मूल्यांकनः

बोली मूल्यांकन किसी संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक वस्तुओं, कार्यों और सेवाओं को प्राप्त करने के प्रयास में सर्वोत्तम प्रस्ताव का चयन करने के लिए बोलियों की जांच और तुलना करने की संगठित प्रक्रिया है। बोली मूल्यांकन के परिणामस्वरूप अनुशंसित सर्वोत्तम प्रस्ताव को विजेता बोली के रूप में संदर्भित किया जाता है। बोली मूल्यांकन प्रक्रिया को चार बुनियादी चरणों में विभाजित किया जा सकता है जिनमें (1) औपचारिक योग्यता आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया के लिए प्रारंभिक परीक्षा, (2) तकनीकी आवश्यकताओं के अनुपालन के लिए मूल्यांकन, (3) मूल्य/वित्तीय मूल्यांकन और (4) योग्यता के बाद/उचित परिश्रम शामिल हैं। मौजूदा नियमों और विनियमों के अनुसार, जहां भी लागू हो, चर्चा आयोजित की जा सकती है।

अनुबंध निष्पादनः

अनुबंध निष्पादन अनुबंधों के प्रबंधन की प्रक्रिया है जो ग्राहकों, विक्रेताओं या यहां तक कि भागीदारों के साथ कार्य संबंध बनाने के कानूनी दस्तावेज़ के एक भाग के रूप में बनाए जाते हैं। यह चरण खरीद आदेश/अनुबंध जारी करने और स्वीकृति के साथ आरंभ होता है। इसके बाद, यह अनुबंध के प्रबंधन को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने, निष्पादित करने और विश्लेषण करने की प्रक्रिया है। इसमें बैंक गारंटी का प्रबंधन, भुगतान, वारंटी, परिसमाप्त नुकसान का आंकलन/काम के रुकने आदि जैसे पहलू शामिल हैं।

प्रमुख पहलु

व्यवस्था में प्रतिस्पर्धा, निष्पक्षता और मनमानी को खत्म करने के लिए पारदर्शी तरीके से सार्वजनिक खरीद की जानी चाहिए। इससे संभावित निविदाकर्ता आत्मविश्वास के साथ प्रतिस्पर्धी निविदाएं तैयार करने में सक्षम होंगे। इस प्रकार,

पैसे के लिए सर्वोत्तम मूल्य सुरक्षित किए जा सकते हैं और इसे प्राप्त करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय निम्नलिखित हैं:–

(क) निविदा दस्तावेज़ का पाठ उपयोगकर्ता के अनुकूल, स्व–निहित, व्यापक, स्पष्ट और खरीद के उद्देश्य के लिए प्रासंगिक होना चाहिए। उद्योग में आम बोलचाल में प्रयुक्त शब्दावली के प्रयोग को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(ख) आवश्यक वस्तुओं के विनिर्देशों को इस तरह से पर्याप्त विवरण देते हुए तैयार किया जाना चाहिए कि यह संभावित निविदाकारों को रोकने या खरीद की लागत में वृद्धि करने के लिए न तो बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक हों और न ही उप–मानक आपूर्ति के लिए गुंजाइश छोड़ने के लिए बहुत स्केच हों। विनिर्देशों को उपयोगकर्ता विभाग की अपेक्षित आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। मानक विनिर्देशों का उपयोग करने के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए, जो उद्योग के लिए व्यापक रूप से ज्ञात हैं।

(ग) निविदा दस्तावेज़ में निविदाकारों द्वारा पूरी की जाने वाली पात्रता मानदंड जैसेः– न्यूनतम स्तर का अनुभव, पिछला प्रदर्शन, तकनीकी क्षमता, विनिर्माण सुविधाएं, वित्तीय स्थिति, स्वामित्व या कोई कानूनी प्रतिबंध आदि का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिए।

(घ) निविदा के लिए योग्य व्यक्ति पर प्रतिबंध मौजूदा नीतियों के अनुरूप होना चाहिए और विवेकपूर्ण तरीके से चुना जाना चाहिए ताकि संभावित निविदाकारों के बीच प्रतिस्पर्धा को बाधित न किया जा सके।

(ङ) निविदाएं तैयार करने और जमा करने की प्रक्रिया; निविदाएं जमा करने की समय सीमा; निविदाओं के सार्वजनिक उद्घाटन की तिथि, समय और स्थान; बयाना राशि और प्रदर्शन सुरक्षा की आवश्यकता; निविदाओं की जवाबदेही निर्धारित करने के लिए मानदंड; निविदाओं का मूल्यांकन और रैंकिंग और निविदा की पूर्ण या आंशिक स्वीकृति के लिए मानदंड और अनुबंध के निष्कर्ष को स्पष्ट शर्तों में निविदा पूछताछ में शामिल किया जाना चाहिए।

(च) निविदाओं का मूल्यांकन निविदा दस्तावेज़ में पहले से शामिल मानदंडों के अनुसार किया जाना चाहिए, जिसके आधार पर निविदाएं प्राप्त हुई हैं। कोई भी नई शर्त, जिसे निविदा दस्तावेज़ में शामिल नहीं किया गया था, को निविदाओं का मूल्यांकन करते समय ध्यान में नहीं रखा जाना चाहिए।

(छ) निविदाकारों को अपनी निविदाएं तैयार करने और जमा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

(ज) निविदा दस्तावेज़ में उपयुक्त प्रावधान रखे जाने चाहिएं जिससे निविदाकारों को निविदा शर्तों, निविदा प्रक्रिया, और/या इसकी निविदा को अस्वीकार करने और परिणामी अनुबंध से उत्पन्न होने वाले विवादों, यदि कोई हो, पर प्रश्न करने का उचित अवसर मिल सके।

(झ) निविदा दस्तावेज़ में यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि निविदाकारों को निविदा की वैधता की तिथि तक निविदा प्राप्त करने की समय सीमा समाप्त होने के पश्चात् अपनी निविदाओं को बदलने या संशोधित करने की अनुमति नहीं है और यदि वे ऐसा करते हैं, तो उनकी बयाना राशि को ज़ब्त कर लिया जाएगा।

(ञ) सफल निविदाकार का नाम जिसे आपूर्ति अनुबंध प्रदान किया गया है, सामान्य जनता की जानकारी के लिए खरीद किए जाने वाले संगठन द्वारा उचित रूप से अधिसूचित किया जाना चाहिए, जिसमें नोटिस बोर्ड, आवधिक बुलेटिन, वेबसाइट इत्यादि पर प्रदर्शन सम्मिलित है।

सत्यनिष्ठा समझौता –

सरकार/सरकारी विभागों/सरकारी कंपनियों आदि के द्वारा स्वयं को घूसखोरी, टकराव आदि से दूर रखने के लिए सहमत सभी बोलीकर्ताओं के बीच लिखित समझौता। इसे केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा क्रियान्वित किया जाता है और समझौते का उल्लंघन करने पर प्रतिबंध लगाया जाता है। निगरानी केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा नामित स्वतंत्र बाहरी प्रबोधक के माध्यम से की जाती है।

इंटीग्रिटी इंडेक्स –

(इसे शीघ्र ही आरम्भ किया जाएगा) इसके माध्यम से केन्द्रीय सतर्कत आयोग सार्वजनिक संगठनों की दीर्घकालिक दक्षता, लाभप्रदता और संधारणीयता के साथ सतर्कता के अनिवार्य संचालकों को जोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, वित्तीय संस्थानों, विभागों और मंत्रालयों की वार्षिक स्कोर/रैंकिंग प्रस्तुत करेगा। यह किसी संगठन के अंदर आंतरिक प्रक्रियाओं और नियंत्रणों की बेंच मार्किंग के साथ–साथ बाह्य हितधारकों के साथ संबंधों एवं उनकी अपेक्षाओं के प्रबंधन पर आधारित होगी।

निवारक सतर्कता

अक्षय आर. बुलबुले
सहायक प्रबंधक (सतर्कता), रसायनी यूनिट

सरकार की ओर से कई कदम उठाए जाने के बावजूद की स्थिति बनी हुई है जैसे कि सार्वजनिक धन का गलत ढंग से इस्तेमाल, धोखाधड़ी, सार्वजनिक खरीद, अधिकारों का गलत उपयोग इत्यादि। मौजूदा अध्ययन से यह बात सामने आई है कि भ्रष्टाचार की वजह से संपूर्ण भारत का सही विकास नहीं हो रहा है तथा असमानता, गरीबी आम जनता के पीड़ा ग्रस्त होने आतंकवाद और संगठित अपराध के खिलाफ लड़ाई की गति काफी धीमी है।

गत 60 वर्षों से कई कदम उठाए जाने के बावजूद हम भ्रष्टाचार का समूल निर्मूलन नहीं कर पा रहे है जब कि कानून में इसके कई प्रावधान उपलब्ध है। अब समय आ गया है कि दंडात्मक दृष्टिकोण को छोड़ कर अधिक समय निवारक और भागीदारी दृष्टिकोण अपनाया जाए।

यह देखा गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने की जिम्मेदारी सिर्फ कुछ भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियां ही ले रही है, जबकि यह जिम्मेदारी हर हिंदुस्तानी नागरिक तथा हर संगठन की है। भ्रष्टाचार के खिलाफ किसी भी रणनीति के सफल होने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध राजनीतिक नेताओं सहित सभी अभिनेताओं, सरकारी एजेंसियो, समाज, मीडिया, निजी क्षेत्र और आम आदमी का योगदान अनिवार्य है। भ्रष्टाचार का पता लगाने, इसके बारे में सूचित करने तथा आवश्यकतानुसार मुकदमा चलाने आदि के लिए सभी हितधारकों का सहयोग लिया जा सकता है।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (आर.टी.आई.)

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। इससे ज्यादा प्रोएक्टिव खुलासा संभव हुआ है। सार्वजनिक शिक्षा और जागरूकता बढ़ाने के कार्यक्रम एवं आर.टी.आई. को स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। एक जागरूक नागरिक का आचरण भ्रष्ट और अनैतिक व्यवहार को रोकने में कानून/नियमों से अधिक महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपयोगिता वाली हर चीज़ का सामाजिक ऑडिट अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए आम जनता से जुड़े हर क्षेत्र में, जैसे शिक्षा या स्वास्थ्य के क्षेत्र आदि में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए।

सरकारी तंत्र (जिनके पास विशेषज्ञता और साधन उपलब्ध हैं) और सामाजिक संगठनों को एक साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ काम करना जरूरी है क्योंकि यह आम आदमी तक पहुंच सकते हैं।

भ्रष्टाचार निर्मूलन के लिए निजी क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित एजेंडा लागू होना चाहिए:–

1. निजी क्षेत्र को भ्रष्टाचार विरोधी कानूनों के अंतर्गत लाना
2. सूक्ष्म, लघु मध्यम उद्यम मंत्रालय अधिसूचना दिनांक 23.05.2012 निजी क्षेत्र के लिए लागू करना
3. वाणिज्यिक रिश्वत बनाम छोटे भुगतानों का उपचार गवाह तथा आम नागरिक जो भी भ्रष्टाचार के खिलाफआवाज उठाएं, उन सभी को सुरक्षा मिलना जरूरी है।

भ्रष्टाचार रोधी शिक्षा स्कूल में शास्त्र के अंतर्गत शामिल की जानी चाहिए। इसके साथ–साथ लोक प्रशासन व्यापार कानून और अर्थशास्त्र विषय में भी तथा तकनीकी और इंजीनियरिंग शिक्षा में भी अब यह अनिवार्य होना चाहिए।

उक्त उपायों को यथा संभव अनुकरणा/लागू किए जाने से आम जनता भ्रष्टाचार के प्रति जागरूक एवं सतर्क हो सकती है। यही एक रास्ता है जिससे भ्रष्टाचार खत्म हो सकता है।

जब हम सरकारी संगठनों की बात करते हैं तो उस संदर्भ में निम्नलिखित बातों पर गौर किया जाना एवं उनका अनुपालन किया जाना आवश्यक है:–

1. अपना निजी (आवासीय) या मोबाइल नंबर किसी भी अनजान व्यक्ति को न देना।
2. कभी भी अनजान व्यक्ति से फोन पर बात करने से पहले फोन करने वाले की पूरी जानकारी लें और अपने काम–काज तथा विभाग की सूचना किसी को भी न दें।
3. किसी अंतर्राष्ट्रीय कॉल तथा कॉल सेंटर से आए कॉल पर बात करते समय सावधानी रखना जरूरी है अन्यथा आप का निजी नुकसान अथवा सामाजिक/राष्ट्रीय हानि होने की संभावना हो सकती है ।
4. किसी भी व्यक्ति द्वारा फोन पर अथवा किसी अन्य माध्यम से आपसे आपके विभाग अथवा कार्यालय के बारे में जानकारी मानी जाए तो आप सतर्क हो जाएं।
5. कामकाज के बारे में कम से कम बात करें।

निवारक सतर्कता का यह मतलब नहीं कि आप पहले कुछ भी नुकसान होने का इंतजार करें और उसके बाद उसका पोस्टमार्टम करें। दंडात्मक सतर्कता से ज्यादा महत्वपूर्ण है निवारक सतर्कता। निवारक सतर्कता के महत्व को ध्यान में रखते हुए यह अनिवार्य है कि विभागों तथा प्रभागों में उपयुक्त वरिष्ठ अधिकारी की नियुक्ति प्रमुख आंतरिक सतर्कता अधिकारी के रूप में की जाए जिनके निम्नलिखित दायित्व हों:

1. मौजूदा प्रक्रिया और प्रथाओं का अध्ययन करना
2. विनियामक कार्यों की समीक्षा करना
3. नियंत्रण के लिए उचित उपायो का सुझाव देना
4. भ्रष्टाचार की आशंका वाले क्षेत्रों की पहचान करना

वित्त प्रभाग

जी.एस.टी. नए नियम-2022

आरती गुप्ता
उप वित्त प्रबंधक, निगमित कार्यालय

जी.एस.टी. रिटर्न नए नियम : नववर्ष अर्थात 1 जनवरी 2022 से संक्षिप्त रिटर्न और मासिक वस्तु एवं सेवाकर (जी.एस.टी.) के भुगतान में चूक करने वाली कंपनियों को आगे के महीने के लिए जी.एस.टी आर–1 बिक्री रिटर्न दाखिल करने की अनुमति नहीं होगी, खबरों के अनुसार, जी.एस.टी. काउंसिल की मीटिंग में अनुपालन को सुसंगत बनाने को ध्यान में रखते हुए कई फैसले किए गए, इसमें कंपनियों या कारोबारियों द्वारा रिफंड का दावा करने के लिए आधार सत्यापन को आवश्यक किया जाना भी सम्मिलित है।

जी.एस.टी. की चोरी से राजस्व में नुकसान रोका जा सकेगा

समाचारों के अनुसार माना जा रहा है कि इन कदमों से जी.एस.टी. की चोरी से राजस्व में होने वाली हानि को रोका जा सकेगा। जी.एस.टी. व्यवस्था 1 जुलाई, 2021 को लागू हुई थी। जी.एस.टी. परिषद ने 1 जनवरी, 2022 से केंद्रीय जी.एस.टी. नियम 59 (6) में संशोधन करने का फैसला किया है। इसके अंतर्गत अगर किसी पंजीकृत व्यक्ति ने पिछले महीने का फॉर्म जी.एस.टी.आर.–बी. में रिटर्न दाखिल नहीं किया है, तो उसे जी.एस.टी.आर. –1 जमा करने की अनुमति नहीं होगी।

अभी क्या है नियम

यदि अभी कंपनियां पिछले दो माह का जी.एस.टी. आर–3बी जमा करने में चूक जाती हैं, तो उन्हें बाहरी सप्लाई या जी.एस.टी.आर.–1 जमा कराने की अनुमति नहीं होती कंपनियों को किसी महीने के लिए जी.एस.टी.आर.–1 बाद के महीने के 11वें दिन तक जमा कराना होता है, वहीं जी.एस.टी.आर.–3बी जिसके माध्यम से कंपनियां टैक्स का भुगतान करती हैं, उसके पश्चात् माह के 20वें से 24वें दिन जमा कराना होता है।

जी.एस.टी. रजिस्ट्रेशन के लिए आधार सत्यापन आवश्यक

इसके अतिरिक्त परिषद ने जी.एस.टी. रजिस्ट्रेशन के लिए आधार सत्यापन को आवश्यक कर दिया है। तत्पश्चात कोई कंपनी रिफंड के लिए दावा कर सकेगी, केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड ने जी.एस.टी. पंजीकरण के लिए आधार सत्यापन को 21 अगस्त, 2020 से आवश्यक किया था, काउंसिल ने अब फैसला किया है कि कंपनियों को अपने जी.एस.टी. पंजीकरण को बायोमैट्रिक आधार से जोड़ना होगा, तभी वे रिफंड के लिए दावा कर सकेंगी या रद्द पंजीकरण को फिर बहाल करने के लिए आवेदन कर पाएंगे।

जी.एस.टी. दर में बढ़ोत्तरी : अगले साल 1 जनवरी 2022 से कपड़े और जूते महंगे होने वाले हैं। इस कारण केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) ने विभिन्न प्रकार के वस्त्र, परिधान और जूतों के लिए वस्तु एवं सेवा कर की दर को 12% कर दिया है। पहले यह दर 5 फीसदी थी। नई जी.एस.टी. दर 1 जनवरी 2022 से प्रभावी होगी।

हालांकि, कुछ सिंथेटिक फाइबर और यार्न के लिए जी.एस.टी. दरों को 18% से घटाकर 12% कर दिया गया है। अधिसूचना के अनुसार, इस कदम के पीछे उद्देश्य पूरे कपड़ा क्षेत्र के लिए दरों में एकरूपता लाना और इनवर्टेड ड्यूटी स्ट्रक्चर के कारण पैदा हुई विकृतियों को दूर करना है।

आयकर कानून, 1961 की धारा 206सी (1एच)

सजल अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक (वित्त), निगमित कार्यालय

1 अक्टूबर 2020 से सरकार ने माल की बिक्री के संबंध में प्राप्त धनराशि पर टी.सी.एस. जमा करवाने में एक नया प्रावधान लागू किया है जो कि आयकर कानून की धारा 206सी (1एच) में दिया गया है और इससे जुड़े कई मुद्दे हैं जिन्हें यहाँ अत्यंत सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया गया है।

क्या है ये नया प्रावधान

1 अक्टूबर 2020 से टी.सी.एस. के नए प्रावधान लागू हो गए हैं और यदि आपकी बिक्री बीते वर्ष में अर्थात 31 मार्च 2021 को जो वर्ष समाप्त हुआ है उसमें 10 करोड़ से अधिक है तो इस वर्ष आपको अपने उन क्रेताओं, जिनसे आपने इस वित्तीय वर्ष में बिक्री के संबंध में "50 लाख से अधिक का भुगतान" प्राप्त किया है तो 1 अक्टूबर के बाद प्राप्त भुगतान में से जितना भी भुगतान इस वितीय वर्ष में प्राप्त 50 लाख रुपये के भुगतान से अधिक होगा उस पर 0.1% टी.सी.एस. एकत्र कर जमा कराना होगा।

यदि 31 मार्च को समाप्त हुए वर्ष में आपकी बिक्री 10 करोड़ से कम है तो आपको यह टी.सी.एस. एकत्र नहीं करना है तथा 30 सितंबर से पूर्व प्राप्त किये गए 50 लाख से ऊपर के भुगतान पर किसी प्रकार का टी.सी.एस. एकत्र नहीं करना है।

क्या यह सेवाओं की सप्लाई पर भी लागू है?

नहीं, इस समय जो प्रावधान लाया गया है वह सिर्फ माल की बिक्री के संबंध में ही है और सेवाओं को इस प्रावधान से अभी सम्मलित नहीं किया गया है।

क्या यह टी.सी.एस. बिल में चार्ज करना चाहिए ?

आयकर कानून मे ऐसा कोई प्रावधान नहीं किया गया है। आयकर कानून की धारा 206सी (1एच) के अनुसार, टी.सी.एस. का भुगतान माल की बिक्री का भुगतान प्राप्त होने के बाद करना है जिसके लिए विक्रेता को क्रेता से टी.सी.एस. का प्रथक भुगतान प्राप्त करने के लिए डेबिट नोट जारी करना होगा।

इस कठिनाई को देखते हुए, टी.सी.एस. को बिल में ही चार्ज कर लेना चाहिए ताकि क्रेता को पता रहे कि वह और विक्रेता इस टी.सी.एस. के दायरे में हैं और इससे फायदा होगा, जिससे भुगतान के समय कोई विवाद न उत्पन्न हो।

यह टी.सी.एस. किस राशी पर चार्ज करना है? क्या यह राशी जी.एस.टी. सहित होगी या जी.एस.टी. को छोड़ते हुए टी.सी.एस. चार्ज करना है?

यह टी.सी.एस. आपको जी.एस.टी. सहित राशि पर एकत्र करना है अर्थात इस टी.सी.एस. की गणना के लिए आपको जी.एस.टी. को कम नहीं करना क्योंकि टी.सी.एस. की गणना, प्राप्त हुए भुगतान की राशि पर करनी है जो जी.एस.टी. सहित होती है।

क्या माल के संबंध में प्राप्त एडवांस पर भी ये टी.सी.एस. के प्रावधान लागू होंगे?

ये प्रावधान बिक्री के संबंध में प्राप्त हुई राशि पर लागू है और अगर इससे संबंधित कोई एडवांस 1 अक्टूबर या उसके बाद प्राप्त हुआ है तो उस पर भी टी.सी.एस. के प्रावधान लागु होंगे।

लेकिन एक बात ध्यान रखें कि यदि एडवांस राशी 1 अक्टूबर से पूर्व ही प्राप्त हो गई है और सप्लाई 1 अक्टूबर के बाद की गई है तब टी.सी.एस. नहीं चार्ज करना है क्योंकि यह प्रावधान भुगतान प्राप्ति पर आधारित है।

यदि बिक्री 1 अक्टूबर के पहले की है और भुगतान 1 अक्टूबर या उसके बाद आ रहा है तो इस स्थिति में टी.सी.एस. की स्थिति क्या रहेगी?

यह प्रावधान भुगतान आधारित है और यदि भुगतान 1 अक्टूबर या उसके बाद प्राप्त हुआ है तो इसपर टी.सी.एस. के प्रावधान लागू होंगे।

टी.सी.एस. का भुगतान कब करना है?

टी.सी.एस. के भुगतान की जिम्मेदारी क्रेता से भुगतान प्राप्त होने पर ही होगी और जिस महीने में आपको भुगतान प्राप्त

होता है उस महीने की समाप्ति के 7 वें दिन आपको इसे जमा कराना है। उदाहरण के लिए आपको भुगतान अक्टूबर में प्राप्त होता है तो इसके टी.सी.एस. का भुगतान आपको 7 नवम्बर तक करना होगा।

यदि पहले से टी.सी.एस. जिन वस्तुओं पर चार्ज हो रहा है तो उनको इस प्रावधान में कैसे लिया जाएगा।

जिन वस्तुओं पर पहले से टी.सी.एस. चार्ज हो रहा है वे उसी प्रावधान के तहत ही रहेंगी जिन पर अभी तक टी.सी.एस. जमा हो रहा था उन वस्तुओं के संबंध में टी.सी.एस. के ये नए प्रावधान लागू नहीं होंगे। जैसे तेंदू पत्ते, मानव उपभोग के लिए लिकर, स्क्रेप इत्यादि याद रखें कि इन वस्तुओं पर पहले से जारी टी.सी.एस. के प्रावधान जारी रहेंगे।

इस टी.सी.एस. से कोई और भी छूट उपलब्ध है?

हाँ, यदि बिक्री के संबंध में यह राशि निम्नलिखित से प्राप्त हुई है तो इस पर टी.सी.एस. के प्रावधान लागू नहीं होंगे :–

1. निर्यात के दौरान बेचे गए माल।
2. यदि खरीददार केंद्र सरकार, राज्य सरकार, किसी दूसरे देश का दूतावास इत्यादि, स्थनीय निकाय जैसे : नगर पालिका इत्यादि, कोई व्यक्ति जो भारत में माल आयात कर रहा है या अन्य कोई अधिसूचित व्यक्ति (अभी तक कोई अधिसूचित नहीं है)।

   ध्यान रहे कि इन सभी की खरीदारी तो इस टी.सी.एस. से मुक्त है लेकिन उनके द्वारा की गई बिक्री पर, यदि लागू होता है, तो उन्हें टी.सी.एस. क्रेता से एकत्र कर जमा करना होगा।
3. ऐसा माल जिस पर पहले से आयकर टी.सी.एस. प्रावधान लागू हैं जैसे तेंदू पत्ते, मानव उपयोग के लिए लिकर, स्क्रेप इत्यादि इस संबंध में आयकर प्रावधान में पहले से जारी टी.सी.एस. प्रावधान देख लें।
4. भारत में आयात करने वाले व्यक्ति–इन्हें खरीददार की परिभाषा से बाहर रखा गया है।
5. सरकार यदि किसी को अधिसूचित करे जिसे खरीददार की परिभाषा से बाहर रखा जाना है। अभी तक एस.सी. लोई अधिसूचना जारी नहीं की गई है।

आयकर कानून, 1961 की धारा 206सी (1एच) के उदाहरण:–

1. यदि आपने 1 अप्रैल से 30 सितंबर के बीच किसी एक डीलर को 60 लाख रुपये की बिक्री की है और इसमें से 45 लाख रुपये 30 सितंबर तक प्राप्त हो गए और 2 अक्टूबर को 10 लाख रुपये प्राप्त होते हैं तो इस प्राप्ति में से इस समय आपको 5 लाख रुपये पर ही टी.सी.एस. एकत्र करना है क्योंकि यह कर पूरे वर्ष में 50 लाख रुपये से अधिक की प्राप्ति पर लगना है और इस केस में कुल वसूली 55 लाख रुपये हुई है तो 50 लाख को छोड़ते हुए शेष पर टी.सी.एस. एकत्र करना है।
2. 30 सितंबर के बाद जो भी राशि प्राप्त होती है उसे आपको विभाजित करने की आवश्यकता नहीं है कि यह किस बिल से संबंधित है या यह भुगतान 30 सितंबर से पहले का है या बाद का। यह प्रावधान इसी तरह बनाया गया है कि यदि किसी क्रेता से आपको यह टी.सी.एस. एकत्र कर जमा करना है तो आपको 30 सितंबर के बाद प्राप्त सारी राशि पर करवाना है बिना यह देखे कि इसकी बिक्री कब हुई है। यहाँ बिक्री की राशी का महत्त्व नहीं है बल्कि उस संबंध में प्राप्त राशि का महत्त्व है।

आयकर : पुरानी और नई टैक्स व्यवस्था?

अंकिता काबरा
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

वित्त मंत्रालय ने बजट मे ंआयकरदाता को इनकम टैक्स में राहत दी है। बजट में नई टैक्स व्यवस्था का एलान किया गया। नई टैक्स व्यवस्था में 5 से 7.5 लाख रुपये तक की वार्षिक आय पर इनकम टैक्स रेट को घटाकर 10% प्रतिशत कर दिया गया है। 7.5 लाख से 10 लाख रुपये तक की वार्षिक आय के लिए आयकर की दर को 15% कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त 10–12.5 लाख रुपये तक की आय वालों पर अब 20% और 12.5 लाख रुपये से लेकर 15 लाख रुपये तक की आय वालों पर 25% की दर से टैक्स लगेगा। 15 लाख से ज्यादा की आय पर टैक्स रेट 30% रहेगी।

लेकिन इस नए टैक्स स्लैब के साथ सरकार ने एक शर्त भी रखी है। शर्त यह है कि नया टैक्स स्ट्रक्चर आयकरदाताओं के लिए वैकल्पिक होगा। टैक्स पेयर्स के पास नई व्यवस्था और पुरानी व्यवस्था में से चुनने का विकल्प मौजूद रहेगा। नई टैक्स व्यवस्था को अपनाने वाले आयकरदाता आयकर कानून के चैप्टर VI-ए के तहत मिलने वाली टैक्स कटौती और छूट का लाभ नहीं ले पाएंगे अर्थात नए टैक्स स्ट्रक्चर को चुननेवाले स्टैंडर्ड डिडक्शन, होमलोन, एल.आई.सी., स्वास्थ्य बीमा आदि निवेश विकल्पों में निवेश नहीं कर सकेंगे।

लोगों के मन में उलझन है कि वे कैसे अपने लिए सही टैक्स व्यवस्था को चुनें। आइए जानते हैं कि आप कैसे केवल 5 स्टेप्स में अपने लिए सही टैक्स व्यवस्था का चयन कर सकते हैं।

स्टेप 1-यह समझें कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है?

अगर आपकी टैक्सेबल इनकम 5 लाख से नीचे है या 15 लाख से ज्यादा है, तो दोनों में टैक्स की दर समान है, इसलिए पुरानी व्यवस्था जिसमें छूट मिल रही हैं, वह ज्यादा बेहतर है।

सभी छूटों में से जो हटाई गईं हैं, यह देखें कि उनमें से कितनी आपके लिए उपयुक्त हैं और उन्हें चुनकर आप कितनी बचत कर सकते हैं। इससे आपको अगले स्टेप में मदद मिलेगी।

स्टेप 3-टैक्स कैलकुलेट करें

छूट या डिडक्शन के बाद अपनी नेट टैक्सेबल इनकम के आधार पर नई और पुरानी दोनों टैक्स व्यवस्था के अंदर कुल इनकम टैक्स को कैलकुलेट करें।

स्टेप 4-आंकड़े से आगे सोचिए

टैक्सेबल इनकम के अतिरिक्त, अपनी लाइफस्टाइल, जिंदगी में आप जिस पड़ाव पर हैं, अपनी छोटी और लंबी अवधि के लिए प्राथमिकताओं के साथ वित्तीय लक्ष्यों का भी ध्यान रखें। इससे आपको अपने लिए सही टैक्स व्यवस्था चुनने में मदद मिलेगी। महंगाई और बढ़ती जरूरतों के साथ, अब यह महत्वपूर्ण हो गया है कि आप जल्दी बचत करना आरंभ करें और समझदारी से खर्च करें। कंपाउंडिंग से आपको वित्तीय लक्ष्य प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिलती है।

स्टेप 5-अच्छी तरह प्लानिंग करें

यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप हर वित्तीय वर्ष में अपनी कर व्यवस्था को बदल सकते हैं क्योंकि ये दोनों एक साथ मौजूद रहेंगी। पहली बार कर दे रहे लोग नई कर व्यवस्था को चुन सकते हैं क्योंकि इसको पालन करना आसान है और इससे कम कर देनदारी रहेगी। हालांकि, लंबे समय में निवेश के वित्तीय लाभ हैं और पुरानी कर व्यवस्था की ओर जा सकते हैं क्योंकि उसमें ज्यादा लाभ मिलेगा।

बजट में हुई घोषणा ने लोगों को कर व्यवस्था चुनने की आजादी दी है। यह सही रहेगा अगर आप टैक्स व्यवस्था को चुनने से पहले सभी चीजों का आकलन करें और फिर फैसला लें।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल

सुशांत कुमार जेना
बाह्य साधनः वरिष्ठ सहायक (सूचना प्रौद्योगिकी)
निगमित कार्यालय

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल एस.ए.पी.ई.आर.पी. सॉफ़्टवेयर का एक अभिन्न अंग है। एस.ए.पी. सामग्री प्रबंधन लागत कुशल एवं समय प्रभावी दोनों होने के कारण इसका उपयोग विभिन्न कंपनियां अपनी खरीद और लेन–देन संबंधी डेटा को संभालने के लिए करती हैं। एस.ए.पी. सामग्री प्रबंधन लॉजिस्टिक प्रकार्य से संबंधित है जो उद्योग को उत्पादों की खरीद से लेकर वितरण तक में सहायता करता है। एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल में सामग्री की खरीद और विक्रेताओं को संभालने, सामग्री की स्थिति और गुणवत्ता की जांच करने के साथ–साथ विक्रेताओं के भुगतान के लिए विभिन्न इकाइयाँ शामिल हैं।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल में एस.ए.पी.व्यवसाय प्रक्रिया क्या है?

एस.ए.पी. व्यवसाय प्रक्रिया एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल का एक अभिन्न अंग है। यह एक कंपनी की बिक्री, निर्माण, वितरण, यूनिट अनुरक्षण, योजना और भांडागार प्रबंधन को संभालता है। यह एक कंपनी की सूची और मानव संसाधन का प्रबंधन करने में सहायता करता है।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल की विशेषताएं

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:–

- यह वस्तुसूची प्रबंधन और सामग्री प्रबंधन से संबंधित है।
- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी कंपनी की आपूर्ति श्रृंखला में कमी या उल्लंघन की जांच करती है।
- यह खरीद गतिविधियों का प्रबंधन करता है।
- उत्पादकता में तेजी लाने और लागत में कटौती करने के लिए, यह एक कंपनी की सामग्री (उत्पादों/सेवाओं) और संसाधनों का प्रबंधन करता है।
- यह मास्टर डेटा, सामग्री का मूल्यांकन, सामग्री की आवश्यकता, चालान सत्यापन आदि को संभालता है।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल के लाभ

- यह संचालन की लागत को कम करता है।
- यह अनावश्यक या अप्रचलित सामग्री को हटाकर माल के नुकसान को कम करता है।
- स्वचालित सामग्री प्रबंधन और खरीद गतिविधियां एक सरल एवं और कुशल प्रक्रिया प्रदान करती हैं।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल में खरीद प्रक्रिया

प्रत्येक कंपनी को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामग्री या सेवा की आवश्यकता होती है, और इस प्रकार, वे उन्हें खरीदते हैं। इस प्रक्रिया को खरीद के रूप में जाना जाता है।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल में खरीद के प्रकार

खरीद दो प्रकार की होती हैं:–

- बुनियादी खरीद
- विशेष खरीद
- मूल खरीद

सही सामग्री और सेवाओं को उचित मात्रा में न्यूनतम दर पर और सही समय पर खरीदने की प्रक्रिया को मूल खरीद कहा जाता है।

मूल खरीद जीवनचक्र के प्रकार?

विभिन्न खरीद जीवनचक्र है जो इस प्रकार हैः

1. **जानकारी एकत्र करनाः** खरीद प्रक्रिया किसी उत्पाद और उसकी मात्रा के विवरण के संग्रह के साथ आरंभ होती है। उसके पश्चात् आवश्यक उत्पादों और सेवाओं के अनुसार आपूर्तिकर्ताओं से संपर्क किया जाना चाहिए।
2. **आपूर्तिकर्ताः** मांग के आधार पर, आपूर्तिकर्ताओं से संपर्क किया जाता है और मांग की पूर्ति करने के लिए कहा जाता है।
3. **उपभोग, रखरखाव और निपटानः** उत्पादों और सेवाओं का मूल्यांकन उनके प्रदर्शन के अनुसार किया जाता है। उनके

प्रदर्शन के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि क्या पुनः उसी आपूर्तिकर्ता को कार्य दिया जाएगा या एक नए आपूर्तिकर्ता से संपर्क किया जाएगा।

विशेष खरीद

वे स्टॉक जो किसी कंपनी से संबंधित नहीं होते हैं और एक निश्चित स्थान पर संग्रहीत होते हैं, उन्हें विशेष स्टॉक कहा जाता है। इन स्टॉकों को खरीदने की प्रक्रिया को विशेष खरीद के रूप में जाना जाता है।

विशेष खरीद और अद्वितीय स्टॉक के प्रकार हैं:

1. **परेषण स्टॉक्सः** स्टोर परिसर में उपलब्ध सामग्री को परेषण स्टॉक के रूप में जाना जाता है। यह सामग्री विक्रेता की है, लेकिन इसका उपयोग करने के लिए आपको विक्रेता को भुगतान करना होगा।
2. **थर्ड-पार्टी प्रोसेसिंगः** थर्ड–पार्टी प्रोसेसिंग में कंपनी अपने ऑर्डर विक्रेताओं को देती है जो उन्हें सीधे ग्राहकों तक पहुंचाते हैं। इन ऑर्डर को क्रय आदेश, क्रय आवश्यकताएँ और विक्रय आदेश के अंदर अद्यतन किया जाता है।
3. **पाइपलाइन हैंडलिंगः** पाइपलाइन हैंडलिंग में सामग्री कंपनी द्वारा संग्रहीत नहीं की जाती है; अपितु, यह विक्रेता द्वारा ही संग्रहीत की जाती है। जब भी कंपनी को इसकी आवश्यकता होती है, सामग्री विक्रेता से मंगवाई जाती है।
4. **स्टॉक ट्रांसपोर्ट ऑर्डरः** जब एक प्लांट को कुछ सामान की आवश्यकता होती है, तो वह उन्हें कंपनी के दूसरे प्लांट से ऑर्डर करता है। ये सामान स्टॉक ट्रांसपोर्ट ऑर्डर का उपयोग करके प्राप्त किए जाते हैं। इस स्टॉक ट्रांसपोर्ट ऑर्डर का उपयोग करके माल के हस्तांतरण की निगरानी की जा सकती है।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल में एक संगठन की संरचना

एक संगठन विभिन्न स्तरों और कई इकाइयों से बनता है। ये इकाइयाँ एक नियमित पदानुक्रम का पालन करती हैं। इनमें से प्रत्येक इकाई का एक विशेष कार्य होता है जो मिलकर संगठन की संरचना का निर्माण करती हैं।

- क्लाइंट
- कंपनी कोड
- संयंत्र
- भंडारण स्थान
- क्रय संगठन
- क्रय समूह
- **क्लाइंट–** क्लाइंट एक व्यावसायिक इकाई है जिसका अपना मास्टर डेटा होता है जिसमें स्वतंत्र टेबल सेट होते हैं। यह एस.ए.पी. प्रणाली में पदानुक्रम के शीर्ष पर है। क्लाइंट स्तर पर सहेजे गए सभी डेटा तक सभी संगठनात्मक स्तरों की पहुंच होती है।
- **कंपनी कोड–** कंपनी कोड क्लाइंट स्तर के अंतर्गत आने वाली कंपनी की सबसे छोटी इकाई है। इसकी एक स्वतंत्र लेखा इकाई है जो अपने लाभ, हानि और शेष विवरण को बनाए रखती है।
- **संयंत्र (प्लांट)–** कंपनी में माल के उत्पादन और उन्हें कंपनी के लिए उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी इकाई को संयंत्र के रूप में जाना जाता है। एक संयंत्र इकाई में एक विनिर्माणन सुविधा और गोदाम होता है।
- **भंडारण स्थान (स्टोरेज लोकेसन)–** किसी कंपनी में भंडारण स्थान उपयोग संयंत्र में उपलब्ध सामग्री स्टॉक और सामान को स्टोर करने के लिए किया जाता है। एक संयंत्र में कई भंडारण स्थान हो सकते हैं जहां भंडारण स्थान से संबंधित सभी डेटा संग्रहीत किया जाता है।
- **क्रय संगठन (परचेज़)–** क्रय संगठन कंपनी में खरीद कार्यों के लिए जिम्मेदार है। क्रय करने वाली कंपनी बाहरी खरीद का प्रबंधन भी करती है। जब कोई क्रय संगठन इकाई ग्राहक स्तर पर मौजूद होती है, तो इसे केंद्रीकृत क्रय संगठन कहा जाता है। कंपनी स्तर पर या संयंत्र स्तर पर भी क्रय संगठन विद्यमान हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों में, इसे कंपनी–विशिष्ट या संयंत्र–विशिष्ट क्रय संगठन कहा जाता है।
- **क्रय समूह–** संगठन की दिन–प्रतिदिन की खरीद गतिविधियों को करने वाली इकाई क्रय समूह कहलाती है। यह खरीदारों का एक समूह है जो खरीद गतिविधियों के लिए जिम्मेदार है।

एस.ए.पी. आर / 3

एस.ए.पी.आर. / 3 एक सॉफ्टवेयर है, जिसे जर्मन कॉर्पोरेशन द्वारा बनाया गया था। यह सॉफ्टवेयर मानव संसाधन प्रबंधन, ऑर्डर पूर्ति, बिलिंग और उत्पादन योजना जैसे व्यवसाय

संचालन के लिए आवश्यक सभी संसाधनों और गतिविधियों के समन्वय के लिए विकसित किया गया था।

एस.ए.पी. आर / 3 का उपयोग वास्तविक समय में डेटा को स्टोर करने के लिए किया जाता है। अब, एस.ए.पी. आर / 3 में संग्रहीत डेटा को 2 श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

- लेन–देन संबंधी डेटा
- मास्टर डेटा

लेन-देन संबंधी डेटा

लेन–देन संबंधी डेटा वह डेटा है जो किसी व्यावसायिक लेनदेन के प्रसंस्करण से संबंधित है। यह डेटा है जो विक्रेताओं को उनके ऑर्डर के लिए किए गए भुगतान या माल के लिए ग्राहक से लिए गए भुगतान से संबंधित है।

मास्टर डेटा

मास्टर डेटा मुख्य डेटा है जिसका उपयोग किसी कंपनी में किसी भी लेनदेन के लिए किया जाता है। यह एक संगठन में केंद्रीय रूप से संग्रहीत होता है और कोई भी इसे एक्सेस कर सकता है। हालाँकि, डेटा को समय पर अपग्रेड करने की आवश्यकता होती है।

एस.ए.पी. मास्टर डेटा दो प्रकार का होता है:

- विक्रेता मास्टर डेटा
- सामग्री मास्टर डेटा

विक्रेता मास्टर डेटाः विक्रेता मास्टर डेटा कंपनी से जुड़े सभी विक्रेताओं के संबंध में जानकारी का एक संग्रह है। इसमें विक्रेता का नाम, पता, जी.एस.टी.एन., सामग्री का प्रकार जिसे वह (विक्रेता) बेचता है या खरीदता है, आदि जैसी जानकारी होती है।

विक्रेता मास्टर डेटा को तीन श्रेणियों में बांटा गया है:

1. **सामान्य डेटाः** जो डेटा क्लाइंट स्तर पर बनाए रखा जाता है और सभी संगठनात्मक स्तरों के लिए मान्य होता है उसे सामान्य डेटा कहा जाता है।
2. **लेखांकन डेटाः** लेखांकन डेटा प्राप्त या बेची गई सामग्री के खर्च से संबंधित है। यह सारा डेटा संगठनात्मक स्तर पर रखा जाता है।
3. **क्रय डेटाः** क्रय डेटा सामग्री या सेवाओं का डेटा रखता है जिसे आपूर्तिकर्ताओं या विक्रेताओं से प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। क्रय डेटा से संबंधित जानकारी क्रय संगठन स्तर पर रखी जाती है।

विक्रेता खाता समूह

कंपनी के अंतर्गत सूचीबद्ध सभी विक्रेताओं को उनकी आवश्यकताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। समान विशेषताओं वाले विक्रेताओं को एक ही खाते के अंतर्गत एक दूसरे के साथ संगठित किया जाता है जिसे विक्रेता खाता समूह कहा जाता है।

संख्या सीमा

एक विक्रेता मास्टर रिकॉर्ड बनाए जाने के साथ उस विक्रेता की पहचान हेतु एक अद्वितीय संख्या आवंटित की जाती है।

एक विक्रेता को दो प्रकार से नंबर आवंटित किए जा सकते हैं:

1. **बाहरी नंबर असाइनमेंटः** इस असाइनमेंट में, जब आप विक्रेता के लिए रिकॉर्ड बनाते हैं, तो आपको स्वयं एक विशिष्ट नंबर दर्ज करना होता है, जिसमें अक्षर और अंक होने चाहिए।
2. **आंतरिक संख्या असाइनमेंटः** इस असाइनमेंट में, विक्रेता के लिए एक रिकॉर्ड बनाते समय, सिस्टम द्वारा स्वचालित रूप से एक अद्वितीय संख्या उत्पन्न होती है।

वेंडर मास्टर क्रिएशन

वेंडर मास्टर का उपयोग वेंडरों की सूची को स्टोर करने के लिए किया जाता है जहां से कोई भी कंपनी सामान बेच या उत्पादन कर सकती है।

सामग्री मास्टर डेटाः सामग्री–विशिष्ट डेटा सामग्री मास्टर डेटा का उपयोग करके संग्रहीत किया जाता है। संग्रहीत डेटा में उन सामग्रियों के बारे में जानकारी होती है जिन्हें एक कंपनी को खरीदने, स्टोर करने, उत्पादन करने या बेचने की आवश्यकता होती है।

एक कंपनी में विभिन्न विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग किसी न किसी सामग्री पर काम करता है और वे अपनी सामग्री के संबंध में अलग–अलग जानकारी दर्ज करते हैं। इसलिए, प्रत्येक विभाग का सामग्री मास्टर रिकॉर्ड के बारे में अपना दृष्टिकोण है।

सामग्री मास्टर डेटा की विशेषता लक्षणः

सामग्री प्रकार

सामान्य लक्षणों वाली सभी सामग्री को एक दूसरे के साथ इकट्ठा किया जाता है और उन्हें एक भौतिक प्रकार के लिए

आवंटित किया जाता है। यह सामग्रियों को अलग करने और उन्हें व्यवस्थित रूप से संभालने में सहायता करता है।

उदाहरणः— तैयार उत्पादों और कच्चे माल को संबंधित सामग्री प्रकारों में व्यवस्थित किया जा सकता है।

सामग्री समूह

एक सामग्री समूह सामग्री प्रकारों की एक विस्तृत विविधता है। जिन सामग्रियों में सामान्य गुण होते हैं, उन्हें एक साथ चुना जाता है और एक सामग्री समूह को सौंपा जाता है।

जैसे, खाद्य उत्पाद, बिजली के सामान, स्टेशनरी आदि ऐसी सामग्रियां हैं जिन्हें उनके प्रकार के अनुसार व्यवस्थित किया जा सकता है।

संख्या सीमा

जब कोई सामग्री मास्टर रिकॉर्ड बनाया जाता है, तो उसे पहचानने के लिए प्रत्येक सामग्री को एक अद्वितीय संख्या आवंटित की जाती है।

सामग्री को दो तरीकों से संख्या सौंपी जा सकती हैः

1. **बाहरी नंबर असाइनमेंटः** इस असाइनमेंट में, जब आप विक्रेता के लिए रिकॉर्ड बनाते हैं, तो आपको स्वयं एक विशिष्ट नंबर दर्ज करना होता है, जिसमें अक्षर और अंक होने चाहिए।
2. **आंतरिक संख्या असाइनमेंटः** इस असाइनमेंट में, विक्रेता के लिए एक रिकॉर्ड बनाते समय, सिस्टम द्वारा स्वचालित रूप से एक अद्वितीय संख्या उत्पन्न होती है।

सामग्री मास्टर निर्माण

सामग्री मास्टर का उपयोग कंपनी द्वारा उत्पादित, विपणन, भंडारण अथवा खरीदी गई सामग्री के संबंध में सभी विवरण रखने के लिए किया जाता है। यह सभी सूचनाओं को केंद्रीय डेटा पर संग्रहीत करता है जो विभिन्न स्तरों पर मौजूद प्रत्येक इकाई के लिए उपलब्ध है।

एस.ए.पी. में एम.एम. प्रवाह खरीद चक्र का उपयोग

प्रत्येक व्यावसायिक संगठन को अपनी व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामग्री या सेवाओं की आवश्यकता होती है। सामग्री और सेवाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया को अधिप्राप्ति कहा जाता है।

एस.ए.पी. खरीद चक्र में एम.एम. सर्कुलेशन बनाने वाली सामग्रियों के साथ—साथ सेवाओं को प्राप्त करने के लिए विभिन्न चरणों का उपयोग किया जाता है। एस.ए.पी. में एम. एम. परिसंचरण के चरण हैं।

- आवश्यकता का निर्धारण
- खरीद मांग
- खरीद आदेश उत्पन्न करना
- माल रसीद बनाना
- चालान बनाना

आइए खरीद जीवनचक्र के प्रत्येक चरण को विस्तार से देखेंः

1. **आवश्यकता का निर्धारणः** यह अधिप्राप्ति जीवनचक्र का प्राथमिक चरण है। एक कंपनी आवश्यक सामग्री या सेवाओं की संख्या की पहचान करती है। आवश्यकता के निर्धारण के बाद, उत्पादों की एक सूची बनाई जाती है जिसे खरीदने के लिए वरिष्ठ प्राधिकारी द्वारा स्वीकृति दी जाती है।
2. **खरीद की आवश्यकताः** एक संगठन अपनी सभी आवश्यकताओं को एकत्र करता है और उसके बाद, आवश्यकताओं की एक सूची बनाई जाती है जो सूची में उल्लिखित उत्पादों को प्राप्त करने के लिए क्रय संगठन को प्रदान की जाती है।
3. **खरीद आदेश उत्पन्न करनाः** अनुमोदन के पश्चात् खरीद आदेश उत्पन्न होता है जिसे आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए विक्रेता को भेजा जाता है। खरीद आदेश में विक्रेता का नाम, पता और डिलीवरी की तिथि के संबंध में विवरण होता है।
4. **माल रसीद बनानाः** जब विक्रेता खरीद आदेश को संसाधित करता है और संबंधित पार्टी को वितरित करता है, तो प्रक्रिया को माल प्राप्ति कहा जाता है। फिर, प्राधिकरण वितरित वस्तुओं की गुणवत्ता और स्थिति की पुष्टि करता है। सामग्री के सत्यापन के पश्चात् माल की रसीद पोस्ट की जाती है।
5. **इनवॉइस जनरेट करनाः** इनवॉइस विक्रेता द्वारा कंपनी को भेजा जाता है। चालान मिलने के बाद संस्था द्वारा इसका सत्यापन किया जाता है। अब, विक्रेताओं को भुगतान करने के लिए एस.ए.पी. एम.एम. में एक खाता निर्धारण को रूप दिया गया है जो सिस्टम को स्वचालित रूप से भुगतान किए जाने वाले विक्रेता का सामान्य खाता बनाता है।

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल में भौतिक सूची प्रबंधन

एस.ए.पी. एम.एम. मॉड्यूल के अंतर्गत भौतिक सूची प्रबंधन एक कंपनी में स्टॉक माल को संभालता है। यह उनकी उपलब्धता के अनुसार सामानों की खरीद को संभालता है और साथ ही कंपनी परिसर के भीतर माल के स्टॉक को स्टोर करता है। इसका उपयोग माल के रिकॉर्ड को बनाए रखने के साथ–साथ उन्हें नियमित आधार पर अपडेट करने के लिए किया जाता है।

भौतिक सूची प्रबंधन के कुछ कार्य हैं:–

1. **एस.ए.पी. एम.एम. में मूवमेंट मैनेजमेंटः** मूवमेंट मैनेजमेंट उन सामानों पर नजर रखता है, जिन्हें ऑर्डर, स्टोर, बेचाया उपयोग किया जाता है, अर्थात यह माल की रसीद या माल के मुद्दे को संभालता है।
2. **एस.ए.पी. एम.एम. में माल की रसीदः** माल की रसीद उस सामग्री का रिकॉर्ड है जो विक्रेता द्वारा ऑर्डर करने वाले ग्राहक को दिया जाता है। फिर, डिलीवरी के पश्चात्, माल की गुणवत्ता और स्थिति की जाँच की जाती है, साथ ही सामग्री की पुष्टि के उपरांत माल की रसीद पोस्ट की जाती है। वर्तमान में, मूवमेंट के प्रकार के अनुसार, माल की रसीद का उपयोग करके स्टॉक को इन्वेंट्री में अपडेट किया जाता है। माल की रसीद गोदाम के स्टॉक में वृद्धि को दर्शाती है।
3. **एस.ए.पी. एम.एम. में संचयः** एस.ए.पी. एम.एम. में संचय आरक्षण कुछ स्टॉक को ब्लॉक करता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इसे एक विशिष्ट समय पर उपलब्ध कराया जा सकता है। यह स्टॉक की अनुसूची सुनिश्चित करता है और सामग्री संख्या और संयंत्र कुंजी/कोड का उपयोग करते हुए टी–कोड 'एमएमबीइ' द्वारा देखा जा सकता है।
4. **एस.ए.पी. एम.एम. में माल का निर्गमः** माल का निर्गम स्टॉक का उपयोग या नमूना लेने या इसे वापस विक्रेता को वापस करने के लिए इन्वेंट्री प्रणाली से बाहर की गतिविधि है। माल का निर्गम गोदाम में स्टॉक की मात्रा में कमी लाता है।

देवी प्रसाद मिश्र
उप निदेशक (राजभाषा), उर्वरक विभाग,
रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय

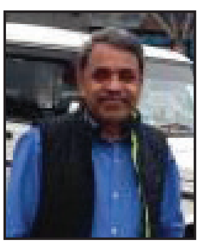

- राजभाषा नियम – 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत जिस कार्यालय के 80% कार्मिक हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं उस कार्यालय को नियम 8(4) के अंतर्गत अपना सारा काम–काज हिन्दी में करने के लिए अधिसूचित किया जाता है।
- राजभाषा नियम – 1976 के नियम 11 के तहत कार्यालय के सभी कोड/मैन्युअल तथा रबड़ की मोहरें, साइन बोर्ड, अधिकारियों के नामपट्ट आदि द्विभाषी होने चाहिए।
- राजभाषा नियम – 1976 के नियम 3 के अनुसार कार्यालय के सभी कार्मिकों की सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिन्दी में की जानी चाहिए।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों को अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर भी हिन्दी में दिया जाना चाहिए। इसमें ई–मेल तथा फैक्स द्वारा प्राप्त पत्रों को भी शामिल किया जाए।
- क्षेत्रीय भाषाओं/अंग्रेजी में जारी सभी विज्ञापनों को हिन्दी में भी जारी किया जाना चाहिए।
- विज्ञापन द्विभाषी रूप में दिया जाए।
- खर्च को समान रखने के लिए हिन्दी समाचार पत्रों में विज्ञापन बड़े आकार तथा मुख्य पृष्ठ पर दिये जाएं जबकि अंग्रेजी समाचार पत्रों में विज्ञापन छोटे आकार में अंतिम पृष्ठ या बीच के पष्ठों में दिया जा सकता है। लाइब्रेरी के कुल खर्च का 50% खर्च हिन्दी पुस्तकों पर किया जाना है।
- प्रवीणता/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त सभी कार्मिकों को अपना सारा कार्य हिन्दी में करना अपेक्षित है।
- राजभाषा नियम – 1976 के नियम 12 के सहत कार्यालय प्रधान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी हैं।
- राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार करना चाहिए।

प्लास्टिक के एकल उपयोग पर अंकुश

प्रस्तुतकर्ताः डॉ0 बाबू वी, डॉ0 रेणुका देवी आर, प्रणीश एम
अनुसंधान एवं विकास विभाग, उद्योगमंडल यूनिट

प्लास्टिक

प्लास्टिक का आविष्कार 1885 में हुआ था। यह फोसिल ईंधन से बना एक सिंथेटिक पोलिमर है। वे लचीला, हल्के, पारदर्शी, अटूट होते हैं लेकिन यह बायोडिग्रेडेबल नहीं है। प्रतिवर्ष विश्व में 400 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक का उत्पादन होता है। जिसमें से कम से कम 8 मिलियन टन प्लास्टिक महासागरों में समा जाता है। हर मिनट, प्लास्टिक के एक कचरे का ट्रक समुद्र में फेंक दिया जाता है। इसका वर्ष 2030 तक हर मिनट समुद्र में प्लास्टिक डंप करने वाले कचरे के दो ट्रक तक बढ़ने का अनुमान है। 2050 तक इसका मतलब यह हो सकता है कि विश्व के महासागरों में मछलियों की तुलना में अधिक प्लास्टिक होंगे। पिछले दशक में, हमने पूरी पिछली सदी की तुलना में अधिक प्लास्टिक का उत्पादन किया। 2017 में अकेले भारत ने 17.8 मिलियन टन प्लास्टिक की खपत की। अनुमान है कि विश्व भर में वार्षिक रूप से 4 ट्रिलियन प्लास्टिक बैग का उपयोग किया जाता है।

एकल उपयोग प्लास्टिक

सिंगल यूज़ प्लास्टिक एक प्रकार की प्लास्टिक की वस्तुएं हैं जिन्हें फेंकने से पहले केवल एक बार ही उपयोग किया जा सकता है। वे आमतौर पर पैकेजिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले डिस्पोज़ेबल प्लास्टिक हैं। प्लास्टिक कचरे का लगभग आधा एकल उपयोग प्लास्टिक से आता है। पॉलीथिन बैग, खाद्य पैकेजिंग बैग, प्लास्टिक की बोतलें, स्ट्रॉ, कप, कटलरी इत्यादि एकल उपयोग प्लास्टिक वस्तुओं के उदाहरण हैं। ये मुख्य रूप से फोसिल ईंधन आधारित रसायनों (पेट्रोकेमिकल्स) से बने होते हैं।

प्लास्टिक की दो मुख्य श्रेणीयां और उनके एकल उपयोग के अनुप्रयोग

थर्मोप्लास्टिक प्लास्टिक का एक परिवार है जिसे गर्म करने पर पिघलाया जा सकता है और ठंडा होने पर कठोर किया जा सकता है। ये विशेषताएँ, जो सामग्री को उसका नाम देती हैं, प्रतिवर्ती हैं। इसे बार–बार गर्म किया जा सकता है, पुनः आकार दिया जा सकता है तथा फिर से ठोस बनाया जा सकता है। सबसे आम थर्मोप्लास्टिक पॉलीइथिलीन टेरेफ्थेलेट (पी.ई.टी.), पॉलीप्रोपाइलीन (पी.ई.), कम घनत्व पॉलीथीन (एल.डी.पी.ई.), उच्च घनत्व पॉलीथीन (एच.डी.पी.ई.), पॉलीस्टाइनिन (पी.एस.), विस्तारित पॉलीस्टाइनिन (ई.पी.एस.), पॉलीविनाइल–क्लोराइड (पी.वी.सी.), पॉली कार्बोनेट हैं। पॉलीप्रोपाइलीन (पी.पी.); पॉलीएलैक्टिक एसिड (पी.एल.ए.) और पॉलीहाइड्रॉक्सिलकानोएट्स (पी.एच.ए.)।

थर्मोसेट प्लास्टिक का एक परिवार है जो गर्म होने पर एक रासायनिक परिवर्तन से गुजरता है, जिससे एक त्रि–आयामी नेटवर्क बनता है। गर्म होने और बनने के बाद, इन प्लास्टिकों को फिर से पिघलाया और सुधारा नहीं जा सकता है। सबसे आम थर्मोसेट्स, पॉलीयूरेथेन (पीयूएर), फेनोलिक रेज़िन, एपॉक्सी रेज़िन, सिलिकॉन, विनाइल एस्टर, ऐक्रेलिक रेज़िन, यूरिया फॉर्मलडिहाइड (यूएफ) रेज़िन हैं।

हम अधिक प्लास्टिक का उपयोग कर रहे हैं क्योंकि वे कम लागत वाले, लचीले, हल्के, नमी प्रतिरोधी, निर्माण में सरल और बहुमुखी हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण के बारे में सामान्य तथ्य

एकल उपयोग प्लास्टिक के प्रति हमारी लत से महासागरों, वन्य जीवियों, पर्यावरण और

हमारे अपने स्वास्थ पर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है। किसी भी चीज के दीर्घकालिक प्रभाव पर विचार किए बिना सुविधा को प्राथमिकता देना मानवीय प्रवृत्ति है। हम दिन–ब–दिन एकल उपयोग प्लास्टिक के आसक्त होते जा रहे हैं। इन प्लास्टिकों पर हमारी निर्भरता एक चौंका देने वाली दर पर अपशिष्ट जमा करती है और पर्यावरण के साथ–साथ जल प्रदूषण का कारण बनती है। फेंके गए अधिकांश सिंगल यूज प्लास्टिक, बारिश से जलमार्गों में प्रवेश करते हैं या तूफ़ानी नालों के माध्यम से नदियों और नालों में चले जाते हैं। जल निकायों में यह हानिकारक रसायनों को बाहर निकालता है और जलमार्गों को बंद कर देता है। एकल उपयोग प्लास्टिक को निगलने से हर साल अनगिनत जानवरों की मौत हो जाती है।

प्लास्टिक की खपत कम करने के उपाय

एकल उपयोग प्लास्टिक से बचने की दिशा में सामूहिक प्रयास सिंगल यूज प्लास्टिक को खत्म करने में मददगार हो सकते हैं। सब्जियों को खरीदने के लिए जाते समय अपने पर्यावरण के अनुकूल बैग ले जाने जैसी हमारी आदतों को बदलने से हर साल पर्यावरण के टनों एकल उपयोग प्लास्टिक को निकाल जा सकता है।

खरीदारी के लिए जाते समय हमेशा पुनः–उपयोग करने योग्य बैग लें। कपड़े या पेपर कैरी बैग का उपयोग किया जा सकता है क्योंकि ये प्राकृतिक और बायोडिग्रेडेबल होते हैं। स्नैक पैक जैसे अलग–अलग पैक किए गए सामानों से बचें और थोक में खरीदने का प्रयास करें। दोबारा इस्तेमाल होने वाले कप में कॉफी या चाय पिएं। अपनी पानी की बोतल घर से ले जाएं और उसे फिर से भरें, पानी की बोतल खरीदने से बचें। चलते–फिरते स्थायी खाने के लिए पुनः प्रयोज्य कटलरी (जैसे लकड़ी, या धातु की चॉपस्टिक) का उपयोग करें। प्लास्टिक की जगह एल्युमिनियम और कांच के कंटेनरों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। लोगों को एकल उपयोग प्लास्टिक के उपयोग से बचने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें एकल उपयोग प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में बताएं। हमें एकल उपयोग प्लास्टिक को धीरे–धीरे बेहतर टिकाऊ विकल्पों से बदलना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह मैन्युफैक्चरिंग गाइडलाइंस पर लगाम लगाए ताकि कूड़े–कचरे वाले प्लास्टिक की संख्या को कम किया जा सके।

सरकार ने प्लास्टिक कचरा प्रबंधन संशोधन नियम 2021 अधिसूचित किया है, जिसमें 2022 तक एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं को प्रतिबंध किया गया है। 30 सितंबर 2021 से प्लास्टिक कैरी बैग की मोटाई 50 से 75 माईक्रोन और 31 दिसंबर 2022 से 120 माइक्रोन तक बढ़ गई है।

निष्कर्ष

वास्तव में, हम अपनी दैनिक गतिविधियों से प्लास्टिक के उपयोग को समाप्त नहीं कर सकते हैं। हालांकि, हमें प्लास्टिक को मिट्टी या पानी तक नहीं पहुंचने देना चाहिए। सरकारों को प्लास्टिक उत्पादन को सख्त करना चाहिए और उपयुक्त नीतियों के माध्यम से रीसाइक्लिंग को प्रोत्साहित करना चाहिए। प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम 2016 का सख्ती से पालन करने की जरूरत है। हमें अपने घर को साफ करना चाहिए और सभी कचरे से छुटकारा पाना चाहिए, यह सोचकर कि हम स्वच्छ भारत मिशन की दिशा में काम कर रहे हैं, लेकिन सफाई आपके घर के कचरे को हटाने और किसी और जगह भेजने के लिए सिर्फ एक दृश्य है।

शुद्ध सात्विक आहार, स्वस्थ जीवन का आधार

ऋचा रंजन
भूतपूर्व विद्यार्थी : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
भूतपूर्व उपाध्यक्ष एवं प्रकृतिवादी –मोर्गन स्टेनली

अन्नमयंहि सौम्य मनः
आपोमयः प्राणस्तेजोमयी वागिति –
छांदोग्य उपनिषद

छांदोग्य उपनिषद के उक्त श्लोक का अर्थ है कि मन अनिवार्य रूप से भोजन से बनता है, प्राण अनिवार्य रूप से जल से बनता है और वाणी अनिवार्य रूप से अग्नि से निर्मित होती है। अधिक विस्तार से व्याख्यान किया जाए तो मन स्थूल भोजन के आवश्यक सूक्ष्म भागों से बना है, प्राण जल से बना है और वाणी भोजन के अग्नि तत्व से बनी है। इसलिए, अनिवार्य रूप से हम जो कुछ भी खाते–पीते हैं, वही तय करता हैं कि हम कैसे सोचते हैं, क्या बोलते हैं और हमारी प्राण शक्ति कैसी है। उपनिषद के उपर्युक्त श्लोक और उसके व्याख्यान से यह स्पष्ट हो जाता है कि भोजन और पानी हमारे जीवन में कितनी अहम भूमिका निभाते हैं। लोकोक्ति के रूप में भी हम सुनते आए हैं कि जैसा अन्न वैसा मन; जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन; जैसा आहार वैसा विचार; उत्तम आहार उत्तम विचार आदि।

आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः–
छांदोग्य उपनिषद

अर्थात् आहार की शुद्धि से सत्व की शुद्धि होती है। सत्व की शुद्धि से बुद्धि निर्मल और निश्चयी बन जाती है। हमारे भोजन में सात्विक, राजसिक और तामसिक सभी गुणों का समावेश होता है। इनके सेवन से ही हमारे मनोभूमि का निर्माण होता है। तभी भोजन में सात्विकता को इतना अधिक महत्व दिया गया है। स्पष्ट है कि आहार जितना शुद्ध है हमारा मन भी उतना ही शुद्ध है। जितना हम अपने आहार को अशुद्ध करेंगे उतना हमारा मन भी अशुद्ध होता जाएगा।

हमारे शरीर में एक हॉर्मोन होता है, सेरोटोनिन। यह हॉर्मोन हमारे प्रसन्नता को निर्धारित करने वाले हॉर्मोनों में से एक है। इस हॉर्मोन को 'हेप्पी हॉर्मोन्स' के समूह में रखा गया है। 'हेप्पी हॉर्मोन्स' नाम से ही हम समझ सकते हैं कि हमारी मनोस्थिति इस हॉर्मोन पर कितनी अधिक निर्भर है। यह जानकर आश्चर्य होगा कि सेरोटोनिन नामक इस प्रसन्नता के हॉर्मोन का 95% हमारे आंतों में ही बनता है। यानी हम जो कुछ भी खा रहे हैं, वह सीधे हमारे मन की सोच, प्रसन्नता आदि को प्रभावित कर रहा है।

गट–ब्रेन ऐक्सिस (जी.बी.ए) यानी आंत–मस्तिष्क अक्ष हमारे शरीर में स्थित है। इस अक्ष में केंद्रीय और आंतरिक तंत्रिका तंत्र के बीच द्विदिश संचार होता है, जो मस्तिष्क के भावनात्मक और संज्ञानात्मक केंद्रों को परिधीय आंतों के कार्यों से जोड़ता है। शोध में, हाल के अग्रिमों ने मस्तिष्क पर हो रहे इन प्रभावों पर आंत में स्थित सूक्ष्म जीवों के समूह यानी माईक्रोबाइयोम के महत्व का वर्णन किया है। आंत के माईक्रोबाईयोम और जी.बी.ए. के बीच की यह पारस्परिक क्रिया, द्विदिश रूप से प्रकट होती है। अर्थात् आंत के माईक्रोबाईयोम और मस्तिष्क के बीच सीधा और बहुत गहरा सम्पर्क एवं संबंध है।

हम सभी जानते हैं कि अंग्रेजी के शब्द 'जंक' का मतलब कचरा होता है। तब भी हम 'जंक फूड' खाने को गलत तो दूर की बात उल्टा ऐसा करने को प्रगति सूचक मानते हैं। यदि हम अपने आप को और अपने बच्चों को प्रसन्न और प्राकृतिक भोजन के बजाय कबाड़ या कचरा खिलाते हैं, तब हमें यह समझने के लिए रॉकेट साइंस की आवश्यकता नहीं है कि प्रसन्न हार्मोन की जगह कचरा हार्मोन का उत्पादन होगा। ऐसे में चौंकाने वाली बात यह है कि जब अप्रिय घटनाएं घटती हैं, तब हम सब आश्चर्यचकित क्यों होते हैं? जब हम स्वयं ही कृत्रिम भोजन के सेवन को प्रगतिशील मानते हैं, तब यह स्वाभाविक है कि हमारा मन भी कृत्रिम बनेगा, परिवार कृत्रिम बनेगा, समाज भी कृत्रिम बनेगा और फिर पूरा विश्व कृत्रिम बनेगा।

दुर्भाग्य से आज हम में से अधिकांश लोग प्रचार–प्रसार से प्रभावित होकर, भोजन में कृत्रिम स्वाद और कृत्रिम दिखावट पर ध्यान देते हैं। सोशल मीडिया पर भोजन का फोटो डालना इतना महत्वपूर्ण हो गया है कि हम किसी भी कृत्रिम दृष्टिकोण से अच्छे दिखने वाले ज़हर को भोजन मानने लग गए हैं। और यह सब विकास के नाम पर हमने वैध भी माना है। अपने बच्चों को भी यही सीखा रहे हैं। परिणामस्वरूप, हम दुर्भाग्यवश अपने मूल, प्राकृतिक भोजन से कोसों दूर हो चुके हैं।

इतने प्रकार से हम कृत्रिम हॉर्मोन, रसायनों आदि का सेवन

कर रहे हैं कि परिणामस्वरूप हमारे शरीर में हॉर्मोन का असंतुलन हो गया है। फलतः आज हम भोजन के नाम पर रसायन खाने में झिझकना तो दूर की बात, उल्टा गर्व की अनुभूति करते हैं। हम स्वयं पंचभूतों से बने हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश ही पंचभूत हैं। जब तक यह पंचभूत स्वस्थ रहेंगे तभी तक हमारा भोजन स्वस्थ रहेगा और हम स्वस्थ रहेंगे। विकास की आधुनिक परिभाषा से हमें अवश्य ऐसा प्रतीत हो सकता है कि पैसा हमारे जीवन का सार है। फलतः हम प्राकृतिक भोजन से इतने दूर हो जाते हैं की फिर जो भी विष भोजन के नाम पर हमें बेचा जाता है वही हमें खरीदकर खाना होता है। विष खाने के कारण जो भी पैसा हम कमाते हैं उसका एक बहुत बड़ा भाग अपने और अपने परिवार के उपचार और प्रसन्नता पर व्यय करना होता है। लेकिन स्वास्थ्य और प्रसन्नता के मूल में जो है उससे कोसों दूर होने के कारण केवल निराशा ही हाथ लगती है।

भोजन में, आज हम केलोरी, प्रोटीन, विटामिन, आइरन आदि तो नाप रहे हैं, लेकिन यह नहीं देख रहे हैं कि जो हम खा रहे हैं, वह हमारे शरीर और मन के लिए कितना अनुकूल है; हमारे पाचन तंत्र के लिए बना भी है कि नहीं; सात्विक, राजसिक और तामसिक गुणों में से किसकी प्रधानता है आदि। मनुष्य के लिए किसी भी भोजन की अनुकूलता या प्रतिकूलता प्रमुख होती है। यदि भोजन हमारे शरीर और मन के लिए प्रतिकूल है फिर चाहे उसमें कितने भी पोषक तत्व क्यों ना हो, उसका सेवन करने से लाभ से अधिक हानि ही होगा।

भौतिकी का एक सिद्धांत है, जो हमें यह बताता है कि ऊर्जा और द्रव्यमान (पदार्थ) विनिमेय हैं; वे एक ही चीज के विभिन्न रूप हैं। हमारे भोजन में भी केवल वजन, केलोरी, विटामिन आदि नहीं है, बल्कि किस सोच से उसे उपजाया गया, किस भावना से उसको पकाया गया, किस मंशा से उसको परोसा गया, यह सब भावनायें उस भोजन में निहित होती हैं।

हम सब पंचभूत, यानी आकाश, पवन, पृथ्वी, जल, अग्नि से बने हैं। पंचभूत अर्थात् प्रकृति। हम सब प्रकृति से ही बने हैं। हम सब उतने ही स्वस्थ और प्रसन्न हैं, जितनी स्वस्थ और प्रसन्न प्रकृति है। प्रकृति के अपने नियम होते हैं। हम यदि प्रकृति के नियम समझने में त्रुटि करते हैं, तब हमें समझना होगा कि हम क्षति प्रकृति को नहीं, बल्कि स्वयं को ही पहुँचा रहे हैं।

प्रकृति की प्रक्रियाएँ चक्रीय होती हैं, जैसे जल चक्र, पोषक तत्व चक्र, कार्बन डायआक्साइड चक्र, नाइट्रोजन चक्र आदि। इस समझ से दूर होकर हमने एक ऐसी वैकल्पिक दुनिया की संरचना करने की चेष्टा की है, जहां हमारे द्वारा परिभाषित 'प्रगति' रैखिक हो। हम भूल जाते हैं कि पैसे को मनुष्य ने बनाया है, प्रकृति ने नहीं। हम जैसे चाहे पैसे को परिभाषित कर लें। जैसे चाहे पैसे के मूल्य को बढ़ा–घटा लें, लेकिन प्रकृति तो अपने ही नियम से चलती है। प्रकृति को नहीं समझकर, उसका जो दोहन हम कर रहे हैं, इसका दुष्परिणाम हमें ही झेलना होगा और हम अब झेल भी रहे हैं।

आज कोरोना हमें इसी त्रुटि का आभास करवाने आया है। जिस वैकल्पिक दुनिया में हमने अपने मन से 'प्रगति' को परिभाषित किया है, उसी दुनिया में हमारे भ्रामक मापदंड हमें यह आभास करवा रहे थे कि मानो जैसे हम एक तीव्र गति से दौड़ते हुए घोड़े पर बैठ लगातार 'प्रगति' की नयी ऊँचाईयों को छू रहे हैं। कोरोना ने जैसे इस घोड़े की गति को एकदम से रोककर हमें वास्तविक दुनिया से पुनः परिचित करवाने का काम किया है। इस घोड़े पर बैठकर हमें हर जगह तथाकथित प्रगति तो दिख रही थी लेकिन जब हम थमे, तब हमने देखा कि ना स्वास्थ्य है ना प्रसन्नता ना इम्यूनिटी।

प्रकृति एक स्त्रीलिंग शब्द है। प्रकृति के संरक्षण का दायित्व भी हमेशा से स्त्रियों के पास ही था। हमें इस दायित्व को पुनः समझना है। हमारे लिए ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी। जैसे कि आभूषण आदि के धरोहर का दायित्व स्त्रियों का था वैसे ही देसी बीज, देसी गाय, मिट्टी, जल, वायु आदि दायित्व भी स्त्रियों का ही था।

प्रकृति की रक्षा करते हुए स्त्रियाँ सुनिश्चहित करती थीं की पूरा परिवार स्वस्थ और प्रसन्न रहे। मनुष्य के अलग–अलग प्रकृति के अनुसार कौन सा भोजन आदि उचित है, इसकी पारम्परिक समझ भी स्त्रियों के पास ही होती थी। परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य और प्रसन्नता का भी दायित्व स्त्रियों के पास था। परिवार स्वस्थ और प्रसन्न होगा तो समाज स्वतः ही स्वस्थ और प्रसन्न होगा वरना कुरीतियाँ और कुविचार समाज में आम हो जाएँगे। फिर चाहे हम जितने भी कानून क्यों ना बना लें सकारात्मक असर शायद ही दिखे।

किसी भी व्यक्ति को पहली शिक्षा उसे अपनी माँ से ही मिलती है। वो शिक्षा आधार होती है उस व्यक्ति के जीवन की। बाद में कितने भी गुरु आए उसके जीवन में आधार तो माँ से मिली शिक्षा ही रह जाती है। यहाँ भी शिक्षा एक स्त्रीलिंग शब्द है। किसी व्यक्ति के प्रथम गुरु होने के नाते केवल उस व्यक्ति का आधार ही नहीं बनता है, बल्कि भविष्य के पूरे समाज का आधार बनता है।

दुर्भाग्यवश हमने पिछले कुछ दशकों से जैसे विकास को परिभाषित किया है और जिस तरह से उसे मापने के लिए जी.डी.पी. जैसे मापदंड को बनाया है, समाज दिग्भ्रमित होता गया है। अब तो ये स्थिति है की पूरा समाज स्त्रियों के सभी दायित्व का केवल उपहास ही नहीं उड़ाता है बल्कि सभी दायित्व को हीन भावना से भी देखता है। जी.डी.पी. जैसे जाल को मनुष्य ने ही बनाया और स्वयं ही उसमें उलझ कर रह गया। आज जब समाज पैसों को ही जीवन का सार समझता है तो ऐसे दायित्व का महत्व समझना कठिन हो गया है। इन सब दायित्व का निर्वहन केवल स्त्री ही कर सकती है क्योंकि प्रसव पीड़ा जैसी स्थिति का सामना करने की शक्ति केवल स्त्री में ही होती है। प्रचार–प्रसार तंत्र से दिग्भ्रमित होकर समाज अपनी दूरदर्शिता खो बैठा। फलतः प्रकृति नष्ट हो गई, देसी बीज और देसी गाय भी लगभग विलुप्त हो गए। आज लोगों के पास पैसा भी है तो भी स्वास्थ्य है ना प्रसन्नता। सामाजिक स्वास्थ्य भी दिन प्रतिदिन गिरते जा रहा है। अब तो ऐसी घटनाएं हैं जिनके पीछे की समझ को समझना हमारी समझ से परे हो गया है।

कोरोना सम्भवतः समाज को पुनः जगाने आया है। उसने जो इन दायित्वों का उपहास कर त्रुटियाँ की हैं उसकी अनुभूति करवाने आया है। आज समाज महंगे अस्पताल, रसायन के रूप में दवाई और महंगे स्वास्थ्य बीमा में स्वास्थ्य और प्रसन्नता ढूँढ रहा है। कानून में सामाजिक स्वास्थ्य ढूँढ रहा है। पर केवल पैसे व्यय हो रहे हैं मिल कुछ नहीं पा रहा है। स्त्रियों में ही वो शक्ति है की पुनः अपने दायित्वों का निर्वहन कर प्रचार–प्रसार तंत्र के अपवित्र उद्देश्य को ध्वस्त कर सके। समाज स्वतः ही उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो जाएगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।
शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अर्थात्ः– सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुःख का भागी न बने।

हे भगवन हमें ऐसा वर दो!

यही भावना जैव विविधता के मूल में है। ऐसा बताया जाता है कि हमारे शरीर में 90% कोशिकाएँ माइक्रोब्ज यानी सूक्ष्म जीवाणुओं की है। सूक्ष्म जीवाणु जैसे कि बैक्टीरीया, फ़ंगस, वाइरस आदि। हमें लग सकता है कि कितना कचरा भरा हुआ है हमारे शरीर में। लेकिन इन ही सूक्ष्म जीवाणुओं के कारण हम सब जीवित हैं। यदि हमारा शरीर स्टेरायल हो जाए तब हम जीवित नहीं रहेंगे। हमारे जीवित रहने के लिए बहुत सारे अनिवार्य कार्य यही सूक्ष्म जीवाणु ही करते हैं। इम्यूनिटी सिस्टम, पाचन तंत्र, डीटॉक्स आदि सब में हमारे शरीर में स्थित इन खरबों सूक्ष्म जीवाणुओं की अनिवार्य भूमिका है।

ऐसे में इन सूक्ष्म जीवाणुओं के प्रति हमारी आधुनिक धारणा इतनी भिन्न क्यों है? इन सूक्ष्म जीवाणुओं में कुछ अच्छे होते हैं और कुछ बुरे। लेकिन प्रकृति ने इन दोनों प्रकारों के बीच संतुलन बना कर रखा है। यह इतना अद्भुत संतुलन है कि अच्छे जीवाणुओं की संगत में जो बुरे हैं वह या तो प्रभावहीन हो जाते हैं या वो अच्छे की तरह काम करने लगते हैं। लेकिन ऐसा तब तक ही होता है, जब तक दोनो प्रकार के सूक्ष्म जीवाणुओं के बीच संतुलन बना रहे। जैसे ही संतुलन बिगड़ेगा वैसे ही बुरे वाले हावी होने लगते हैं और अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होने लगती हैं।

आज भोजन के प्रति जब सोच इतनी भौतिकवादी हो गयी है, तब स्वाभाविक है कि भोजन हमारा पोषण की जगह विनाश कर रहा है। ऐसे में क्या यह आश्चर्य की बात है कि एक समाज के रूप में हम शारीरिक और मानसिक रूप से इतने बीमार होते जा रहे हैं? समय रहते नहीं सचेतने पर, स्थिति भयावह हो सकती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। स्वस्थ मन ही स्वस्थ परिवार की नींव बनता है। स्वस्थ परिवार ही स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। स्वस्थ समाज ही स्वस्थ विश्व को साकार रूप देता है। सर्वे भवन्तु सुखिनः को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए शुद्ध, प्राकृतिक, स्थानीय भोजन की महत्ता और अनिवार्यता समझना समय की मांग है।

जल संचयन : भविष्य की जरूरत

सुमित कुमार
बाह्य साधन : संपर्क अधिकारी, निगमित कार्यालय

कहा गया है कि ''जल ही जीवन है''। जल से ही हम हर चीज को जीवन देते हैं, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि हम यह कहें कि जल, मनुष्य को प्रकृति प्रदत सर्वोत्तम उपहार है। फिर भी हम इस उपहार के प्रति उदासीन रहते हैं। हमने पृथ्वी पर प्राप्त जल का एक–एक हिस्सा प्रदूषित कर दिया है कि यह कथनः– ''हर जगह पानी ही पानी है किन्तु पीने को एक बुंद प्राप्त नहीं'' सत्य होता दिख रहा है।

पृथ्वी पर जल, पृथ्वी के दो तिहाई हिस्से में पाया जाता है किन्तु पीने के लिए स्वच्छ एवं मीठा जल सिर्फ 0.002% है। ऐसी स्थिति में, जिस देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है और जहां की लगभग 70% जनसंख्या जीवनयापन के लिए कृषि कार्यों पर निर्भर है, वहां मॉनसून एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता प्रतीत हो रहा है। बहुल भारतीय जनसंख्या खाद्य एवं दलहनी फसलों की खेती पर निर्भर करती है, जो इनकी जीविका का मुख्य साधन है। इसलिय वर्षा काफी हद तक कृषि उत्पादन को प्रभावित करती है। मॉनसून में बदलाव, कुल खाद्यान्न उपज को और कृषि पर बृहद रूप से आधारित भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर देता है।

जल का महत्व मानव जाती को सिंधु घाटी सभ्यता और मेसोपोटामिया सभ्यता के समय से ज्ञात है। ये सभी सभ्यतायें नदियों के किनारे ही फली–फुली। ऐसी जगहों, जहाँ वर्षा अनियमित और कम है, जैसे दक्कन और रेगिस्तान के क्षेत्र, वहां पानी जमा करने के लिए कई टैंक बनाकर रखे जाते हैं।

विश्व विरासत में शामिल, रानी की वाव (गुजरात) एक सीढ़ीदार कुएं का उदाहरण है जो कि सूखे क्षेत्रों में बनाई जाती है।

वर्तमान में वर्षा जल संचयन एक अकेला विकल्प प्रतीत होता है जो कि तेजी से जल की कमी के बढ़ते खतरे का मुकाबला करने में व्यवहारिक रूप से आवश्यक भी है। जल संचयन, जल को संचय करके उसका उपयोग सिंचाई और अन्य कार्यों में किए जाने की तकनीक है। वर्षा जल को संचयित करके और इसे भुमिगत टैंकों में संग्रहित करके रखना, आवासीय क्षेत्रों के लिए एक अच्छी प्रथा है। यह परिवार के नियमित पानी के खर्च को 50% तक पूरा कर सकता है।

यह प्रक्रिया भूमिगत जल स्तर को फिर से भरने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह प्रक्रिया व्यापक रूप से बड़े उद्योगों एवं बड़ी इमारतों में उपयोग में लाई जाने लगी है। जल

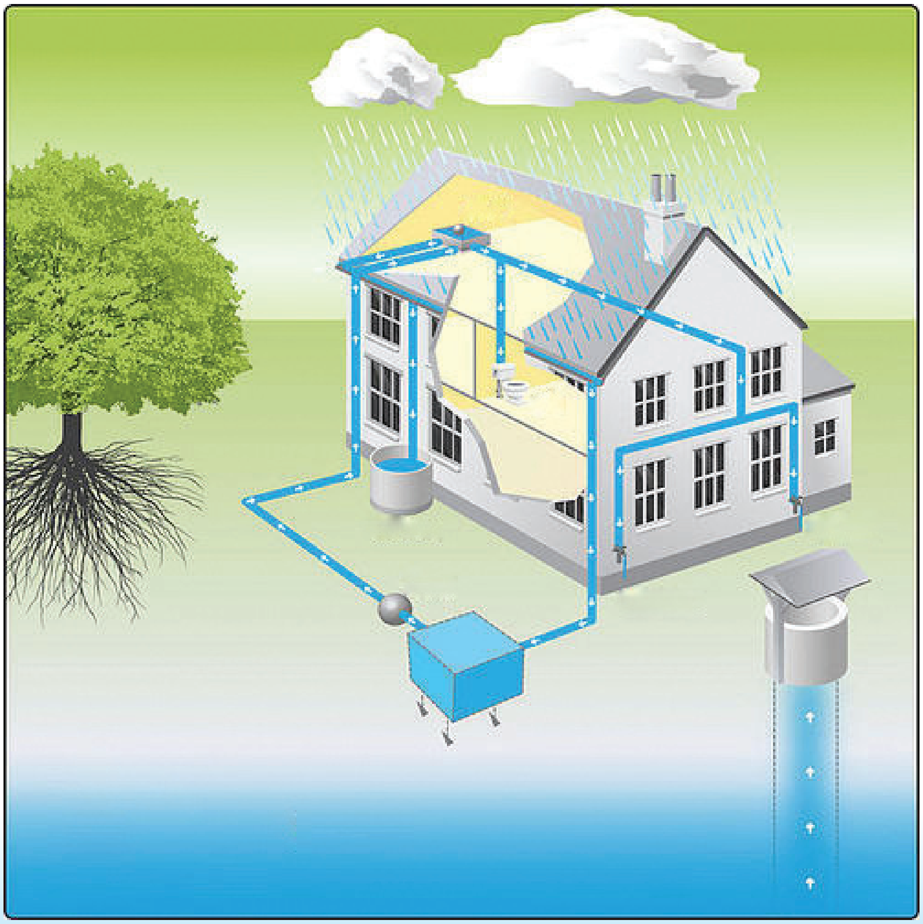

संचयन वर्षा और मॉनसून के अनियमित होने पर जल की आपूर्ति में लाभदायक होता है। यह मिट्टी की उपरी परत को बह जाने से भी रोकने में सहायक है। जल संचयन भूमिगत जल स्तर को फिर से भरने के लिए वर्षा जल के बाद महत्वपूर्ण उपकरण रहा है। यह विधि व्यापक रूप से स्वीकृत हो गई है एवं बड़े उद्योगों एवं भवनों में भी इसका उपयोग किया जा रहा है। यह अभ्यास अनिश्चित मॉनसून के खिलाफ सुरक्षा का भी एक उपाय है। जल संचयन न केवल हमें पानी की कमी से बचाता है बल्कि खाद्य सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। इस प्रकार जल प्रबंधन मृदा प्रबंधन से जुड़ा है और एक–दूसरे की सफलता सुनिश्चित करते हैं। इतना ही नहीं, बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता वाली बड़ी निर्माण इकाइयों के लिए भी वर्षा जल संचयन समान रूप से फायदेमंद है। यहां तक कि उन निचले इलाकों में भी जहां जल निकासी व्यवस्था पर अधिक कर लगाने के कारण बाढ़ की आशंका रहती है, जल संचयन सही समाधान है। वर्षा जल संचयन प्रणालियों का उपयोग करके, भूजल स्तर को रिचार्ज करने में मदद करता है। यह हरियाली को बढ़ने में मदद करता है और सिंचाई के लिए जलाशय भी बनाता है। गटर ओर फिल्ट्रेशन सिस्टम के द्वारा भंडारण टैंकों को वर्षा जल से भरा जा सकता है और बाद में पीने के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग किया जा सकता है। इसके प्राथमिक कार्यों में सिंचाई है। वर्षा जल एकत्र करने का सबसे अच्छा तरीका छतों के माध्यम से होता है क्योंकि इसमें प्रदूषण कम से कम होता है और लागत भी कम होती है। इस पानी को प्री–फिल्टर करना भी सरल होता है। परिदृश्य (लैंडस्केप) सिंचाई प्रणाली में पानी के पूरक स्त्रोत के रूप में वर्षा जल का उपयोग करना सूखाग्रस्त क्षेत्रों में किसानों के लिए वरदान है। यह कम उपकरण द्वारा अच्छी तरह से कार्यरत है। इसे प्री–फिल्टर करना भी आसान है। चूंकि वर्षा जल प्रदूषकों के साथ–साथ लवण, खनिज और अन्य प्रदूषकों, मानव निर्मित प्रदुषकों से मुक्त रहता है इसलिए इससे पौधों की वृद्धि में सुधार होता है।

आधुनिक भारत में बांधों ने बाढ़ नियंत्रण और सिंचाई के कई अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन कई बार इसके नतीजे विनाशकारी रहे हैं। कई गांव जलमग्न हो चुके हैं और लोगों को विस्थापित होना पड़ा है। हाल के दिनों में फरीका बराज के कारण, कोसी में बार–बार बाढ़ आने की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। बांधों के पास नदियों के मार्ग को बदलने का तरीका है और इस हस्तक्षेप की मानवीय, वित्तिय, सामाजिक और पर्यावरणीय लागत बहुत अधिक है। हाल के दिनों में जल प्रबंधन के पारम्परिक ज्ञान का छोटे पैमाने पर उपयोग करने का प्रयास किया गया है।

जीवन के लिए पानी

हमारी प्राचीन संस्कृति प्राकृतिक संसाधनों के साथ मानव के शांतिपूर्ण सह अस्तित्व पर आधारित है।

गांधीजी ने कहा था– ''पानी दुनिया में जरूरत के लिए पर्याप्त है, लेकिन लालच के लिए नहीं। पानी–जीवन का अमृत–जिसे वैज्ञानिक विभिन्न ग्रहों पर खोजने की कोशिश करते हैं, हमारे अपने ग्रह पर मौजूद नहीं रहेगा''।

इस स्थिति से तभी निपटा जा सकता है जब पानी के असंधारणीय उपयोग को रोक दिया जाए और इसके साथ ही जल धारण करने के लिए पुराने ढ़ाचों का पुनरूद्धार किया जाए।

इस प्रकार, हमें जल को अच्छी तरह से प्रबंधित करने की आवश्यकता है। किसी भी योजना को सफल होने के लिए विभिन्न हितकारी कार्यों को शामिल करना चाहिए और अंत में एक सुखी जीवन जीना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण एक चुनौती

प्रभाकर शर्मा
फिटर ग्रेड II, बठिंडा यूनिट

अति सर्वत्र वर्जयेत अर्थात
अति सदैव वर्जित है।

यह प्रत्येक परिस्थिति में वर्णनीय है प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से लेकर मानव निर्मित विकसित उत्पादों का आविष्कार और प्रयोगशाला इसमें सम्मिलित हैं। आज हमारे सामने ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बहुत ही विकट, विकराल रूप में प्रस्तुत है। जलवायु परिवर्तन के कारण गर्म होती जा रही हमारी धरती पर निरंतर बदलावों के कारण इस पर चर्चा और भी प्रासंगिक हैं ब्रह्मांड के अनेकानेक ग्रहों में अभी तक हमारे ज्ञातग परीक्षणों के धरती पर ही जीवन के आधार व अनूकूल माहौल की जानकारी हमें देखने को मिलती है। धरती पर जीवन का स्वरूप केवल प्राकृतिक संतुलन के कारण ही संभव हो सका है। ग्रीन हाऊस गैसों जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, मिथेन इत्यादि के द्वारा सूर्य की किरणों के उत्सर्जन व अवशोषण की प्रक्रिया से ही धरती पर जीवन संभव हो पाया। ग्रीन हाऊस गैस की लेयर द्वारा ही धरती का तापमान संतुलित है इसे ऐसे समझा जाए कि यदि रात में सूर्य की गर्मी का आवश्यक अंश पृथ्वी के वातावरण में न हो तो पृथ्वी का तापमान शून्य से कई डिग्री नीचे गिर जाएगा जिससे जीवन की संभावना समाप्त हो जाएगी।

प्रकृति की संतुलित व्यवस्था के फलस्वरूप ही जीवधारी व वनस्पति मिलकर ग्रीन हाऊस गैसों व आक्सीजन के उत्सर्जन व अवशोषण का ऐसा चक्र बनाते हैं जिससे जीवन उपयोगी पर्यावरण का निर्माण संभव हो पाता है। पर्यावरण संरक्षण आज धरती पर जीवन को बचाने हेतु सर्वथा व सर्वोपरि आवश्यक हैं। अपने क्रियाकलापों की समीक्षा करके इस दिशा में कठोर नियमों का अनुपालन ही सदैव प्रभावी होगा अन्यथा अनदेखी के परिणाम तो आज सभी के समक्ष प्रस्तुत हैं। हमारे देश में ही हिमाचल और उत्तराखंड में पहाड़ों का दरकना, केरल और उत्तराखंड में अधिकाधिक वर्षा से भीषण संकट उत्पन्न होना सभी उदाहरण दर्शाते है कि ग्लोबल वार्मिंग हेतु हमारी स्वंय की जिम्मेवारी अधिक है बजाय दूसरों पर दोषारोपण के समुद्र का बढ़ना भी चिंता का विषय है। क्योंकि इससे जहाँ तटीय इलाकें डूबते जा रहें है। वहीं पानी भी प्रचुर मात्रा में अम्लीय होता जा रहा है। जिससे आसपास के जीवन पर तो प्रभाव पड़ ही रहा है। अपितु अम्लीय वर्षा के कारण दूर दराज क्षेत्रों की फसलों पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं। अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है किन्तु यदि हम न चेते तो अवश्य ही जल्दी खत्म होने में विलंब भी नहीं होगा। जीवो और पेड़ पौधो की कई जातियाँ, प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर है। पूरे विश्व में जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। हमें व्यक्तिगत स्तर पर आवश्यक कदम उठाकर इस दिशा में सुधार की पहल करना जरूरी हैं। प्राकृति से खिलवाड़ पर हमें रोक लगानी होगी। संसाधनों के अति दोहन और उपयोग पर अंकुश लगाकर हम इस दिशा में सकारात्मक कदम उठा सकते हैं। अपने खाद्य पदार्थों की बर्बादी और जल के अति दोहन पर रोकथाम करके कृषि क्षेत्र के दबाव को कम करने की दिशा में सार्थक कदम उठाऐ। अपने गृह उपयोगी वस्तुओं का इस्तेमाल भी रिपेयर इत्यादि द्वारा ज्यादा से ज्यादा उपयोगी बनाए ताकि उत्पादों के अति निर्माण को कम किया जा सके।

ऊर्जा की बर्बादी कम करके अपनी आवश्यकताओं का पुनः निरीक्षण करके ही हम अपना योगदान भविष्य के इस खतरें से निपटने में दे सकते हैं। तथा वसुदैव कुटुंबकम की आवधारणा को संचित रख सकते हैं।

युवाओं में प्रतिस्पर्धा का बढ़ता स्तर

ऋचा बाला
बाह्य साधनः सहायक (विपणन), निगमित कार्यालय

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामान्यतः हम समाचार पत्रों, सोशल मीडिया इत्यादि पर यह समाचार प्राप्त करते है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में अव्वल छात्रों के प्रतिशत 99.4, 99.5 रही। कई बार प्रतिशतता इससे भी अधिक होती हैं। वहीं दूसरी लाइन में अव्वल छात्राओं की खूबियां बखूबी वर्णित होती हैं। किन्तु यह समाचार शोक संतप्त तब होता है जब हम यह देखते हैं कि कुछ कम प्रतिशत लाने वाले छात्र या छात्रा नें या फिर किसी अनुतीर्ण छात्र या छात्रा ने आत्महत्या कर ली। ऐसे मामलों में अत्याधिक तनाव आत्महत्या का मुख्य कारण सिद्ध होता हैं।

मीडिया भी ऐसे समाचार को मुख्य आकर्षण बनाकर प्रस्तुत करती है, जिनमें दोस्तों एवं परिवार को भी शामिल किया गया होता है, जो कि लोगों को भी सुरूचि पूर्ण लगता है। किन्तु यह अनजाने में ही सामाजिक प्रणाली की विफलता को प्रदर्शित करता है। ऐसे कई उदाहरण प्रतिस्पर्धा के विकास का विश्लेषण करने के लिए हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं।

प्रतिस्पर्धा तब तक ही अच्छी है, जब तक कि वह सफल होने के आकर्षण को दूर करने का कारक न बनें। प्रतियोगिता लक्ष्योन्मुखी प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए होती है, परन्तु यदि यह स्वामित्व के एजेंडे के आधार पर मुल्यों का त्याग करके या अनुचित साधनों के उपयोग द्वारा दूसरों पर हावी होती है, तो यह श्राप के समान है। हमें यह समझना आवश्यक है कि युवाओं ने प्रतिस्पर्धा शब्द को किस स्तर पर समझा व महसूस किया है।

''प्रतिस्पर्धा'' का मुख्य अर्थः–लक्ष्योन्मुखी प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए हैं। प्रतिस्पर्धा अपने शाब्दिक अर्थ में सहयोग का विपरीत रूप है। यह अस्तित्व में तब आती है जब दो और अधिक व्यक्ति, समूह, समुदाय एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत होते हैं।

युवाओं में प्रतिस्पर्धा वैश्विक स्तर पर अस्तित्व में है और भारतीय युवा पीढ़ी इसमें कोई अपवाद नहीं हैं। अच्छे नंबर लाने से लेकर, अच्छी नौकरी पाने तक, यह एक सामाजिक पहचान के लिए कभी न खत्म हो सकने वाली अंधी दौड़ बनती जा रही है।

प्रतिस्पर्धा और सख्त मानसिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हम हर जगह चूहा दौड़ का हिस्सा हैं, लड़कों के लिए इंजीनियर और लड़कियों के लिए डॉक्टरी की ओर मुख्य झुकाव की मानसिकता है। यह युवाओं के विकास के मार्ग की व्याख्या करता है कि हमारे युवा किस दिशा में अग्रसर हैं।

यह स्थिति तब और विकट हो जाती है जब इस प्रतिस्पर्धा के कारण छात्रों पर नकारात्मक और अनावश्यक दबाव पड़ता है। यह दबाव इतना अधिक होता है कि छात्र कई बार अवसाद में चले जाते हैं। दुर्भाग्य से, समर्थन के अभाव में, युवा पीढ़ी भारी दबाव के आगे झुकने लगती है और कुछ गलत कदम उठा लिए जाते हैं।

हाल के ही खबरों में, कोटा में लड़की ने आत्महत्या के कारणों में अपनी मां का उल्लेख किया है, जिसमें उसने लिखा कि उसे विज्ञान न पढ़ पाने के लिए प्रताड़ित किया जाता था। युवाओं को अपने माता–पिता, साथियों एवं समाज की आकांक्षाओं

और अपेक्षाओं के लिए बलि का बकरा बनते देखना अत्यंत निराशाजनक है।

यदि एक रबर को भी एक निर्धारित सीमा से ज्यादा खींचा जाए तो उसके दुष्प्रभाव दिखने तय हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली में भी यह रूपरेखा विकसित है कि यह सफलता और असफलता को डिग्री और प्राप्त अंकों के मापदंड पर निर्धारित करती है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिकों को तैयार करना नहीं होना चाहिये जो 100% अंको से उत्तीर्ण हों पर सामाजिक एवं मानसिक तनावों को झेलने में अक्षम हों। अगर युवा उन अवसर को संभालने में अक्षम हैं जो जीवन में प्राप्त हो रहें तो यह शिक्षा व्यवस्था की विफलता है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को आंतरिक आवाज खोजने के लिए एक मंच प्रदान करना है।

प्रतिस्पर्धा और भ्रष्टाचार ने युवाओं को पथ भ्रमित कर दिया है। वर्तमान में प्रतिस्पर्धा को एक अलग नज़रिये से देखे जाने की आवश्यकता है। प्रतिस्पर्धा की भावना किसी व्यक्ति की श्रेष्ठतम प्रतिभा को उजागर करना है। यह किसी भी व्यक्ति को दबाव से बाहर आने में भी सहायक होती है तथा अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाने और हमेशा कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती है। यह व्यक्तियों को अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदारी का दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करती है। अतः बृहद दृष्टिकोण में, उत्कृष्ट प्रतिस्पर्धा स्वयं के साथ प्रतिस्पर्धा है।

बिल गेट्स का कथन हैः–''मैं किसी और से नहीं अपितु स्वयं से प्रतिस्पर्धा में हूं। मेरा लक्ष्य स्वयं को लगातार बेहतर बनाना है।''

सकारात्मक और नकरात्मक प्रतिस्पर्धा के बीच बहुत बड़ा अंतर है। दूसरे क्या कर रहें या उच्च वेतन वाली नौकरी क्या है, इसका पारंपरिक रूप से पालन करने के स्थान पर युवाओं के लक्ष्यों को उनकी रूचि के प्रति सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए छात्र की पसंद एवं अभिरूचि को सशक्त किया जाना चाहिए।

आज के युवा को सीख दिए जाने की आवश्यकता है कि सफलता प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा ही एकमात्र रास्ता नहीं है। प्रतिस्पर्धा आवश्यक तो है परन्तु उत्कृष्टता का अंत नहीं। रूढ़िवादिता को तोड़ने और अपनी खुद की एक पहचान बनाने वाले लोगों जैसेः– बिल गेट्स, स्टीव जॉब्स, एलॉन मस्क, धीरूभाई अंबानी आदि की सफलता की कहानियां पाठ्यक्रम में शामिल की जानी चाहिए।

युवा हमारे देश की अमूल्य संपत्ति है। उन्हें अपने प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता की पहचान कर उसके उत्थान/संवर्धन के लिए प्रयत्न करना चाहिए। प्रतिस्पर्धा दोनों रूपों में मौजूद है–सकारात्मक और नकारात्मक यह हमारी जिम्मेदारी है कि अपने देश के उत्थान के लिए हम स्वयं को किस प्रकार की प्रतिस्पर्धा में अग्रसर कर रहे हैं। वर्तमान में भारत की युवा जनसंख्या लगभग 35.6 करोड़ है, जो कि 10–24 वर्ष के आयु वर्ग में है। यह हमारे देश के लिए अवसरों से पूर्ण है यदि इसे सही दिशा दी जाए। इसके परिणामस्वरूप देश उभर कर सामने आ सकता है, जिसमें एक बड़ा परिवर्तन करने की विशाल क्षमता है। वैश्विक स्तर पर एक बड़ा एवं क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए युवाओं को प्रतिस्पर्धा की सच्ची भावना सकारात्मक रूप में समझनी चाहिए। यह समय विभिन्न क्षमताओं को तलाशने, पारंपरिक सेटअप तोड़ने और सफलता के लिए अपना रास्ता बनाने का है। स्वयं के प्रतियोगी बने एवं हर एक अवसर को प्राप्त करना लक्ष्य बनाएं।

अगर प्रतिस्पर्धा को उसकी मूल भावना के मुल्यों पर देखें तो यह हर क्षेत्र में युवाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है हेनरी जॉन कैसर (अमेरिकी उद्योगपति) जिन्हें आधुनिक अमेरिकी जहाज निर्माण के जनक के रूप में जाना जाता है, के अनुसार *“निर्भीकता से, साहसपूर्वक, निडर होकर जियो। अपने भीतर के सर्वश्रेष्ठ को सामने रखने के लिए प्रतिस्पर्धा में पाए जाने वाले स्वाद का आनंद लो।”*

मृत्यु पत्र

योगेश आनन्द
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

एक पूर्ण गुरू ने एक सेठ को नाम दीक्षा देने के पश्चात् अखंड सुमिरण करने के लिए आग्रह किया। परन्तु सेठ जी तो पूर्ण रूप से संसारी थे। वे अपने काम धन्धे में फंसे हुए तथा धंसे हुए थे। नाम सुमिरण का समय बिल्कुल नहीं निकाल पाते थे। कुछ वर्षों के बाद गुरूजी ने सेठ से पूछा कि आप अपना कार्य कितनी देर प्रतिदिन करते हो? सेठ जी ने कहा, ''प्रभु मेरी 10 फैक्टिरयां अमेरिका में हैं, 10 लंदन में, 15 कोलकाता में और 12 दिल्ली में हैं। मेरे शयन कक्ष में 20 दूरभाष लगे हुए हैं मै सारा दिन उन को सुनता रहता हूं और केवल रात के 3 घंटे तक सो पाता हूं। अतः सारा दिन मैं अपना काम करता रहता हूं। ''

गुरूजी ने कहा सेठ जी यह तुम्हारा काम नहीं है। यह तो दुनियादारी के काम हैं। तुम्हारा असली काम तो भजन सुमिरण द्वारा प्रभु प्राप्ति तथा आत्म प्राप्ति है, उसे आप बिल्कुल भूल गये हैं। सेठ जी ने कहा, ''प्रभु आप मेरे ऊपर एक कृपा करें जब मेरी मृत्यु निकट आए तब आप एक पत्र लिख कर मुझे सूचित करना, मैं सब कुछ त्याग कर भजन सुमिरण में लीन हो जाऊंगा। इस प्रकार मेरी आत्मा का कल्याण हो जायेगा।''

20 वर्ष बाद जब सेठ जी का अंतिम समय आया तब उस ने गुरू महाराज को याद किया। श्री गुरू जी महाराज शीघ्र प्रकट हो गये। सेठ जी ने उन को पत्र न लिखने का उलाहना दिया। तब गुरू जी महाराज ने कहा सेठ जी आप को एक नहीं पांच पत्र भेजे गये और आप ने उन की बिल्कुल परवाह नहीं की तब गरू जी ने उन पांच पत्रों का वर्णन इस प्रकार किया।

पहला पत्रः- आप की कनपटी के पास सफेद बाल आया जो बुढ़ापे की सूचना देता रहा और उस के बाद आप के समस्त बाल सफेद हो गये परन्तु आप ने उन को डाई करवा लिया।

दूसरा पत्रः- आप की दृष्टि कमजोर हो गई परन्तु आप ने ऐनक लगा कर अपना कार्य कर लिया। अन्दर की दृष्टि नहीं खोली।

तीसरा पत्रः- आप के दाँत गिरने लगे और धीरे–धीरे सब गिर गये, परन्तु आप ने नया जबड़ा लगवा कर अपना कार्य कर लिया।

चौथा पत्रः- आप को सुनना कम हो गया ताकि आप जगत को सुनना बन्द कर के भीतर के अनहद नाद को सुन सकें। परन्तु आपने मशीन लगा कर अपना कार्य कर लिया।

पांचवा पत्रः- श्री गुरू जी ने कहा,'' सेठ जी आप के घुटने जवाब दे गये ताकि आप एकान्त में बैठ कर प्रभु नाम का सुमिरन कर सकें। परन्तु आप ने लाठी का सहारा लेकर अपना कार्य कर लिया।''

जब श्री गुरू जी महाराज ने 5 पत्रों का वर्णन किया तब सेठ जी की आंखें खुलीं परन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि बीता समय वापस नहीं आता। अब सेठ जी हाथ मल–मल कर रोने लगे और काल व्याल ने उनको डस लिया।

प्रिय पाठकों, वह घटना केवल सेठ जी की नहीं मेरी और आप की भी है। हम संसार के धंधों में इतने व्यस्त हैं कि हमें मृत्यु कभी नजर ही नहीं आती और पश्चाताप के आंसु बहाते हुए हम संसार त्याग कर चले जाते हैं।

कर भला सो हो भला

मोनिका
बाह्य साधन : वरिष्ठ सहायक, (सूचना प्रौद्योगिकी)
निगमित कार्यालय

यह नीतिवचन शायद दुनिया के सभी देशों में लोकप्रिय है। अधिकांश लोग इसे सत्य भी मानते हैं, क्योंकि यह सभी के द्वारा स्वीकार किया जाता है। लेकिन उन लोगों की संख्या बहुत कम है, जो यह सत्य पहचानकर इसके अनुसार जीना चाहते हैं। अगर हम टीवी या इंटरनेट देखते हैं या इंटरनेट पर कुछ पढ़ते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि लोग इस बात में अभी विश्वास नहीं करते। सभी जगहों पर अनुभव कर सकते हैं कि लोग सिर्फ अपने–अपने काम में संलग्न हैं, उनके सपने बहुत बड़े हैं, जिन्हें मन पूरा करने के लिए पागल हैं। जैसे एक टॉप कॉलेज में पढ़ना उसके बाद एक उच्च कोटी का काम मिलना, सफल बनना, अमीर बनाना। लेकिन जिन्दगी में इसका मतलब क्या है ? हम सभी मर जाते हैं और हम अपने पैसे से खुद को सुरक्षित नहीं कर पाते। जिन्दगी के मतलब के बारे में शायद मरने के आसपास ही सोचने लगते हैं, और जीवन के बहुमूल्य क्षण खो देते हैं।

इस नीतिवचन के संबंध में मुझे अलग–अलग उम्र के लोगों के अलग–अलग विचार मिले। उनमें से युवा लोग कहते हैं कि वे दूसरों की मदद नहीं करते क्योंकि इससे उस व्यक्ति की ओर से सिर्फ नुकसान आता है। एक और युवा ने बताया कि वो दूसरों की चिंता बिलकुल नहीं करता, सब भट्टी में जा सकते हैं। एक मध्यम उम्र के आदमी ने लिखा कि वह मदद करना महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि वह मदद किसी दूसरे रूप में वापस आती है, और शायद सिर्फ हमारा दृष्टिकोण गलत है। संसार में हम लोगों के साथ जैसा व्यवहार करते हैं उसी प्रकार का व्यवहार वे हमारे साथ करते हैं। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि दूसरे लोग संकट के समय हमारी सहायता करें तो हमें भी संकट की घड़ी में उनकी सहायता करनी चाहिए। मधुमक्खी और कबूतर की कहानी इसी तथ्य को प्रकट करती हैं।

एक समय की बात है। मधुमक्खियों के एक झुंड ने नदी के किनारे एक विशाल वृक्ष पर अपना छत्ता बना रखा था। वे प्रतिदिन फलों से शहद लेतीं और अपने छत्ते पर इकट्ठा करती थीं। एक दिन एक मधुमक्खी को प्यास लगी और नदी पर पानी पीने चली गई। परंतु जैसे ही वह नदी पर पानी पीने के लिए झुकी, पानी की तेज धार उसे साथ बहा ले गई। वह बचने के लिए हाथ–पाँव मारने लगी ओर सहायता के लिए भी पुकारने लगी। सौभाग्यवश, उस समय वृक्ष पर एक कबूतर बैठा हुआ था। उसने मधुमक्खी को डूबते हुए देखा तो वह उसे बचाने का उपाय सोचने लगा। कबूतर ने उपाय सोचकर तुरंत वृक्ष से एक पत्ता तोड़ा और उसे पानी में मधुमक्खी के आगे गिरा दिया। मधुमक्खी झटपट पत्ते पर चढ़ गई। कुछ देर बाद जब उसके पँख सूख गए तो वह उड़ कर कबूतर के पास गई ओर उसे अपनी सहायता करने के लिए धन्यवाद दिया। कुछ महीनों बाद एक दिन कबूतर एक पेड़ पर सुस्ता रहा था कि कहीं से वहाँ एक शिकारी आ गया। कबूतर को देखकर शिकारी की आँखों में चमक आ गई। शिकारी ने अपना धनुष उठाया ओर कबूतर पर तीर से निशाना साध लिया। अपना जीवन खतरे में देख कबूतर ने उड़ने का प्रयास किया किन्तु वृक्ष के ऊपर एक चील को मँडराता देख वह ऐसा नहीं कर पाया। उसकी तो वही दशा हो गई थी, एक तरफ कुँआ, दूसरी तरफ खाई। हर तरफ मौत ही थी। भाग्यवश ठीक उसी समय वहाँ पर कहीं से वही मधुमक्खी आ गई, जिसकी सहायता कबूतर ने की थी। वह अपने लिए शहद ढूँढ रही थी। मधुमक्खी ने कबूतर को देखते ही पहचान लिया। वह पेड़ के नीचे शिकारी और पेड़ के ऊपर चील को मँडराता देखकर समझ गई कि कबूतर का जीवन खतरे में है। इसलिए वह उड़ कर शिकारी के पास गई। उसने शिकारी की दाई बाँह पर अपना डंक मार दिया। शिकारी ने दर्द से अपना हाथ झटका तो उसका निशाना चूक गया। तीर छुट कर कबूतर के बजाय चील को लग गया। चील जमीन पर आ गिरी। चील को मरा देख कर कबूतर अपनी सुरक्षा के लिए वहाँ से उड़ गया। शिकारी भी अपने भाग्य को कोसता हुआ वहाँ से चला गया। इस प्रकार मधुमक्खी ने कबूतर के उपकार का बदला चुकाया।

सपना

डॉ0 विजयलक्ष्मी एस
उप प्रबंधक (राजभाषा), उद्योगमंडल यूनिट

रानी टीचर के मन में अतीत की यादें उभर आईं। जीवन के सपनों को पूरा करने के लिए मानव कितना प्रयास कर रहा है। स्वयं के लिए क्या निर्णय लिए, नारी स्वतंत्रता के लिए कई भाषण दिए, कितनी बैठकों में अध्यक्षा बनीं, पारिवारिक बंधनों से मुक्त होने की इच्छा में शादी भी नहीं की, परन्तु अब स्थिति क्या है, भाई और बहन अपने परिवार के साथ जीते हैं। माता पिता भी चले गये। अपनी उम्र भी 56 वर्ष हो गई। स्वास्थ्य भी उतना अच्छा नहीं, समय–असमय पर नींद आती है और कुछ तनाव के कारण मन भी दुर्बल हो चला है। वह अपने शरीर को देखने लगी, शरीर भी अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रण में नहीं है, कभी–कभी सिर दर्द होने से पुस्तकों को पढ़ना भी संभव नहीं हो पाता। टीचर सोचने लगी कि जन्म होने से अब तक कितने वर्ष ये मन और तन एक साथ समन्वय में था, अब कुछ विश्राम चाहिए।

स्कूल के बच्चें के सामने अपना अधिकतम समय व्यतीत किया है। स्कूल में हर वर्ष नए–नए बच्चों से परिचित होना और उनके साथ समय बिताना मन पसंद काम ही था। लेकिन सेवा के अंतिम दिनों में क्यों ऐसी स्थिति हो गई –

30 वर्ष की लंबी सेवा के पश्चात् रानी टीचर सेवानिवृत्त होने की तैयारी कर रही थी। मार्च माह के अंतिम सप्ताह में सेवानिवृत्त होने वाली टीचर को स्कूल से उचित बिदाई देने का प्रबंध भी किया जा रहा था। परन्तु दूसरे सप्ताह के अंत में परिस्थितियां विपरीत हो गईं और कोविड 19 वैश्विक महामारी के कारण बैठक या समारोह आयोजित करने पर सरकार की ओर से प्रतिबंध लगा दिया गया। मार्च 31 को औपचारिक बैठक या बिदाई समारोह न हो पाने के कारण सेवानिवृत्ति तो बस नाममात्र की ही रह गई।

कोविड 19 वैश्विक महामारी के कराल हस्तों ने कितने ही जीवन का नष्ट किया है। इसके चलते आने–जाने, आपस में बातचीत करने, यात्रा करने, स्वतंत्रत जीवन बिताने, काम करने, कमाने, खाने–पीने और पढ़ाई आदि को रोका गया है।

अकेलेपन के कारण मन तड़पने लगा, सपनों में अभी केवल बीती हुई बातों की ही याद है। स्वतंत्र रूप से जीवन बिताना अब असंभव है। बाहर जाने या अन्य क्रियाकलापों में भाग लेना अनुपयुक्त है। किसी स्थान पर कन्टेनमेन्ट है तो किसी स्थान पर लॉकडाउन। महामारी के कारण कभी–कभी किसी स्थान को माईक्रो कनटेनमेंट बनाते हैं और कई लोगों को क्वारन्टीन में रखते हैं।

पड़ोस में ही बहन रहती है, परन्तु टीचर के घर की ओर देखती तक नहीं। केवल देखने या बातचीत करने से भी उसे भय लगता है। ऐसा विचार उनके मन में है कि अपने को छोड़कर सभी को महामारी है। रोग के संक्रमण का समय है और इसलिए सभी से दूरी का पालन करना अच्छा है। यह अपने आप को ही नहीं, समाज की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है।

टीचर को अपने बहन को देखने की इच्छा हुई। उसने बहन के घर जाने को निर्णय लिया। पहले लैन्ड लाइन पर फोन करने का प्रयास किया, तत्पश्चात् मोबाइल नंबर डायल किया। लेकिन किसी ने भी फोन नहीं उठाया, थोड़ी देर प्रतीक्षा कर पुनः फोन डायल किया, परन्तु कोई फायदा नहीं। रानी ने सोचा कि जानबूझकर ही फोन नहीं उठा रहे।

मुंह पर मास्क, उसके ऊपर फेस शील्ड, हाथों में ग्लव्स और सानिटाइज़र पास रख टीचर बहन के घर की ओर चल पड़ी। पहला टीका भी लग चुका है। इतने उपायों के साथ होने पर भी बहन के पास तक पहूंचने में उसके मन में कुछ शंका थी। गेट पर कॉलिंग बेल है, टीचर को मालूम है कि गेट पर कैमरा लगा है और घर में से गेट पर खड़ी हुई टीचर को देखा जा सकता है। पंद्रह मिनट तक टीचर गेट खुलने की प्रतीक्षा में गेट पर खड़ी रही पर कोई भी उसके स्वागत के लिए नहीं आया।

अपने घर वापस आकर टीचर ने कुछ सामान समेटकर रखा। टीचर ने निर्णय लिया कि पास में ही जो वृद्ध सदन है, उधर जाना ही अच्छा है क्योंकि इस समय औरों की सहायता के बिना कुछ नहीं हो पाएगा। होस्टल आदि सभी कुछ बंद है, इतना ही नहीं होस्टल जाने से कोई फायदा भी नहीं होगा। अकेलापन ही एक मात्र समस्या नहीं अपितु उम्र बढ़ जाना भी है।

टीचर का स्वावलंबन में अधिक विश्वास है। जब वह वृद्धासदन के गेट पर पहूंची, तो कई लोग उनके स्वागत के लिए तैयार होकर आगे आए। सभी लोगों ने मास्क और ग्लव्स पहनकर जुड़े हाथों से टीचर का स्वागत किया।

प्रभु और दृढ़ विश्वास

श्रीमती किरण बाला
अनुभाग अधिकारी, स्वाथ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
धर्मपत्नी श्री योगेश आनंद, अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी पति–पत्नी हर समय भक्ति में लीन रहते थे। दोनों को प्रभु पर दृढ़ श्रद्धा और विश्वास था। संयोग और वियोग तो परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है। अचानक ब्राह्मण की किसी कारणवश मृत्यु हो गई। जिस मंदिर में ब्राह्मण पुजारी का कार्य करते थे वहां किसी और ब्राह्मण को नियुक्त कर दिया गया। उसे उस ब्राह्मणी के पालन पोषण का उत्तरदायित्व भी समझा दिया गया। वह उस ब्राह्मणी के लिए मंदिर से हर प्रकार की खाद्य सामग्री भेज दिया करता था और वह हर समय भक्ति में लीन रहा करती थी।

एक दिन मंदिर से पंडित जी ने एक नौकर के हाथ 4–5 कि0ग्रा0 आटा भेजा। जब नौकर ने ब्राह्मणी को आटा दिया तब ब्राह्मणी ने कहा, ''बेटा जरा रूक जाओ। मैं पीपे में देख लेती हूं यदि आज रात तक का आटा पड़ा है तो आप इस आटे को मंदिर में वापस ले जाना, वरना मैं रख लूंगी। जब उस ने आटे का पीपा उठा कर देखा तो उस रात के भोजन के लिए आटा था। ब्राह्मणी ने नौकर से कहा,'' बेटा यह आटा आप वापस ले जाओ अभी रात के लिए मेरे पास आटा हैं।''

नौकर ने आग्रह किया, ''माता जी, यह आटा रख लो कल काम आ जायेगा।'' ब्राह्मणी ने बड़ी उत्सुकता से कहा, ''बेटा, यह बताओ कल खुदा मर जाएगा क्या ?'' नौकर यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया और सोचने लगा, कितना दृढ़ विश्वास है इस ब्राह्मणी को परमात्मा पर।

प्रिय पाठकों, परमात्मा हमसे एक पल भी अलग नहीं होते, न हो सकते हैं न अलग होने की उस में शक्ति है। केवल हमारा सच्चा दृढ़ विश्वास ही परमात्मा की दया दृष्टि हमारे ऊपर होने का अनुभव करा सकता है।

माँ बिना कैसा मायका

रमा जोशी
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

मधु की माँ को गुजरे करीब एक साल हो गया था। माँ के देहांत के बाद पीहर जाने का ज्यादा मौका ही नहीं मिला, जब मधु की माँ जीवित थी तब किसी ना किसी बहाने अपनी बेटी को बुलाती रहती थी। उसकी शादी तो झांसी में हुई थी परन्तु पति की नौकरी के कारण वह जालंधर में रह रही है, मधु का मायका भी इसी शहर जालंधर में ही है, मायका इसी शहर में होने के कारण वह महीने दो महीने में मायके जाती रहती थी।

मधु की माँ भी उसे बुलाने के नए–नए बहाने खोजती रहती थी। कभी किसी का जन्मदिन तो कभी एनिवर्सरी या फिर कोई भी छोटा–मोटा प्रोग्राम हो, मधु की माँ अपनी बेटी को बच्चों और दामाद के साथ जरूर इनवाईट करती थी। मधु भी जब अपने मायके जाती थी, तो रसोई में अपनी भाभी के साथ काम में हाथ बंटाती थी। मायके की रसोई से मधु का बहुत लगाव था। जितने हक से मधु की माँ उसे बुलाती थी उतने ही हक से मधु भी वह यह सोच कर जाती थी कि अभी तो उसकी माँ ज़िंदा है।

जब घर माँ का है। तो रसोई भी माँ की है, शादी के इतने सालों बाद भी मायके की रसोई में मधु को काम करना उतना ही अच्छा लगता था जितना वह शादी से पहले करती थी, वह मायके जाती तो कुछ देर बैठ कर चाय नाश्ता करके माँ और भाभी का हाथ बटाने रसोई में पहुँच जाती, उसे इस काम में कभी कोई झिझक महसूस नहीं होती थी। परन्तु माँ के गुजरने के बाद तो जैसे मायके से नाता ही टूट गया।

इस एक साल में ही कितना कुछ बदल गया मधु की बेटी की भी शादी हो चुकी थी और भाभी की लड़की ऋतु का विवाह भी पिछले महीने ही संपन्न हुआ था। मधु सिर्फ 2 दिन के लिए ही शादी समारोह में शामिल होने के लिए पहुंची थी और अगले ही दिन विदा होकर अपने घर आ गई।

अब मायके में पहले जैसा अपनापन नहीं था। एक दिन मधु की भाभी का फोन आया। उन्होंने कहा– ''दीदी पाँच दिन बाद रक्षाबंधन का त्यौहार है। आप जरूर आना मैंने प्रेमा को भी जमाईसा के साथ बुलाया है''। मधु ने कहा– ''बढ़िया किया भाभी आप ने ऋतु को भी जमाईसा के साथ इनवाईट किया होगा। शादी के बाद मैं अपनी भतीजी और जमाईसा से पहली बार मिलूगीं बहुत अच्छा लगेगा सब एक साथ मिल कर रक्षाबंधन का त्यौहार मनायेंगे''। मधु की भाभी ने कहा–''हां उन्हें भी बुलाया है''। मधु ने कहा–''ठीक है''। भाभी मैं सुबह ही आ जाऊंगी रसोई में हाथ भी बटा दूंगी। मधु की भाभी बोली–नहीं–नहीं जीजी मैंने रसोईए को बुला लिया हैं लंच का प्रोग्राम है। आप लोग भी समय पर आ जाना मधु खुश हो गई भाभी ने उसकी बेटी प्रेमा को भी इनवाईट किया था, यह उस के लिए बहुत खुशी की बात थी। वह मन हीं मन सोचने लगी कि ''मैं तो यू हीं ना जाने क्या सोच कर बैठी थी। भाभी कितनी अच्छी हैं। उन्होंने मेरे साथ–साथ मेरी बेटी और दमाद को भी अपने घर रक्षाबंधन के त्यौहार पर इनवाईट किया है। मधु सोचने लगी उम्र चाहे कितनी भी गुजर जाए, चाहे बेटियां बूढ़ी हो जाएं परन्तु पीहर के आए बुलावे से हमेशा ही चहक उठती हैं।''

मधु दीदी की भाभी ने तो माँ के गुजरने के बाद पहली बार उसे बुलाया था। वह उसके लिए प्रसन्नता का विषय था क्योंकि अब वो माँ का घर नहीं था। जहाँ पर बिना बुलाए भी वह पहुँच जाती थी अब वह घर भाभी का हो गया। जाना तभी अच्छा लगता जब भाभी बुलाएँ। मधु ने अपनी बेटी प्रेमा से बात कर ली और उन्हे भी पहले दिन अपने घर बुला लिया ताकि सब मिल कर भईया–भाभी के घर जाएं।

मधु ने दो लिफाफे जिनमें भतीजी और जमाईसा के लिए शगुन के पैसे थे, अपने पर्स में रख लिए। सोचा पहली बार भतीजी और उसके पति से मिलेगी तो उनको शगुन देना भी बनता है।

मधु रक्षाबंधन के दिन तय समय पर अपने पति, बेटी और दामाद के साथ मायके पहुँच गई। हमेशा की तरह चाय नाश्ता लेने के बाद मधु रसोई में अपनी भाभी का हाथ बटाने के लिए चली गई परंतु अब रसोई का समान भी जगह बदल चुका था। स्टील का सारा समान अपनी जगह बदल चुका था। स्टील का नया डिनर सैट ढूढ़ने लगी जिस में उस की माँ हमेशा उसके पति को भोजन कराती थी।

तभी भाभी ने पीछे से आकर कहा–''क्या ढूढ़ रही हो दीदी''। मधु बोली–''भाभी मैं सोच रही थी कि स्टील का नया डिनर सैट निकाल लेते हैं। ताकी उस में खाना परोसा जा सके''। भाभी बोली–''नहीं दीदी डिनर सैट की क्या जरूरत है वह तो मैने स्टोर रूम में रख दिया है रसोई में बहुत भीड़ हो रही थी। बहुत सारे एकस्ट्रा बर्तन थे। जो मैने स्टोर रूम में रख दिए आप फिकर मत करिए मैंने बाजार से बर्तन और कार्बन के गिलास मँगवा दिए हैं।''

बर्तन माँजने व धोने का झंझट ही नहीं होगा मधु यह सोच कर चौंक गई। शादी के बाद प्रेमा और उसका पति पहली बार अपनी मामा–मामी के घर आए थे और मामी ने पत्तल पर भोजन करवाया जमाईसा को बहुत महंगे डिनर सैट ना सही स्टील के डिनर सैट में तो भोजन करवा ही सकती थीं।

परन्तु मधु बेचारी क्या कहती उसने पत्तल और डोने लगा दिए। मधु की माँ अपने दमाद और बेटी को जब खाने पर बुलाती थी तो खाने में कम से कम चार सब्ज़िया, रायता, मिठाई, दही, आचार, तरह–तरह के पकवान से थाली सजा देती थीं। आज खाने में सिर्फ दो सब्जियाँ, पूरी, के साथ एक मिठाई थी यह देखकर मधु अचंभित रह गई।

वह जानती थी की मधु के पति को कोई विशेष आपत्ति जाहिर नहीं करेंगे। परंतु बेटी और दमाद पहले बार आए हैं, उनकी तो अच्छी खातिरदारी करनी ही चाहिए थी। माँ होती तो आज अपनी नतिन और नए दामाद को देखकर फूली नहीं समाती। खाने में छप्पन भोग बना देती, परंतु मधु चुप रही। भाभी के बेटी और दामाद अभी तक नहीं आए थे। मधु ने पूछा– ''भाभी ऋतु और जमाईसा कब तक आएंगे हम सब साथ मिलकर भोजन कर लेते''।

भाभी ने जरा संकुचाते हुए कहा– ''दीदी उन्हें तो दिन में कोई काम आ गया। वह आज रात को आएंगे। आप लोग खाना खा लीजिए खाना लग चुका था''। भाभी ने केवल जरूरी मान सम्मान दिखाते हुए सभी को भोजन करा दिया और फिर प्रेमा के पति और जमाईसा को रोका करके विदा कर दिया।

बेमन से बेटी और दामाद को शगुन के पैसे पकड़ा दिए और मैं शगुन देने में मुँह छुपा गई। शायद अभी उनके जमाई और बेटी घर ही होंगे थोड़ा सा समय ही तो लगेगा आप मुझे मेरे मायके ले चलिए। मधु के हठ करने पर आखिर कर उसका पति उसके पीहर ले जाने के लिए राजी हो गया। परंतु उसने साफ कह दिया कि वह अंदर नहीं जाएगा। तुम अंदर जाकर लिफाफे दे आना मैं बाहर ही खड़ा रहूँगा।

मधु अपने पति के साथ जब अपने भाई भाभी के घर पहुँची तो घर का मेन दरवाजा खुला था। अपना घर है जब चाहे आ जा सकती है। इसलिए बिना डोर बेल बजाए ही अंदर चली गई। मधु को भाभी के कमरे से भाभी के हंसने बोलने की आवाज आ रही थी। लगता है ऋतु बेटी और दामाद आए हुए हैं।

मधु तेज कदमों से ड्राइंग रूम से होती हुई किचन के सामने से भाभी के कमरे की तरफ जाने लगी तो किचन में रखे बर्तनों की चमक ने बरबस ही उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

मधु ने रसोई में जाकर देखा तो चांदी का डिनर सेट जिसमें खाना सजाया हुआ था खाने में शाही पनीर, दाल मखनी, मूंग का हलवा, रस गुल्ले, रसमलाई, पापड़, आचार, चटनी, और भी कई चीजें थी। मधु ने जब यह देखा तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ भाभी ने हमारे साथ इतना भेदभाव किया। रसोई ओपन थी जो ड्राईग रूम के साथ अटैच थी। तभी वहां पर मधु की भाभी आ गई और अपनी ननद को वहाँ पर देखकर अचंभित होकर बोली– ''अरे दीदी आप'', मधु की भाभी सारा माजरा समझ चुकी थी और बात को संभलते हुए बोली– ''दीदी यह चांदी का डिनर सेट अभी शाम को ही रिसीव हुआ था, अगर पहले आ जाता तो आप सबको भी मैं इसी में भोजन कराती'', तभी वहां पर मधु की भतीजी का हस्बैंड रवि भी आ गया मधु के चरण स्पर्श करते हुए बुआ जी कैसी हैं आप? मम्मी ने बताया कि आप दिन में ही रक्षाबंधन का त्यौहार मनाकर चले गए।

मम्मी कह रही थी कि फूफाजी को कोई जरूरी काम था। मेरा तो मन था कि सब साथ मिलकर यह त्यौहार मनाते। मैं भी अपनी साली साहिबा और उसके हस्बैंड से मिल लेता, मधु सारा माजरा समझ चुकी थी। मैं जानती थी कि उसकी भाभी ने ही अपने जमाईसा के सामने यह बातें बनाई होंगी। मधु की आंखे नम हो गईं, मधु ने ऋतु और उसके हस्बैंड को शगुन का लिफाफा देते हुए आशीर्वाद दिया और आँखों में आंसू लिए मायके से विदा हो गई।

मधु की भाभी में इतनी हिम्मत भी नहीं बची थी कि वह अपनी ननद को रोक सके। वह भी अपने किए पर शर्मिंदा थी। मधु भगवान का शुक्रिया अदा कर रही थी कि उसने समय रहते मायके की पहचान करा दी। वरना वह मायके के झूठे मोह में फसी रहती। तो दोस्तों उम्मीद है आप सभी को यह कहानी अच्छी लगी होगी। सभी भाई और बहन अपनी–अपनी बहन–बेटियों को अपने घर बुलाएं और उनके आदर सत्कार में किसी तरह की कोई कमी ना छोड़े क्योंकि बहन बेटियां पैसे की भूखी नहीं होती वह तो आप सबको बेशकीमती दुआएं देनी आती है। आशा करती हूँ आपको यह कहानी जरूर पसंद आई होगी। कहानी पढ़ने के लिए आप सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद।

जिन्दगी के कुछ पल

धर्मा मोशाल
वरिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

आज के ही दिन हमारी शादी को दो साल हुए हैं लेकिन ऐसा लग रहा है मानो दो सदियां बीत गई हैं और इन दो सालों में मेरी जिन्दगी में कितने उतार–चढ़ाव आए। आज मेरे बेटे का जन्म दिन है और आज के ही दिन उसके पापा की पुण्यतिथि है। जिन्दगी भी कैसे–कैसे मोड़ लेती है।

मुझे याद है जब मेरी शादी की बात चल रही थी। अभी मेरी बी.ए की परीक्षा का रिजल्ट भी नहीं आया था, तभी से मेरे रिश्तेदारों ने मेरे पापा–मम्मी को मेरी शादी के लिए कहना शुरू कर दिया था कि नीलू अब बड़ी हो गई है उसकी यह शादी की उम्र है। अच्छे रिश्ते हाथ से निकलते जा रहे हैं यह मम्मी पापा को कहती रहती थीं क्योंकि पापा ने तो कह दिया था कि जब तक मेरी बेटी ग्रेजुशन नहीं कर लेती तब तक कोई शादी–वादी नहीं, मेरे पापा आधुनिक विचारो वाले थे उनका कहना था कि लड़कियों को पढ़ाना–लिखाना बहुत जरूरी है क्योंकि वे ही तो अपने वंश को बढ़ाती है। एक माँ अगर पढ़ी लिखी होगी तो वह अपने बच्चों को भी पढ़ाएगी और अच्छी तालीम देनी बहुत जरूरी है।

हम तीन भाई–बहन में मैं सबसे बड़ी, रोहन मुझसे छोटा व भावना सबसे छोटी बहन है, हम सभी दिल्ली शहर के विकासपुरी में रहते थे। मैं एस.पी.एम (श्याम प्रसाद मुखर्जी) कालेज में पढ़ती थी। रोहन 12वीं कक्षा में और भावना 11वीं कक्षा में पढ़ती थी। हम तीनो भाई–बहनों का पालन–पोषण बहुत ही अच्छे तरीके से हुआ। मैं मध्यम वर्गीय परिवार से हूँ। मेरी शादी के रिश्ते आने लगे पर मेरे पापा को मेरी शादी की जल्दी नहीं थी लेकिन माँ को मेरी शादी की बहुत जल्दी थी। उनका मानना था कि लड़कियो की शादी में देरी की तो अच्छे रिश्ते हाथ से निकल जाते हैं। मैं तो हमेशा अपने पापा से लड़ती रहती थी और शादी के लिए मना करती थी। मैं अपने पापा की लाड़ली बेटी थी और पापा से कहती थी कि मुझे शादी वादी नहीं करनी। मुझे कही नहीं जाना इसी घर में रहना है लेकिन मेरी थोड़ी ही किसी ने सुननी है। पहला ही रिश्ता आया वह भी मेरे मामा जी लाए और माँ से मेरी जन्मपत्री मांगी और उस लड़के की जन्मपत्री से मिलाई तो सभी 36 गुणों में से 30 गुण मिल रहे थे फिर क्या था देखने–दिखाने का प्रयोग शुरू हो गया, मम्मी–पापा को लगा कि इससे अच्छा रिश्ता तो इनकी बेटी को मिल ही नहीं सकता। लड़का आर्मी में ऑफिसर है। कैप्टन की पोस्ट में, परिवार भी छोटा सा है माँ–बाप का इकलौता बेटा है और आर्मी ज्वाइन किए हुए एक साल ही हुआ था। रवि नाम था उसका जब वह मुझे देखने आया तो मैं भी उसे देख कर न नहीं कह पाई। कहते हैं कि जोड़ियां तो ऊपर से बन कर आती है। रवि और मेरी शादी बहुत ही धूम–धाम से हो गई, रवि का परिवार भी दिल्ली में जनकपुरी में रहता था। हमारे घर के पास ही ज्यादा दूर भी नहीं था। रवि की पोस्टिंग रूड़की में थी बड़ी ही मुशकिल से 10 दिन छुट्टी शादी के लिए मिली थी वे 10 दिन कब बीत गये पता ही नहीं चला। रवि अपनी ड्यूटी पर रूड़की चला गया और मैं घर में ही रही। रवि के माता–पिता के साथ, शुरू–शुरू में तो मेरा मन नहीं लगता था, लेकिन फिर मैंने अपने मन को समझाया कि फौजी से शादी की है। तो मन को मजबूत करना पड़ेगा, जो भी लड़की फौजी से शादी करेगी तो उसे हर हाल में अपने दिल को मजबूत बनाना पड़ेगा। जब रवि मुझे देखने आया तो सबसे पहले उसने मुझसे एक ही प्रश्न किया कि क्या वह एक फौजी को अपना हमसफर बनाने के लिए तैयार है। क्योंकि उन्हें अपने परिवार से पहले देश को चुनना पड़ता है और हर फौजी के लिए परिवार पीछे–देश पहले होता है। मैंने रवि को कहा कि मैं कभी भी बीच में दीवार नहीं बनूंगी और मैने रवि को शादी के लिए हाँ बोल दिया था और कहा कि मैं भी देश भक्त हूँ। मैंने भी इसी धरती में जन्म लिया है। अपने देश के लिए मैं हर कुरबानी देने के लिए हमेशा आप के साथ खड़ी रहूंगी। रवि को अभी रूड़की में कुछ महीने भी नहीं हुए थे कि इनका ट्रांस्फर कश्मीर (रजौरी) में हो गया और उसके बाद जैसे ही मैंने रवि

को बताया कि तुम पापा बनने वाले हो उसका तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा, लेकिन मुझे नहीं बताया कि उनका ट्रांस्फर रूड़की से कश्मीर (रजौरी) में हो गया है। बस यह कहा कि मैं तुम से मिलने जल्दी घर आ जाऊंगा। शादि के बाद सिर्फ दो बार ही घर आए थे, फोन से तो रोज़ ही बात हो जाया करती थी। मम्मी–पापा बात कर रहे थे कि आजकल फिर से आतंकवादियों ने कश्मीर में फिर से आतंक शुरू कर दिया है और वह फौजियों को और आम जनता को निशाना बना रहे हैं। मम्मी ने ही बताया कि रवि का फोन आया है कि वह अपनी टीम के साथ कश्मीर जा रहा है। मैंने रवि को बहुत फोन मिलाया लेकिन फोन नहीं मिला, फिर रवि का ही फोन मेरे फोन पर आया और उसने कहा कि वह अपने आप जब भी समय मिलेगा फोन कर लेगा और वह वहां ठीक है, मेरा तो मन उस दिन से बहुत ही ज़ोर–ज़ोर से धड़क रहा था और बहुत ही बेचैन था। ऊपर से डॉक्टर ने बताया था कि आपको पूरा आराम करना है, क्योंकि बच्चा अंदर बहुत कमज़ोर है। शाम को 6 बजे जैसे ही फोन की घंटी बजी मैं दौड़ कर फोन के पास गई तो वहां से आवाज़ आई कि आप रवि के घर से बोल रही हैं, तो मैंने कहा मैं उनकी पत्नी नीलू बोल रही हूँ। उन्होंने कहा घर में कोई है तो उससे बात करवा दें। शायद फोन करने वाले को पता था कि मैं मां बनने वाली हूं, इसलिए वह मुझे बताने में संकोच कर रहे थे, लेकिन मैंने कहा कि इस समय घर में केवल मैं ही हूं। तो उन्होंने कहा मैडम आपके लिए ख़बर अच्छी नहीं है। कैप्टन रवि साहब देश के लिए शहीद हो गए हैं। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह क्या बोल गए मेरे हाथ से फोन नीचे ज़मीन पर गिर गया और मैं भी। मम्मी–पापा, जो बाज़ार सब्ज़ी लेने गए थे, घर के अंदर आए तो मुझे इस हालत में देख कर घबरा गए क्योंकि फोन ज़मीन पर पड़ा था। फोन से मम्मी–पापा को रवि के शहीद होने का पता चला। मेरी मम्मी ने जब मेरा हाल देखा तो मुझे जल्दी से अस्पताल ले गई 2 घंटे के अंदर ही मुझे बेटा पैदा हुआ। उस बच्चे की किस्मत को देखो, जब इस नन्हीं सी जान ने आंखें खोली तो उसके पापा इस दुनिया को छोड़ के जा चुके थे। पापा वीरगति को प्राप्त हुए और बेटे ने उसी धरती में जन्म लिया। यह मेरा बेटा बड़ा होकर देश की सेवा करेगा और यह दूसरा रवि बनेगा। इसे भी मैं फौज में ही भेजूंगी।

शत–शत नमन है इस देश भक्त को जो अपने जाने के बाद भी देश को एक और लाल दे गया। और नमन है ऐसी हजारों माताओं को।

क्योंकि मैं एक मज़दूर हूं

पवन कुमार
प्रचालक, बठिंडा यूनिट

हर मज़े से दूर हूं
क्योंकि मैं एक मज़दूर हूं

कड़ी धूप हो या हो बरसात
बुलंद हौसले मेरे साथ
नित दिन कुआँ खोदता हूं
अपने परिवार का जीवन सींचता हूं
मेहनत कर पसीना बहाता हूं
ईमानदारी की रोटी खाता हूं

हर मज़े से दूर हूं
क्योंकि मैं एक मज़दूर हूं

आत्मनिर्भरता को अपना लक्ष्य बनाया
फटे–चिथड़े कपड़ों का मैंने लिबास है पाया
टूटी झोपड़ी, छोटी चादर मेरे नसीब में आई
भूख लाचारी की विवशता मैंने विरासत में हैं पाई
मजदूरों के खून पसीने से एक ताजमहल बनवाया
एक घमंडी शहंशाह ने उनके हाथों को कटवाया

हर मज़े से दूर हूं
क्योंकि मैं एक मज़दूर हूं

काली दीवाली की आग दीप बनकर दिल में जलती है
मज़दूर की मेहनत की कमाई उसे पूरी नहीं मिलती है
राष्ट्र निर्माण में मज़दूरों की मेहनत बेजोड़ हैं
गरीब मज़दूर का भविष्य अंधकार की ओर है
देश की उन्नति में मजदूर की बड़ी भागेदारी
पर लेता नहीं कोई उसके जीवन सुरक्षा की जिम्मेदारी

हर मज़े से दूर हूं
क्योंकि मैं एक मज़दूर हूं

कड़वा सच

हेमन्त रावत
वाणिज्य विभाग,
बठिंडा यूनिट

फिर हुआ ऐसा कि सब सुनसान हो गया
भीड़ भाड़ वाला वो रास्ता वीरान हो गया

उड़ रहा वो परिंदा देखकर इस माहौल को
अपने ही शहर से जैसे अनजान हो गया

मर रहे हैं लोग हजारों की तादाद में
वक्त भी इंसान के लिए हैवान हो गया

रो रहा है वो मजदूर घर में बैठकर
खत्म घर में खाने का सामान हो गया

लड़ने के लिए इस भयानक महामारी से
घर में कैद सारा हिन्दुस्तान हो गया

जिंदगी

बसंती
चपरासी,
बठिंडा यूनिट

चलो हंसने की कोई, हम वजह ढूंढते हैं।
जिधर न हो कोई गम, वो जगह ढूंढते हैं।

बहुत उड़ लिए ऊँचे आसमानों में यारो,
चलो जमीं पे ही कहीं, हम सतह ढूंढते है।

छूटा संग कितनों का जिंदगी की जंग में,
चलो उनके दिलों की हम गिरह ढूंढते है।

बहुत वक्त गुजरा भटकते हुए अंधेरों में,
चलो अँधेरी रात की, हम सुबह ढूंढते है।

रोली वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी
रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग

सभ्यता का विकास या विनाश

बीत गए कितने ही युग तब,
पृथ्वी पर पनपा जीवन;
उगे जंगल, बह चली नदियां,
खिल उठा पृथ्वी का आंगन।

तरु, खग, पशु जीव विविध ने,
अपने–अपने संसार बसाए;
फलती–फूलती रही पृथ्वी,
पर तब हम 'सभ्य' जन आए।

जलाई आग, उगाया अन्न,
नौका से नापा अथाह जल;
हमने घुमा दिया पहिया, ज्यों
सभ्यता का चक्र पड़ा हो चल।

बन गए समाज, बस गए गांव,
मुद्रा का आविष्कार हुआ;
समृद्ध हुआ जीवन का व्यापार,
साम्राज्यों का विस्तार हुआ।

आधुनिक युग आया, हुई क्रांति
उद्योग की, संकुल हुए नगर प्रांत;
सभ्यता साधनों ने उगला विष,
वायु जल मृदा सब हुए क्रांत।

वन की मंथर पगडंडी को,
सरपट राजपथों ने रोका;
निश्चित विचरते खग पशुओं को,
मानव के कदमों ने टोका।

लक्षावधि वर्षों में बनी पृथ्वी,
हमें मिली अनमोल धरोहर;
पर भविष्य को छला हमीं ने,
पाप यह कौन सकेगा हर।

तपती धरती की चिंता में,
की जाती हैं रस्मी चिंताएं;
नियमित निष्फल सम्मेलन,
वातानुकूलित शीतल चर्चाएं।

चन्द्रमा मंगल को नाप लिया,
पर धरती को हमने त्रास दिया;
तनिक ठहरकर सोचें हमने,
विकास किया या विनाश किया?

भगवती देवी
चपरासी,
निगमित कार्यालय

परमात्मा

"एक खरीदे एक मुफ्त पायें"।

जब हम "ईर्ष्या" खरीदते हैं तो हमें "सिरदर्द" मुफ्त में मिल जाता है।
जब हम "क्रोध" खरीदते हैं तो हमे "एसिडिटी" मुफ्त में मिलती है।
जब हम "नफरत" खरीदते हैं तो "अल्सर" मुफ्त में मिल जाता है।
जब हम "तनाव" खरीदते हैं तो "रक्तचाप" मुफ्त में मिल जाता है।
ऐसे ही जब हम बातचीत से "विश्वास" खरीदते हैं तो "मित्रता" मुफ्त में प्राप्त होती है।
जब हम "व्यायाम" खरीदते हैं तो "स्वास्थ्य" मुफ्त में प्राप्त होता है।

वाह रे मंहगाई

प्रकाश सिंह सौन
प्रचालक श्रेणी–II,
निगमित कार्यालय

वाह रे मंहगाई।
महंगाई ने खूब है रुलाया
अमीर गरीबी का भेद है भुलाया
टमाटर की कीमतों ने सबको है रुलाया
बिना टमाटर के भोजन पकाना जो सिखाया।

वाह रे महंगी हो गई हर चीज़ दोस्तों,
बिना दुश्मनी के क्या हैं सोचते।
मत गाओ इधर उधर घूमने का रोना,
घर में ही चुपचाप बेहतर है रहना।

वाह रे महंगाई
घर गाड़ी लेने के सपने हो गए चकनाचूर
मत सोचना इसके बारे में दूर–दूर
महंगाई ने है रूपए का दाम घटाया,
दूर दूर के देशों से अपना संबंध छुड़वाया।

वाह रे महंगाई
सोने के भाव ने उच्च सीमा जो लांघी
बेटी विदा की है अब खाओ दाल रोटी।
महज पाँच हजार रूपए के लिए.
आदमी–आदमी का बन गया है दुश्मन
इसी वजह से खो गया अपने देश का चैन और अमन।

वाह रे महंगाई।
महंगा हो गया पढ़ना लिखना,
इसलिए तो युवाओं का शुरू हो गया बहकना।
इस महगाई पर करने को नियंत्रण,
करते हैं आर्थिक नीति को आमंत्रण।

वाह रे महंगाई।

पहाड़ बोलते हैं

नितिन ढंढे
उप प्रबंधक
(मा.सं. एवं प्र.),
रसायनी यूनिट

हां , मैं पहाड़ हूँ
रहने दो मुझे अपने नियत स्थान पर,
मत काटो मुझे अपनी कुदाल से
यह प्रतिकूल है प्रकृति के
रहने दो मेरे अस्तित्व को स्थिर,
क्योंकि स्थिरता मेरी प्रवृत्ति है,

मेरी नियति है, यही मेरा आदि
और यही मेरा अन्त है
बहने दो अविरत निर्बाध मेरी गोद में
कल–कल करती आह्लादिन नदियां और जीवंत झरने,

मेरी वादियों के स्वछंद, एकाकी एवं उन्मुक्त वातावरण मे
युगलों को सुमधुर सुवासभरे क्षणों को
जी लेने दो और मेरे अंतस्थल में,

उन स्नेहिल क्षणों को प्रतिबिंबित होने दो
मेरी घाटियों में दूर तक फैले हरे–भरे खेतों को लहलहाने दो
मेरे ढलानों पर कभी आमंत्रण सा देते
तो कभी अपने में खोए रहस्यमयी चुप्पी समेटे
वृक्ष को रहने दो

मत नापो अपने स्वार्थ के फीतों से
मीलो तक फैली मेरी अनंत काया को
तुम यह मत समझना कि मैं टूट जाऊँगा या
समा जाऊँगा तुम्हारे फीतों में,

मत समझना कि तुम जीतोगे
क्योंकि मेरे प्रतिरोध का तूफान एक दिन,
तुम्हारी मीमांसा को कुचल डालेगा
और तोड़ देगा तुम्हारे द्वारा बुने गए,
थोथे, भ्रामक आकाक्षाओं के जाल को,

और फिर कर देगा अंततः
तुम्हारे अस्तित्व को अर्थहीन,
और मत बाटों मेरे अस्तित्व को
अपनी तरह उपनामों में,

रहने दो मुझे सिर्फ पहाड़....
रहने दो मुझे सिर्फ पहाड़....

रूचि बिष्ट
अधिकारी (राजभाषा),
बठिंडा यूनिट

लिखती हूँ क्यूंकी लिखना अच्छा लगता है

पूरा किस्सा घूम जाता है आँखों के सामने मेरे
किस्सा कितना भी पुराना हो बस कल ही का लगता है
कभी कोई खास पल जब छू जाता है धड़कन को
पंक्तियों में बयान करना एक सपना सा लगता है
उसे जोड़कर फिर खुद से में रात भर सोचती हूँ
सुबह जो सामने होता है वो सच्चाई का करवां सा लगता है

मेरे लिखे हर शब्द में, लोगों का कोई किस्सा सा लगता है
ऐसा नहीं की हर शब्द है मेरा ख़्यालों से निकला हुआ
कोई कोई शब्द मुझे भी मेरा हिस्सा सा लगता है
एक अरसा हुआ जज्बातों को दिल में दबाये हुए
जब उतारती हूँ शब्द कागज पर मन हल्का सा लगता है

सोचकर यही की कल जो हमने जिया था
वो आज की सच्चाई से बिल्कुल परे लगता है
किसी और के आज में मुझे मेरा कल सा लगता है
आसान होता नहीं किस्सों को कहानी का रूप देना
कोशिश हो लिखने की तो सब अपना सा लगता है

हवा में उड़ने वाला गुलाल भी जुड़ जाता है शब्दों से
शब्दों से संगीत का रिश्ता बहुत गहरा सा होता है
लिखती हूँ क्यूंकी लिखना मुझे अच्छा लगता है
मेरे लिखे हर किस्से के साथ सभी को कुछ अपना सा लगता है

शिवा सागर
वरिष्ठ प्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा
धर्मपत्नी श्री सी.आर. सागर,
उप प्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

बेटी

बेटी के प्यार को कभी आजमाना नहीं,
वह फूल है, उसे कभी रुलाना नहीं,
पिता का तो गुमान होती है बेटी,
जिन्दा होने की पहचान होती है बेटी।

उसकी आंखें कभी नम न होने देना,
उसकी ज़िन्दगी से कभी खुशियां कम न होने देना ,
उंगली पकड़ कर कल जिसको चलाया था तुमने,
फ़िर उसको ही डोली में बिठाया था तुमने।

बहुत छोटा सा सफ़र होता है बेटी के साथ,
बहुत कम वक्त के लिये वह होती हमारे पास !!
असीम दुलार पाने की हकदार है बेटी,
समझो भगवान का आशीर्वाद है बेटी!

विजय कुमार गांधी
उप प्रबंधक (प्रशासन), निगमित कार्यालय

उम्र

मैं उम्र बताना नहीं चाहता हूँ,

जब भी यह सवाल कोई पूछता है,
मैं सोच में पड़ जाता हूँ,

बात यह नहीं कि मैं,
उम्र बताना नहीं चाहता हूँ,
बात तो यह है की
मैं हर उम्र के पड़ाव को,
फिर से जीना चाहता हूँ,
इसलिए जवाब नहीं दे पाता हूँ,

मेरे हिसाब से तो उम्र,
बस एक संख्या ही है,

जब मैं बच्चों के साथ बैठ,
कार्टून फिल्म देखता हूँ,
उन्हीं का हम उम्र हो जाता हूँ,
उन्हीं की तरह खुश होता हूँ,
मैं भी तब सात–आठ साल का होता हूँ,

और जब गाने की धुन पर पैर थिरकाता हूँ,
तब मैं किशोर बन जाता हूँ,

जब बड़ों के पास बैठ गप्पे सुनता हूँ,
उनकी ही तरह, सोचने लगता हूँ,

दरअसल मैं एकसाथ,
हर उम्र को जीना चाहता हूँ,

इसमें गलत ही क्या है?
क्या कभी किसी ने,
सूरज की रौशनी, या,
चाँद की चांदनी, से उम्र पूछी?

या फिर खल खल करती,
बहती नदी की धारा से उम्र पूछी?

बदलते रहना प्रकृति का नियम है,
मैं भी अपने आप को,
समय के साथ बदल रहा हूँ,

आज के हिसाब से,
ढलने की कोशिश कर रहा हूँ,

कितने साल का हो गया मैं,
यह सोच कर क्या करना ?

कितनी उम्र और बची है,
उसको जी भर जीना चाहता हूँ,

एकदिन सब को यहाँ से विदा लेना है,
वह पल, किसी के भी जीवन में,
कभी भी आ सकता है,
फिर क्यों न हम,
हर पल को मुठ्ठी में, भर के जी लें,
हर उम्र को फिर से, एक बार जी लें

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कविता एवं नारा प्रतियोगिता में पुरस्कृत

प्रथम पुरस्कार कविता

योगेश कुमार
बाह्य साधन : सहायक (प्रशासन)
निगमित कार्यालय

सुनो मेरी दासतां

आया था एच.आई.एल. में सालों पहले
नहीं पता था कैसे काम संभालें
सब कुछ था तब नया–नया
आगे सुनों मेरी दासतां

नोटिंग, ड्राफ्टिंग ये कैसी बला
कुछ समझ ना आए ये किसे बोलूँ भला
सैप का तो नाम ना था सुना
और सुनो मेरी दासतां

एच.आर., ऐडमिन, मार्केटिंग, फाइनांस, कमर्शियल
इतने सारे डिपार्टमेंट तब में जाना
सरकारी दफ़्तर ऐसा होता है तब में पहचाना

फाईलों से फिर काम किया
किन्तु फाईल ढूँडे कहाँ भला
एफ.टी.एस. ने यह कमान संभाली
फिर फाईल मिलने लगी हमारी

अब आई कोरोना की आँधी
महीनों घर बैठे सारे साथी
काम होता था सब फाईलों से
कैसे करें सब पूछे अपने विभाग वालों से

फिर सी.एम.डी. सर ने ई–ऑफिस को लाया
और इसकी विशेषताओं को समझाया
अब ना फाईलों का चक्कर ना अनुमोदन की देर
काम होगा अब दफ़्तर हो या घर का फेर

यही है मेरी जुबानी छोटी सी कहानी

प्रथम पुरस्कार नारे

राज नारायण चन्द्र
प्रबन्धक (वित्त),
निगमित कार्यालय

नारे

- सबको करती एक समान
  हिन्दी भाषा बड़ी महान।
- देश कि ऊँची शान करें।
  हम हिन्दी में काम करें।
- दुल्हन के माथे की बिंदियाँ हैं हिन्दी
  देश के माथे की पगड़ी है हिन्दी ।
- आओं मिलकर एक नया पैगाम दें
  ''आत्मनिर्भर भारत'' का सपना साकार करें।
- लगाओ पेड़–पौधे और डालों पानी
  पर्यावरण को दो प्यारी सी निशानी।
- पर्यावरण से नाता जोड़ो
  बीमारियों से मुंह मोड़ो।
- पर्यावरण का रखे ध्यान
  तभी बनेगा देश महान।
- अच्छे जीवन का एक आधार
  प्रकृति के सम्मान से बेड़ा पार
- सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण
  यही हमारे जीवन का आवरण

हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम							
क्र. सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र		"ख" क्षेत्र		"ग" क्षेत्र	
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ, राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 65% 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ, राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 55% 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ, राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55% 55% 55% 55%
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना		100%		100%		100%
3	हिंदी में टिप्पण		75%		50%		30%
4	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम		70%		60%		30%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती		80%		70%		40%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)		65%		55%		30%
7	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)		100%		100%		100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना		100%		100%		100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय		50%		50%		50%
10	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद		100%		100%		100%
11	वैबसाइट द्विभाषी हो		100%		100%		100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो		100%		100%		100%
13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)	
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)	
	(iii) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण			वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण			
14	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति			वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)			
15	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद		100%		100%		100%
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।		40%	30% (न्यूनतम अनुभाग)			20%

निगमित कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कार्यालय में दिनांक 01 सितंबर, 2021 से 15 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 01 सितंबर, 2021 को सलाहकार (वित्त) महोदय एवं महाप्रबन्धक (विपणन) महोदय द्वारा पखवाड़े का विधिवत् उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर अधिकारी (राजभाषा) ने कार्यालय में हिन्दी कार्यान्वयन के लिए किए गए प्रयासों/उपलब्धियों की जानकारी सभी को दी। उन्होंने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वर्ष 2021–22 के वार्षिक कार्यक्रम की सभी मदों पर निर्धारित लक्ष्यों के बारे में तथा राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों तथा हिन्दी में कंप्यूटरों कार्य करने के लिए उपलब्ध साफ्टवेयरों की जानकारी दी। इसके पश्चात् कंपनी के प्रधान कार्यालय तथा सभी यूनिटों में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि करने हेतु उपलब्ध कराई गई सुविधाओं एवं उनके प्रयोग से राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में हो रही वृद्धि के बारे में बताया गया।

महाप्रबन्धक (विपणन) महोदय ने इस अवसर पर सभी कार्मिकों को अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के साथ–साथ इस पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक कार्मिकों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया और पखवाड़े की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी कविता/नारा लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी मुहावरे एवं लोकोक्तियां प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी ई–मेल लेखन प्रतियोगिता तथा प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त पखवाड़े के दौरान कार्मिकों के हिन्दी टंकण अभ्यास के लिए एक कार्यशाला का आयोजन भी करवाया गया तथा अधिकारी वर्ग के लिए अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक तथा महाप्रबन्धक (विपणन) की अध्यक्षता में दो विचार संगोष्ठियों का आयोजन भी किया गया।

उपरोक्त प्रतियोगिताओं एवं कायक्रमों के अतिरिक्त इस वर्ष भी कार्मिकों के बच्चों के लिए दो आयु वर्ग में ऑनलाइन माध्यम से हिन्दी गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें दोनों वर्गों में कुल 18 प्रतिभागी बच्चों ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े का समापन दिनांक 15.09.2021 को किया गया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में सलाहकार (वित्त) महोदय, महाप्रबन्धक (तकनीकी) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा सभी कार्मिक उपस्थित थे। अधिकारी (राजभाषा) द्वारा हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

तत्पश्चात् हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त तथा मूल रूप से हिन्दी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन करने वाले सभी कार्मिकों को सलाहकार (वित्त) एवं महाप्रबन्धक (तकनीकी) महोदय के कर–कमलों से वस्तु रूप में पुरस्कार/प्रोत्साहन वितरित किए गए।

इसके पश्चात् सलाहकार (वित्त) महोदय का संभाषण हुआ। महोदय ने अपने संभाषण में कहा कि अधिकारी (राजभाषा) द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि इस पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों में प्रतिभागिता कुल 176 रही। सभी कार्मिकों ने इस पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक भाग लिया है। हमारे प्रधान कार्यालय में ही नहीं अपितु अन्य यूनिटें जो "ख" तथा "ग" क्षेत्र में स्थित हैं, में भी कार्मिकों को हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान है। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद तथा विभिन्न नराकासों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में हमारे संस्थान के कार्मिकों को सदैव पुरस्कार मिलते रहे हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी में कार्य करने में सभी रुचि लेते है। पिछले कुछ वर्षों में विकसित हिन्दी टूल्स का प्रयोग करके हिन्दी के कार्यान्वयन की गति में तेज़ी लाई जा सकती है। कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर विभिन्न कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं, जिनमें हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन करने तथा कंप्यूटर पर यूनिकोड पर हिन्दी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। तथापि, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। सभी फार्म, मानक मसौदे द्विभाषा में उपलब्ध हैं, हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों का पालन करते हुए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का पूरा प्रयास करें, क्योंकि यह हमारा नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व है। कंपनी राजभाषा से संबंधित नियम, अधिनियमों/लक्ष्यों के प्रति पूर्णतः वचनबद्ध है तथा उनके अनुपालन हेतु सतत प्रयासरत है।

इसके पश्चात् महाप्रबन्धक (तकनीकी) महोदय ने अपने संभाषण में सभी उपस्थित कार्मिकों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए कहा तथा पुरस्कार प्राप्त सभी विजेताओं को बधाई दी। उप प्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.) के धन्यवाद के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ ।

हिल (इंडिया) लिमिटेड में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय के साथ–साथ अधीनस्थ तीनों यूनिटों में सितंबर माह के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान सभी कार्यालयों में कार्मिकों के लिए हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

प्रधान कार्यालय

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

टिप्पण लेखन प्रतियोगिता

हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजन

रसायनी यूनिट

बठिंडा यूनिट

उद्योगमंडल यूनिट

राजभाषा विचार संगोष्ठी

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निगमित कार्यालय में कार्मिकों के लिए दो विचार संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

10 सितंबर, 2021

14 सितंबर, 2021

हिन्दी पखवाड़ा, 2021 समाप
निगमित

न एवं पुरस्कार वितरण समारोह
कार्यालय

हिल में स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छता पखवाड़ा 2021 के दौरान हिल (इंडिया) लिमिटेड की केरल स्थित उद्योग मंडल यूनिट में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं।

फैक्ट्री परिसर की सफाई करते हुए कर्मचारी गण।

एकल–उपयोग वाले प्लास्टिक पर अंकुश लगाने के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड के रसायनी यूनिट में स्वच्छता पखवाड़ा 2021 के दौरान स्वच्छता जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कंपनी के डॉक्टर ने कार्यस्थल की सफाई पर व्याख्यान भी दिया।

बठिंडा यूनिट

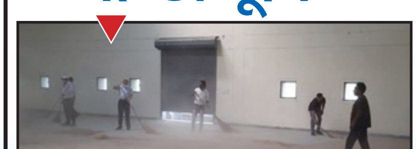

बठिंडा यूनिट में स्वच्छता जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

हिल (इंडिया) लिमिटेड के नई दिल्ली स्थित निगमित कार्यालय के साथ-साथ तीनों अधीनस्थ यूनिटों में सदभावना दिवस शपथ ली गई।

रसायनी यूनिट उद्योगमंडल यूनिट बठिंडा यूनिट

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की झलकियां

रसायनी यूनिट

उद्योगमंडल यूनिट

बठिंडा यूनिट

राजभाषा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा दिनांक 13.07.2021 को हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित कार्यालय का हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित निरीक्षण किया गया। निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ निरीक्षण के दौरान माननीय समिति के संयोजक श्री भृर्तहरि महताब एवं अन्य सदस्यगणों के साथ हिल (इंडिया) लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ0 एस.पी. मोहन्ती एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

रक्तदान शिविर

हिल (इंडिया) लिमिटेड, निगमित कार्यालय ने रोटरी क्लब, दिल्ली के सहयोग से दिनांक 28.05.2021 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

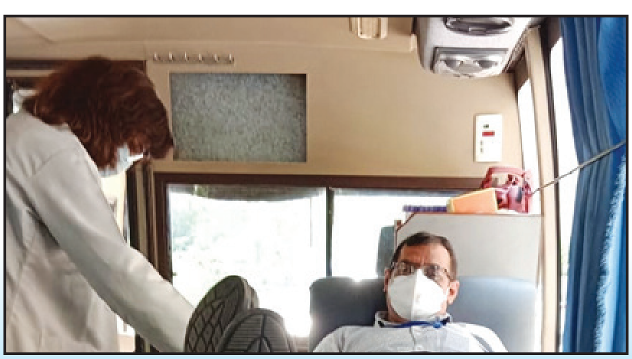

समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021

गुरूग्राम

हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री एस.पी. मोहन्ती द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायन यूनिट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री डी.डी. सोनवानी, यूनिट प्रमुख द्वारासभीकर्मचारियों एवंअधिकारियों की उपस्थितिमें ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर महाप्रबन्धक (तकनीकी), निगमित कार्यालय ने रसायनी यूनिट के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया।

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री प्रमोद डी. संकपाल, यूनिट प्रमुख द्वारा ध्वजारोहण पश्चात् कार्मिकों को संबोधित किया गया।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री विजय कुमार महाराणा द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया।

देश के विभिन्न प्रदेशों में किसानों को प्रशिक्षित करने के उद्देय से एकीकृत कीट प्रबन्धन, कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग आदि विभिन्न विषयों पर हिल (इंडिया) लिमिटेड द्वारा आयोजित किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा किसान मेलों में हिल की प्रतिभागिता की झलकियां।

सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र के अवसर पर हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।
(दिनांक अप्रैल, 2021 से सितम्बर, 2021 तक सेवानिवृत्त/स्वेच्छा सेवानिवृत्त/त्याग पत्र अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	एस.पी. मोहन्ती (त्याग पत्र)	अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक	निगमित कार्यालय
2.	एस.चट्टोपाध्याय (त्याग पत्र)	निदेशक (वित्त)	निगमित कार्यालय
3.	पी.सी. सिंह	मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्र.)	निगमित कार्यालय
4.	विमल कुमार आहूजा	प्रबंधक (सिविल)	निगमित कार्यालय
5.	अरूण कुमार (त्याग पत्र)	विधि अधिकारी	निगमित कार्यालय
6.	एम.एस. अनिल	उप महाप्रबंधक (तकनिकि)	निगमित कार्यालय
7.	चन्द्र शेखर सिंह	सहायक प्रबंधक (विपणन)	निगमित कार्यालय
8.	दशरथ सुदाम चौरघे	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
9.	राजेश चंदूलाल हमिरानी (त्याग पत्र)	इकाई प्रमुख	रसायनी यूनिट
10.	संजीव पांडुरंग निजामपुरकर	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
11.	परशुराम चांगो माली	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
12.	काशीनाथ महादु जंभले	रिगर. श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
13.	नरेश वामन माली	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
14.	प्रकाश भादु खैरनार	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
15.	मधुकर धर्म मुरुदकर	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
16.	पुंडलिक दतू पाटील	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
17.	केशव सावलाराम खाने	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
18.	रमन गोविंद कांबले	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
19.	दत्तात्रेय सहदेव चौराघे	फोरमैन इलेक्ट्रिकल	रसायनी यूनिट
20.	यशवंत जगन्नाथ मंडे	ऑपरेटर श्रेणी I (विशेष श्रेणी)	रसायनी यूनिट
21.	मारुति शंकर भोइर	फिटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
22.	दत्तात्रेय कानू भंडारकर	प्रमुख चपरासी	रसायनी यूनिट
23.	हरिभाऊ राजा गोपाल	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
24.	कमलाकर कृष्णा कोलि	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
25.	नामदेव दामोदर म्हात्रे	ऑपरेटर श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
26.	एकनाथ सखाराम म्हात्रे	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
27.	नियाज़ाहमद हुसैनमिया करनालकर	ऑपरेटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
28.	नानू गोविंद थमके	फिटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
29.	हरिश्चंद्र सदाशिव अरु	फिटर श्रेणी –II	रसायनी यूनिट
30.	रमेश चांगू भोइर	फिटर श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
31.	लीला रामचंद्र खेतम	कार्यालय सहायक	रसायनी यूनिट
32.	रंजनलाल कालिदास चव्हाण	कार्पेंटर श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
33.	शलाका शशिकांत साल्वी	लेखा अधिकारी	रसायनी यूनिट
34.	बलराम नारायण देशमुख	ऑपरेटर श्रेणी –III	रसायनी यूनिट

35.	अनंत किशन पाटील	फिटर श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
36.	हृषिकेश भालचंद्र पांचाल	उप प्रबंधक विधुत	रसायनी यूनिट
37.	घनश्याम गंगाराम पंढरे	अभियंता (केमिकल)	रसायनी यूनिट
38.	काशीनाथ गणपत कोंडिलकर	ऑपरेटर श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
39.	वसंत कृष्ण भोइर	फोरमैन फिटर	रसायनी यूनिट
40.	भगवान वामन गायकवाड़	ऑपरेटर श्रेणी – I	रसायनी यूनिट
41.	श्रीराम मोरेश्वर चितले	ऑपरेटर श्रेणी –I	रसायनी यूनिट
42.	श्रीमती सुनिता एम आर	सहायक अधिकारी (प्रशासन)	उद्योगमंडल यूनिट
43.	रामदास	लीड्स मैन (पेईन्टर)	उद्योगमंडल यूनिट
44.	प्रदीप के	लीड्स मैन (ऑपरेटर)	उद्योगमंडल यूनिट
45.	निर्मला वर्गीस	हेलपर	उद्योगमंडल यूनिट
46.	हस्सन पी ए	लीड्स मैन (ऑपरेटर)	उद्योगमंडल यूनिट
47.	मुरलीधरन एम वी	मेईन्टेनन्स पर्यवेक्षक	उद्योगमंडल यूनिट
48.	सी जे वर्गीस	एस पी एस	उद्योगमंडल यूनिट
49.	किशन भण्डारी	इलेक्ट्रिशियन ग्रेड –II	बठिंडा यूनिट
50.	पुष्कर सिंह	इलेक्ट्रिशियन ग्रेड –I	बठिंडा यूनिट
51.	सरस्वती शर्मा	वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी) (ई–I ग्रेड)	बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार में शामिल होने पर निम्नलिखित नए कार्मिको का स्वागत है।

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	दिव्या शर्मा	कंपनी सचिव	निगमित कार्यालय
2.	राज नारायण चन्द्र	प्रबंधक (वित्त)	निगमित कार्यालय
3.	मधुस्मिता सास्मल	सहायक विपणन प्रबंधक	निगमित कार्यालय
4.	सिद्धार्थ प्रकाश त्रिपाठी	सहायक विपणन प्रबंधक	क्षेत्रीय ब्रिक्री कार्यालय (बेंगलुरू)
5.	बसवराज जे. गुंडप्पागोल	सहायक विपणन प्रबंधक	क्षेत्रीय ब्रिक्री कार्यालय (हैदराबाद)
6.	रमन शर्मा	उप प्रबंधक (मैकनिकल)	रसायनी यूनिट
7.	अक्षय शंकर चौरघे	अकुशल श्रमिक	रसायनी यूनिट
8.	जयेंद्र शांताराम	अकुशल श्रमिक	रसायनी यूनिट
9.	देवेश दत्तात्रेय माली	अकुशल श्रमिक	रसायनी यूनिट
10.	दीपक कुमार	अकुशल श्रमिक	रसायनी यूनिट
11.	वेंकट दुर्गाराव ताडिशेट्टी	सहायक प्रबंधक (वित्त)	बठिंडा यूनिट
12.	अभिजित्त के एस	हेलपर	उद्योगमंडल यूनिट

श्रद्धांजलि

नाम	पदनाम
स्व0 श्री अनिल कुमार	वरिष्ठ गोदाम संरक्षक, बठिंडा यूनिट
के निधन पर समस्त हिल परिवार भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।	

आपकी पाती

मंगलूर रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड

MANGALORE REFINERY & PETROCHEMICALS LTD.

(ऑयल एवं नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड की सहायक कंपनी A Subsidiary of ONGC Ltd.)

7वां तल, कोर-8, स्कोप कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली 7th Floor, Core – 8, Scope Complex, Lodhi Road, New Delhi – 03

संदर्भ सं: एमआरपीएल/नई दिल्ली/मा.सं./174/2021 दिनांक : 01.10.2021

श्री सुनिल गौड़
उप महा प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
हिल (इंडिया) लिमिटेड
स्कॉप् काम्पलेक्स, कोर-6, द्वितीय तल
लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003

विषय : गृह पत्रिका 'रक्षक' के दसवें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके पत्र संदर्भ संख्या सं०सं० 8(3) 2020-21-हिंदी, दिनांकित 17.09.2021 का संदर्भ लें। उक्त पत्र के साथ आपके कार्यालय की छमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'रक्षक' का दसवां अंक प्राप्त हुआ, आभार।

भारतीय परीप्रेक्ष्य में फसल विविधीकरण संबंधी आलेख बहुत ही ज्ञानवर्धक है। फसल विविधीकरण का पालन करते हुए न केवल प्राकृतिक संसाधनों का कुशल उपयोग किया जा सकेगा बल्कि भूजल स्तर में सुधार के साथ-साथ भूमि की उर्वरकता में भी सुधार होगा। इसके लिए जरूरी है कि जो भारतीय किसान परंपरागत खेती कर रहे हैं उन्हें इस संबंध में प्रशिक्षण दिया जाए तथा प्रेरित किया जाए।

श्री अजीत कुमार जी का आलेख 'देश की आत्मा है हिंदी' तथा डॉ. विशेष कुमार जी का आलेख 'मोबाइल गेम और वीडियो गेम के दुष्परिणाम और सावधानियां' पठनीय एवं संग्रहणीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएँ मनमोहक हैं।

पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख श्रेयस्कर हैं। बेहतरीन अंक के सफलतापूर्वक प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

भवदीय,

1/10/21

संजय दीक्षित
समूह महा प्रबंधक (समन्वय, मा.सं. एवं प्रशासन)

कमोडोर महेन्द्र वीर सिंह नेगी, एन एम (से.नि.)
प्रबंध निदेशक
Cmde Mahendra V.S. Negi, NM (Retd.)
Managing Director

सेन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड
Central Cottage Industries Corporation of India Limited
(A Govt. of India Undertaking, Ministry of Textiles)
https://shoponline.cottageemporium.in

सीसीआईसी/प्रनि/2021/134 08.10.2021

श्री एस.पी. मोहन्ती,
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,
हिल (इंडिया) लिमिटेड,
(भारत सरकार का उद्यम),
स्कोप कॉम्पलेक्स, कोर-6, द्वितीय तल, 7,
लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003.

मान्यवर,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित छमाही राजभाषा पत्रिका "रक्षक" का अंक-10 सधन्यवाद प्राप्त हुआ। पत्रिका में दिए गए सभी लेख ज्ञानवर्धक तो हैं ही साथ ही आपका संगठन भारतीय कृषकों के लिए संजीवनी का कार्य भी कर रहा है। पत्रिका में राजभाषा विषयक तथा हिंदी में लिखे गए अन्य लेख तथा चित्र अत्यंत रोचक और रुचिकर हैं जो राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति आपकी सजगता को प्रकट करते हैं। इस कार्य के लिए हिल बधाई का पात्र है। भविष्य में पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

सादर,

भवदीय,

(कोमोडोर महेन्द्र वी.सि. नेगी, एनएम, सेवानिवृत्त)
प्रबंध निदेशक

Promoting Indian Artisans & Crafts Over Six Decades

नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेशन लिमिटेड

NATIONALTEXTILECORPORATION LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
(A Government of India Undertaking)

पंजीकृत कार्यालय
कोर-4,
स्कोप काम्प्लेक्स
7-लोधी रोड
नई दिल्ली- 110003

Registered Office
Core-IV,
Scope Complex
7-Lodhi Road
NewDelhi-110003
(CIN No.U74849DL1958PLC004866)

सं: एनटीसी/रा.भा./पत्रिका/2021 दिनांक:07.12.2021

सेवा में,

श्री सुनील गौड़,
उप महाप्रबन्धक(मा.सं.एवं प्र.)
हिल(इंडिया) लिमिटेड,
"पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइडस लिमिटेड"
(भारत सरकार का उपक्रम)
द्वितीय मंजिल, कोर-6, स्कोप काम्पलैक्स,
7 लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

महोदय,

आपके द्वारा भेजी गयी पत्रिका **'रक्षक' छ:माही पत्रिका अंक-10 (अक्टूबर 2020 से मार्च 2021)** प्राप्त हुई। पत्रिका की उत्कृष्ट साज-सज्जा,आकर्षक एवं मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं विशेषत: कुछ सामग्री बहुत पसंद आयी- उल्लेख करना उचित होगा।

1. देश की आत्मा है हिंदी
2. हिंदी : संघर्ष की कहानी
3. पर्यावरण और मानव
4. चंद शब्द सुनहरी यादों के नाम
5. समय का बदलाव

हमारे कार्यालय को यह पत्रिका भेजने के लिये धन्यवाद।

राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए आपको एवं पत्रिका से संबद्ध सभी महानुभावों को सादर धन्यवाद एवं आभार।

कृपया राजभाषा अधिकारी, का नाम अद्यतन करने की कृपा करें।

भवदीय,

(रामस्वरूप वर्मा)
राजभाषा अधिकारी
एन.टी.सी.लि.,नई दिल्ली

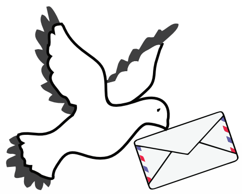

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(पूर्व में हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड)
(भारत सरकार का उद्यम)
सीआइएन यू24211डीएल1954जीओआई002377

समृद्धि हेतु सुरक्षा

PROTECT TO PROSPER

कृषि रसायन

हिलक्रॉन 36 एस एल
(मोनोक्रोटोफॉस)

हिलमाला 50 ई सी
(मैलाथियॉन)

हिलबान 50 ई सी
(क्लोरपाइरिफॉस)

हिलवॉस 76 ई सी
(क्लोरपाइरिफॉस)

हिलफेट 75 एस पी
(एसिफेट)

हिलस्टार 25 डब्ल्यू जी
(थियामेथोक्सेम 25% डब्ल्यू जी)

हिलफॉस प्लस
(प्रोफेनो + साइपर)

हिलब्लेज़ 25% एस सी
(बूप्रोफ्रेज़िन 25% एस सी)

हिलजेंट
(फिप्रोनिल जी आर)

हिलमिडा
(इमिडाक्लोप्रिड)

हिलसाइप्रिन 10 ई सी
(साइपरमेथ्रिन)

हिलसाइप्रिन 25 ई सी
(साइपरमेथ्रिन)

हिलप्रिड 20 एस पी
(एसीटेमिप्रिड)

हिलहन्टर
(क्लोपाइरिफॉस 50% + साइपरमेथ्रिन 5% ई सी)

हिलकार्टेप
(कार्टेप 4 जी आर)

हिलजाफॉस
40 ई सी (ट्राईजोफॉस)

हिलफॉस 50 ई सी
(प्रोफेनोफॉस)

हिलकार्टेप 4 जी
(कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड)

हिलाम्बदा 5 ई सी
(लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)

हिलाम्बदा 2.5 ई सी
(लाम्बदा – साइहैलोथ्रिन)

खरपतवारनाशी

हिलप्रेटी 50 ई सी
(प्रेटिलाक्लोर)

हिलपेंडी 30 ई सी
(पेंडीमेथलीन)

हिलटाक्लोर
(बुटाक्लोर 50 ई सी)

त्रिनाशी 41 एस एल
(ग्लाईफोसेट)

फफूंदनाशी

हिलसल्फ 80 डब्ल्यू डी जी
(सल्फर 80% डब्ल्यूजी डी जी)

हिलथेन एम 45
(मैंकोजेब 75 डब्ल्यू पी)

हिलकॉपर 50 डब्ल्यू पी
(कॉपर ऑक्सीक्लोराइड)

हिलनेट 75 डब्ल्यू पी
(थाइफिनेट मिथाइल)

हिलजिम 50 डब्ल्यू पी
(कार्बनडेजिम)

हिलजोल पॉवर 5% एस सी
(हैक्साकोनाजोल)

हिलमिल
(मैंकोजेब 63% + मेटालेक्सिल 8%)

हिलपंच
(मैंकोजेब 63% + कार्बनडेजिम 12%)

हिलब्लास्ट 75 डब्ल्यू पी
(ट्राइसाईक्लोज़ोल)

जन स्वास्थ्य

डी.डी.टी.
मैलाथियॉन तकनीकी
मैलाथियॉन डब्ल्यू पी
एल.एल.आई.एन.

बीज

धान
गेहूँ
चना
मसूर
मूंग
उड़द
अरहर
सोयाबीन
सरसों
मूंगफली
हाब्रिड मक्का
चारा फसलें – जई, बरसीम

सब्ज़ियों के बीज

फ्रेंच बीन
ओ.पी. एवं हाइब्रिड ओकरा
धनिया
भिंडी
मूली
पालक

उर्वरक

यूरिया
एस.एस.पी.
डी.ए.पी.
एम.ओ.पी.
एन.पी.के. (19:19:19)
एन.पी.के. (13:0:45)
बेंटोनाइट सल्फर
कैल्शियम नाइट्रेट

टेक्निकल्सः मोनोक्रोटोफॉस, मैलाथियॉन, एसिफेट, मैंकोजेब, इमिडाक्लोप्रिड बुप्रोफेज़िन, क्लोरपाइरिफॉस, पेंडीमेथलीन, ग्लाईफोसेट

कीटनाशक के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण

हिल (इंडिया) लिमिटेड
स्कोप कॉम्पलेक्स, कोर–6, द्वितीय तल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली – 110003 (भारत), दूरभाषः 011–24361019, 24362100
www.hil.gov.in

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

उद्देश्य

किसानों को पेस्टिसाइड्स की एक विशाल विविधता प्रदान करने के लिए उत्पाद प्रोफाइल का विस्तार करना।

कृषि समुदाय के लिए तीन क्षेत्रों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरकों की एक पूर्ण बास्केट प्रदान करना।

दूरदर्शिता

जनस्वास्थ्य एवं फसल संरक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रतिस्पर्द्धक बनना।

गुणवत्ता नीति

- सरकार के जन-स्वास्थ्य/फसल संरक्षण कार्यक्रमों को बल प्रदान करना।
- पेस्टिसाइड्स के उचित प्रयोग को उन्नत करना।
- कार्मिक उत्पादकता में सुधार लाना।
- कार्मिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- कार्मिकों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाना।

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय

स्कोप काम्पलैक्स, कोर-6, द्वितीय मंजिल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष: 24362100, 24361107, फैक्स: 24362116
ई-मेल: headoffice@hil.gov.in वेबसाइट: www.hil.gov.in

ADWIT INDIA PRIVATE LIMITED